कवि-श्री माला

* तेलुगु *

कवि

काटूरि वेंकटेश्वरराव

और

पिंगलि लक्ष्मीकान्तम

सम्पादक-अनुवादक

भीमसेन 'निर्मल'

(प्रा भण्डारम भीमसेन जोस्युर्)



राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्रकाशक
मोहनलाल भट्ट
मन्त्री
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
हिन्दीनगर, वर्धा
● ● ●

प्रथम संस्करण—१०
मई, १९६२
मूल्य–रु २/-
● ● ●

मुद्रक
मोहनलाल भट्ट
राष्ट्रभाषा प्रेस
हिन्दीनगर वर्धा
● ● ●

आमुख

हर्षका विषय है कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा अपने कार्य कालके २५ वर्ष सन् १९६१ में पूरे कर रही है। इस उपलक्ष्यमें मनाये जानेवाले रजत-जयन्ती महोत्सवके अवसर पर सभी भारतीय भाषाओंके मान्य कवियोंका तथा उनके उत्कृष्ट काव्यका परिचय 'कवि-श्री माला' की पच्चीस पुस्तकोंमें हिन्दी-भावानुवाद सहित प्रकाशित करनेकी योजनाके अन्तर्गत प्रस्तुत ग्रन्थ पाठकोंके समक्ष आ रहा है।

यद्यपि किसी भी भाषाके सर्वश्रेष्ठ काव्य-सर्जकका निश्चय करना एक कठिन कार्य है फिर भी अपनी सीमाओंको ध्यानमें रखते हुए गण्यमान्य उन-उन भाषाओंके विद्वानोंकी रायसे ही चुनावका कार्य सम्पन्न किया गया है।

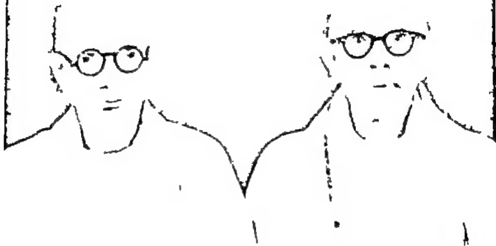
प्रत्येक पुस्तकके आरम्भमें जिस भाषाके कवियोंकी रचनाओंका चयन किया गया है उस भाषाके साहित्यका परिचय और कवि विशेषका परिचय दिया गया है। जिस भाषाके दो कवियोंका चुनाव किया गया है उनका चुनाव करते समय सन् १९२ से पूर्वका साहित्य और १९२० से बादका साहित्य—इस तरहसे एक विभाजन-रेखा ध्यानमें रखी गई है। इसका कारण यह है कि लगभग सन् १९२ के पूर्वके तथा १९२ के बादके साहित्यमें प्रवाहित विचार-धारामें एक विशेष प्रकारका अलगाव-सा पाया जाता है।

श्री भीमसेनजी 'निर्मल'ने प्रस्तुत पुस्तकमें संकलित साहित्यको चुनने, व्याख्याओंसे सम्पादित तथा अनूदित कर सारी सामग्रीको इस रूपमें प्रस्तुत करनेमें सहयोग दिया है। पुस्तकमें संकलित चित्र कविश्री कादूरि वेंकटेश्वररावजीके सद्प्रयत्नोंसे उपलब्ध हुआ है। संग्रहकी आवरण डिजाइनको बनवा देनेमें श्री वी॰ एम॰ आयरकरजी (डीन, सर जे॰ जे॰ इन्स्टीट्यूट आफ अप्लाइड आर्ट, बम्बई) का उदार सहयोग मिला है उसके लिए समिति आपकी आभारी है।

इसके अतिरिक्त छपाई तथा अन्यान्य दृष्टियोंसे भिन्न-भिन्न प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है उनके प्रति भी समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

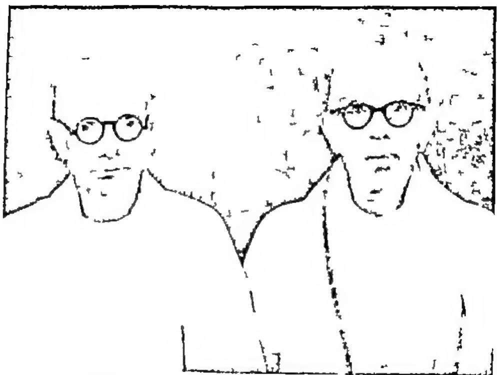
आशा है प्रस्तुत संग्रह पाठकोंको रुचिकर एवं उपयोगी प्रतीत होगा।

अनुक्रमणिका



पिंगलि लक्ष्मीकान्तम और काटूरि वेंकटेश्वरराव

अनुक्रमणिका



पिंगलि लक्ष्मीकान्तम और काटूरि वेंकटेश्वरराव

तेलुगु साहित्य परिचय

[सन् १९२० से आजतक]

तेलुगु साहित्य परिचय

[सन् १९२० से आजतक]

तेलुगु भाषा
और
उसका साहित्य

• • •

[प्रारम्भसे सन् १९२० तकका तेलुगु साहित्यका संक्षिप्त परिचय कवि श्री-माला—तिरुपति-वेंकट कवुलुमें दिया गया है।]

अन्य भारतीय भाषाओंके साहित्योंकी भाँति ही तेलुगुका लिखित साहित्य ११ वीं शतीसे प्रारम्भ होता है। ११ वीं शतीसे पूर्वकी तेलुगु भाषाके स्वरूपका परिचय मात्र देनेवाले साधन कुछ शिलालेख और लोक-गीत हैं।

अध्ययनकी सुविधाके लिए तेलुगु साहित्यको छह युगोंमें विभाजित किया जाता है। (१) अज्ञातयुग या प्राङ्नन्नय युग (२) पुराण युग या अनुवाद युग (३) श्रीनाथ-युग या काव्य-युग (४) प्रबन्ध-युग (५) दक्षिण-युग और (६) आधुनिक युग। यह विभाजन कालके अनुसार या विशिष्ट काव्यशैलियोंके आधारपर किया गया है। आधुनिक युगीन प्रवृत्तियोंका सम्यक ज्ञान प्राप्त करनेके लिए, पूर्वके पाँच युगोंका संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लेना आवश्यक है।

प्राङ्नन्नय युग

आदि कवि नन्नय भट्टसे पूर्वकी तेलुगु भाषा और उसके साहित्यके स्वरूपका निर्णय करनेके लिए, उस युगके प्राप्त शिलालेख ही प्रधान साधन हैं। ये शिलालेख भी भाषा और शैली छन्दोंके स्वरूपका ज्ञान ही कराते हैं साहित्यका कम। इस युगकी उपलब्ध सामग्री भाषा-विज्ञानके अन्तर्गत है। विषम-प्रमाण शिलालेख और संदिग्ध लोकगीत साहित्यके इतिहासमें विशेष योग नहीं देते।

पुराण-युग (ई स १०३० से ई १४०० तक)

इस युगमें वैदिक-धर्म-निष्णात महाराजाओंके प्रोत्साहनसे धर्म-निष्ठ कवियोंने महाभारत और रामायण आदि काव्यों और कुछ पुराणोंका भाषामें अनुवाद प्रस्तुत किया है। पर ये अनुवाद केवल अनुवाद-मात्र न होकर स्वतन्त्र मौलिक काव्योंके रूपमें प्रतिभासित होते हैं।

राजमहेन्द्रीके पूर्व-चालुक्य वंशीय राजा राज-राजनरेन्द्र (१०१९–१०६१) की सभामें नन्नय भट्ट नामक एक विद्वान थे। नन्नयने वैदिक-धर्म प्रचारके लिये पञ्चम वेद 'महाभारत' के अनुवाद के कार्यभारको संभाला। अपनी पूर्ववर्ती भाषा एवं काव्य-रचना-शैलीको सुव्यवस्थित रूप देकर आपने 'आन्ध्र-वागनुशासक' की अपनी उपाधिको सार्थक बनाया। अपने प्रभु और मित्र राजराजकी प्रेरणासे वे महाभारतके ढाई पर्व तक की रचना कर पाए थे कि कालपुरुषने इनकी लेखनीको रोक दिया।

राजराजनरेन्द्रकी मृत्युके बाद देशकी राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियोंके कारण 'महाभारत' की पूर्तिका कार्य रुका-सा रहा। नन्नयके लगभग दो सौ साल बाद कविब्रह्मा तिक्कनाने (१२१०—१२९) विराटपर्वसे लेकर शेष १५ पर्वोंकी रचना की। तिक्कना नेल्लूरके राजा मनुमसिद्धिके मन्त्री तथा राजकवि थे।

अरण्यपर्वके शेष भागकी पूर्ति नन्नयके नामपर ही करनेवाले हैं एर्रांप्रगड (१२८०—१३५)। इन्होंने नन्नयकी शैलीपर रचनाका प्रारम्भ करके उसे तिक्कनाकी शैलीपर ला खड़ा किया मानों वह नन्नय और तिक्कनाकी रचनाओंको मिलानेवाला सन्धि-सूत्र हो।

नन्नय तिक्कन और एर्रनको कवित्रय कहते हैं। इन तीनों महाकवियोंने अनुवादको औचित्यकी दृष्टिसे घटा-बढ़ाकर, मौलिक काव्यके रूपमें प्रस्तुत किया है। अनुवादकी यही शैली परवर्ती कवियोंके लिए आदर्श बनी रही।

इस युगके अन्य कवियोंमें केतन मारन गोन बुद्धारेड्डी भास्कर, पेद्दन नाचन सोमनाथ आदि प्रमुख हैं।

ईसाकी १२ वीं सदीमें कर्नाटक प्रान्तमें बसवेश्वर द्वारा संस्थापित वीर शैव सम्प्रदायने आन्ध्र प्रदेशको खूब प्रभावित किया था। उन सिद्धान्तोंके प्रचारके लिए अनेक कवियोंने कलम उठाई। देशी इतिवृत्त देशी छन्द और देशी भाषाको साधन बनाकर, वीरशैव कवियोंने जनतामें जागरणके भाव फैलाए। इन कवियोंने भाषा और भावमें अत्यधिक स्वच्छन्दता दिखाई है। इन शैव कवियोंमें राजकवि नन्नेचोड सर्वप्रथम हैं। इन्होंने 'कुमार सम्भवमु' नामक उत्तम काव्यकी रचना की। मल्लिकार्जुन पण्डिताराध्यके लिखे अनेक शैव-काव्योंमें एक 'शिवतत्त्वसारम' ही उपलब्ध है। इसे तेलुगुका पहला शतक माना जाता है। द्विपद (देशी छन्द विशेष) रचनामें अनन्य और शिवकविसमूहके शिरोमणि पाल्कुरिकि सोमनाथ तेलुगु,

संस्कृत और कन्नड़ भाषाओंमें अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। 'बसव-पुराणम्' 'पण्डिताराध्य चरित्रम्' 'सोमनाथस्तवम्' 'अनुभवसारम्' 'वृषाधिपशतकम्' और 'बसवोदाहरणम्' अपेक्षाकृत प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

इस युगमें ही—जिसे प्रारम्भिक (आदि) युग कहा जाता है—मार्ग-कविता और देशी कविताके ऐसे उत्कृष्ट उदाहरण मिलते हैं कि इस युगके साहित्यको प्रारम्भिक दशाका साहित्य नहीं माना जा सकता। पुराण विपुल काव्य काव्य-प्रबन्ध द्विपद शतक और गद्यकविता इन पर्याप्त कविता-शैलियोंकी नींव भी इसी युगमें पड़ी। प्रायः देशी रचनाओंको छोड़ सभी अनुवाद ही हैं पर ये अनुवाद नीरस न होकर, मौलिक रचनाओंसे लगते हैं। कवियोंकी अनुपम प्रतिभा और व्युत्पत्ति ही इसका प्रधान कारण है। गोदावरी तीरस्थ राजमहेन्द्रवरम्‌में उद्भूत तेलुगु कविताका स्रोत नन्नूर वरंगल अद्दंकि आदि स्थानोंमें फैल पड़ा और समग्र आन्ध्र प्रान्तको अपनी निर्मल धाराओंसे तृप्त करने लगा।

काव्य-युग (ई० १४००–१५०० तक)

१५ वीं सदीके आन्ध्र साहित्याकाशके जाज्वल्यमान सूर्य हैं कवि सार्वभौम श्रीनाथ और भक्तिमाधुर्यकी शीतल ज्योत्स्ना बिखेरनेवाले सुधाकर हैं महाकवि पोतना। दोनों महाकवियोंने अपनी रचनाओंसे प्रबन्ध युग के बीज बोए। अतः इसे प्रबन्धपूर्व युग और कुछ मौलिक कथाकाव्योंकी रचना होनेसे इस युगको 'काव्य-युग' भी कहते हैं।

श्रीनाथकी रचनाओंमें शृंगार नैषधम् भीमखण्ड काशी खण्ड हर विलास क्रीडाभिरामम् पल्नाटि वीरचरित्रम् ही प्राप्य हैं। स्वच्छन्द प्रकृतिके इस महाकविने अपनी सभी रचनाओंमें तथा अनुवादोंमें भी अप्रतिम प्रतिभा दिखाई है। पाण्डित्यपूर्ण प्रौढ़ शैलीके साथ-साथ सरल देशी रचनामें भी श्रीनाथ कवि सिद्ध-हस्त हैं। इस महाकविने आन्ध्र प्रदेशके प्रत्येक राजदरबारमें अनन्य गौरवको प्राप्तकर रेड्डि राजाओंसे कनकाभिषेक करवा लिया। तेलुगु साहित्यके इतिहासमें इतना विलासी और वैभवशाली कवि दूसरा नहीं है।

महाभक्त और महाकवि बम्मेर पोतना श्रीनाथके समसामयिक ही नहीं रिश्तेमें साले माने जाते हैं। संस्कृतमें २० हजार ग्रन्थोंमें परिव्याप्त महाभागवत पुराणको पोतनाने ९ हजार पद्योंके महाकाव्यके रूपमें सम्पन्न बनाया है और उसे श्री रामचन्द्रजीके चरणकमलोंमें समर्पित किया है। आन्ध्र महाभागवत भक्ति और माधुर्यका आकर है। साहित्यिक महत्वके साथ-साथ लोकप्रियतामें भी इस काव्यका सानी नहीं है।

इस युगके अन्य प्रसिद्ध कवियोंमें पिल्ललमर्रि पिनवीरभद्र जक्कन अनन्तामात्य गौरन मडिकि सिंगन गोपराजु, दूरल नारायण कवि आदि उल्लेखनीय हैं।

नन्दि मल्लय और घण्ट सिंगन आन्ध्रका सर्वप्रथम यह कवि युग्म है जिसने प्रबोध चन्द्रोदयमु और वराह पुराणमु की रचना की। संकीर्तनोंमें—पद पदोंमें—भगवान वेंकटेश्वरका स्तवन करनेवाले ताल्लपाक अन्नमाचार्य भी इसी युगमें हुए। आन्ध्रके कबीर वेमनाने अत्यन्त सरल और सुबोध शब्दोंमें समाजमें फैली रूढ़िवादिताका खण्डन करके सच्ची मानवताका उपदेश दिया था।

आन्ध्र साहित्यके इतिहासमें काव्य-भंगिमाओंके वैविध्यके लिये इस युगका विशिष्ट स्थान है। नन्नय-युगमें जिन कविता-शैलियोंकी नींव पड़ी थी उनका पूर्ण विकास इस समय परिलक्षित होता है। इस युगकी अधिकांश रचनाएँ अनुवाद ही हैं पर वे सभी अनुवाद कथा-संविधानकी अपेक्षा रचना-कौशल और शैलीकी प्रधानताके कारण मौलिक-काव्यका-सा आनन्द देते हैं। इन सभी रचनाओंमें कवियोंने शृंगारिक प्रसंगोंका विस्तारसे वर्णन किया है। इस समयकी विलक्षण प्रवृत्ति संस्कृत नाटकोंका भी काव्यमय अनुवाद करनेकी है। कुछ कवियोंने कथाकाव्योंकी भी रचना की है।

इस युगमें राजमहेन्द्री आदि विद्यानगर, ओरुगल्लु, कोण्डवीडु आदि नगर कविता-कन्याके क्रीड़ा-स्थल बने रहे।

प्रबन्ध-युग (ई० १५००—१७०० तक)

प्रबन्धयुग आन्ध्र साहित्यका स्वर्ण युग है। इस समय काव्यकलाका परमोत्कर्ष हुआ। ख्यात वृत्त और कल्पित वृत्तोंको लेकर अष्टादश वर्णनोंसे युक्त अनेक मौलिक काव्योंकी रचना की गई तथा बहुमुखी तथा परमोज्ज्वल साहित्यिक कृतियोंसे सम्पन्न इसी युगमें तेलुगुके पञ्चमहाकाव्योंकी भी सृष्टि हुई।

विजयनगरके महाराजा श्रीकृष्णदेवरायकी भुवन विजय नामक सभा आन्ध्र साहित्यके प्रसिद्ध कवियोंसे शोभायमान थी। श्रीकृष्णदेवराय स्वयं कवि और महान् पण्डित थे। इन्होंने तेलुगुमें आमुक्तमाल्यदा नामक महाकाव्यकी रचना की। इसमें गोदा देवी या आण्डालके भगवान विष्णुके साथ हुए विवाहकी कथा वर्णित है।

आन्ध्र प्रबन्ध-कविताके पितामह कहलानेवाले अल्लसानि पेद्दन मनु चरित्र या स्वारोचिष मनुसम्भवमु नामक श्रेष्ठ प्रबन्धकाव्यकी रचना की। शृंगाररस प्रधान यह काव्य चरित्र-चित्रण प्रकृतिके मनमोहक वर्णन धारा शमन आदिमें अपना सानी नहीं रखता।

भुवन विजयके आठ प्रसिद्ध कवियोंमें अष्टदिग्गजों—मल्लन नन्दितिम्मन धूर्जटि, नृसिंह कवि रामभद्र कवि तथा रामकृष्ण कवि मुख्य हैं।

तेलुगु साहित्यकी प्रथम कवयित्री आतुकूरि मोल्ल इसी युगमें हुई थी। उन्होंने प्रौढ़ शैलीमें रामायणकी रचना की। इस युगमें ऐतिहासिक महत्वके कुछ और काव्य भी लिखे गए।

विजयनगरके पतनके बाद दक्षिणमें बहमनी राजवंशके मुसलमान बादशाहोंने तेलुगु साहित्यकी श्रीवृद्धिमें प्रशंसनीय सेवा की है। उपलब्ध प्रमाणोंमें सर्व

प्रथम 'सुग्रीव विजयमु' की रचना करनेवाले कन्दुकूरि रुद्रकविको इब्राहीम कुतुब शाहने 'चिन्तलपालेमु' नामक गाँव देकर सम्मानित किया था। पोन्निकण्टि तेलगनार्यका 'ययातिचरित्रमु' ठेठ तेलुगुमें तत्सम और तद्भव शब्दोंको छोड़कर, लिखा गया प्रथम काव्य है।

रायलु युगमें तेलुगु कविताका चरम-विकास हुआ। इस युगके अधिकांश कवियोंने अनुवाद करना छोड़कर, पुराणोंके किसी प्रसंगके आधारपर, स्वतन्त्र मौलिक काव्योंकी रचना की। इन प्रबन्ध-काव्योंमें प्रधानता शृंगार-रसकी रही। अष्टादश वर्णनोंसे युक्त इन काव्योंमें कवियोंकी कल्पना-चातुर्यके ज्वलन्त उदाहरण मिलते हैं। इस युगमें पाण्डित्य-प्रदर्शन एक गुण माना जाने लगा। श्लिष्ट काव्यों द्व्यर्थि और त्र्यर्थि-काव्योंकी बाढ़-सी आगई। ठेठ-तेलुगु में भी काव्य लिखे गए कम। इस युगका उल्लेखनीय विषय मुसलमान राजाओंकी आन्ध्र साहित्यकी सेवा है।

इस युगमें कविताके क्रीड़ास्थल बने हुए थे–विद्यानगर (विजयनगर) गोलकुण्डा मधुरा चन्द्रगिरि आदि।

दक्षिण आन्ध्र-युग (ई १७००–१८७५ तक)

आन्ध्र सरस्वतीका विहार-स्थल अब दक्षिणके तंजाऊर, मधुरा मैसूर आदि स्थानोंमें रहा। उन राज्योंके शासकोंने जो विजयनगर-साम्राज्यके सामन्त तेलुगु नायक थे स्वयं काव्य रचनाकी और कई कवि-पण्डितोंको आश्रय देकर उनसे कई सुन्दर काव्योंकी रचना करवाई। यही कारण है कि इस युगको दक्षिणान्ध्र युग कहते हैं। भाषा-प्रयोगमें स्वच्छन्दता इससे बढ़कर शृंगार (अश्लीलता) का वर्णन और मौलिक कल्पना-शक्तिके अभावके कारण कुछ विद्वान् इस युगको क्षीण-युग या ह्रास-युग भी कहते हैं। पर रचनाओंकी संख्या और वैविध्यके कारण इस कथनमें सत्यका अंश कम दिखाई पड़ता है।

तन्जाऊरके रघुनाथ भूपाल और उनके पुत्र विजयराघवके समयमें तेलुगुके कई प्रसिद्ध काव्योंका निर्माण हुआ। कालक्रममें तन्जाऊर मराठोंके अधिकारमें चला गया। इन महाराष्ट्र राजाओंने तेलुगु साहित्यकी अनुपम सेवा की है। शहाजी महाराजके लिखे दो हिन्दी यक्षगानोंका भी इधर पता चला है।

भक्तिभाव, अनन्य मधुरिमासे पूर्ण अनेक कृतियों (कीर्तनों) की रचना करने वाले त्यागय्या मधुर भक्तिसे पूर्ण पदोंकी रचना करनेवाले क्षेत्रय्या इसी युगके महान् कलाकार हैं। त्यागय्याकी कृतियोंमें संगीत और साहित्यका गंगा यमुनी प्रवाह है तो क्षेत्रय्याके पदोंमें संगीत साहित्य और अभिनयकलाकी त्रिवेणी प्रवाहित है।

रायल युगमें शृंगार रसका जो प्रवाह उमड़ पड़ा उस रसमें आन्ध्रप्रान्त यह सारा युग ही आप्लावित रहा। यह प्रवृत्ति अश्लील शृंगारकी ओर अधिक मुड़ी हुई थी। जीवनमें जो निष्क्रियता और विलासिता फैल गई थी उसीका प्रतिबिम्ब इन शृंगार-काव्योंमें देखनेको मिलता है। काव्यरचनामें हृदय-पक्षकी अपेक्षा

युक्ति-पक्षका ही विशेष जोर रहा। अतः काव्योंमें भाव-पक्षकी अपेक्षा कला-पक्षकी ही प्रधानता दृष्टिगोचर होती है। पाण्डित्य प्रदर्शन ही रचनाका एकमात्र लक्ष्य रह गया। आशु-कविता और समस्यापूर्ति राजसभाओंमें सम्मान प्राप्त करनेके साधन बने रहे।

प्राचीन तेलुगु कविता प्रबन्ध-प्रधान होती थी। कई वर्षोंकी सतत साधनाके बाद ही कविगण प्रबन्धोंके निर्माणमें सफल होते थे। कविता राजाश्रित होती थी और समासयुक्त संस्कृतपद बहुला भाषाका प्रयोग करना गौरवका विषय माना जाता था। रायल युग तक आते-आते कविताकी चरमोन्नति हुई। यह युग सचमुच आन्ध्र साहित्यका स्वर्णयुग है। तदुपरान्त काव्यकी गति मानों रुक-सी गई। नवीनता एवं मौलिकता बिलकुल ओझल-सी हो गई। कविगण अपने पूर्ववर्ती कवियोंकी रचनाओंका अनुसरण-अनुकरण मात्र कर सन्तोषकी सांस लेते। रचना-चमत्कार, अलङ्कारोंकी प्रचुरता आदि काव्यके कला-पक्षपर ही अधिक ध्यान दिया जाने लगा। आधुनिक कालमें इन प्राचीन सम्प्रदायों एवं परम्पराओंमें सम्पूर्ण क्रान्ति हुई।

आधुनिक युग (१८७२ से)

सन् सत्तावनका स्वतन्त्रताका युद्ध भारतीय साहित्यमें नव जागरणका सन्देश लाया। पाश्चात्य सभ्यताकी चकाचौंधसे मुँह फेरकर भारतीय जन स्वदेश और स्वभाषाकी ओर ध्यान देने लगे। समस्त राष्ट्रमें उद्बुद्ध यह नवीन चेतना राज नैतिक धार्मिक सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्रोंमें अभिव्यक्त होने लगी। राज नैतिक क्षेत्रमें यह कांग्रेसके रूपमें धार्मिक क्षेत्रमें आर्य समाज सामाजिक क्षेत्रमें ब्राह्म समाज आदिके रूपमें मुखरित हुई। विचारोंकी अभिव्यक्तिका साधन साहित्य ही है अतः नव जागरणका सूक्ष्म प्रभाव देशके प्रत्येक प्रान्तकी भाषा तथा साहित्य पर परिलक्षित होता है। भाव वही हैं भाषाकी पोशाक भिन्न है। आधुनिक युगकी सभी प्रवृत्तियोंका सम्यक् प्रभाव तेलुगु साहित्यपर पड़ा है।

तेलुगुके आधुनिक साहित्यसे परिचय प्राप्त करनेके पहले दो यूरोपीय महानु भावोंके नामोंका उल्लेख होना चाहिए, जिनका आन्ध्र चिर ऋणी है। सर सी॰ पी॰ ब्राउन महाशयने अथक परिश्रम कर, तेलुगुकी अनेक अप्रकाशित एवं जीर्णप्राय पुस्तकोंका पुनरुद्धार किया। उन्होंने तेलुगुका एक व्याकरण बनाया और अंग्रेजी-तेलुगु तेलुगु-अंग्रेजी शब्दकोश बनाए। दूसरे महानुभाव हैं कर्नल कालिन मेकन्जी जिन्होंने गाँव-गाँव घूमकर प्राचीन पुस्तकोंका उद्धार किया लुप्त इतिहास पर प्रकाश डाला और अज्ञातनामा कवियोंकी रचनाओंको प्रकाशित किया।

आधुनिक युगके प्रारम्भमें चिन्नयसूरि, (१८०९–६२) नामक पण्डितने बाल-व्याकरण की रचना की जो इस भाषाका मान्य व्याकरण माना जाता है।

अब क्रमसे तेलुगुके आधुनिक साहित्यके विभिन्न अंगोंका संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

कविता

तेलगु साहित्यके आधुनिक युगको दो भागोंमें बाँटा जा सकता है। आरम्भिक युग (१८५ से १९०० तक) और नवीन युग (१९०० से अब तक) इस नवीन युगको भी दो भागोंमें बाँटा जा सकता है नवीन और नवीनतम। हम इन्हें तीन कालोंमें व्यक्त करेंगे। ये हैं प्रथम द्वितीय और तृतीय उत्थान-काल।

श्री कन्दुकूरि वीरेशलिंगम पन्तुलु, श्री गुरजाडा अप्पारावजी और श्री गिडुगु राममूर्ति प्रथम उत्थानकालकी विभूति हैं।

श्री वीरेशलिंगम नवयुग-निर्माताके नामसे प्रख्यात हैं। ये मुख्य रूपसे समाज-सुधारक हैं। अपनी सुधारवादी विचारधाराको सामान्य जनता तक पहुँचानेके लिए उन्होंने कलमका आश्रय लिया। इस कार्यके लिए उन्होंने जन-सामान्यकी बोलीका ही उपयोग किया। इस व्यावहारिक बोलीमें उन्होंने तेलगुके प्रथम उपन्यास प्रथम नाटक एवं प्रथम लघु काव्यकी रचना की। इन्हें तेलगुके नवीन साहित्यका पिता कहा जाए तो कोई अत्युक्ति न होगी। हिन्दी साहित्यमें जो स्थान भारतेन्दुको दिया जाता है वही स्थान तेलगुमें आपका है। इनका समय १८४८ से १९१९ तक है।

पन्तुलुजीसे प्रभावित होकर साहित्य-क्षेत्रमें पदार्पण करनेवालोंमें श्री गुरजाडा अप्पाराव मुख्य हैं। समाज-सुधार और राष्ट्रीय भावनाओंकी व्यावहारिक भाषामें काव्य-रूप रचनाओंमें आपका स्थान सर्वप्रथम है।

मिट्टी नहीं देशके माने
देश है यहाँ की जनता ही।
| + +
मत कहु कि मुझे देशका प्रेम है
करके दिखा,लोगोंकी भलाई कोई।
+ + +
कण्डाई माता (मूल) है
वर्णना तो मैं भी नहीं।

ये कुछ इनके प्रसिद्ध गेय पद हैं। इन पदोंमें प्रदेशका कोना-कोना गूँजा करता था। इनके पद मुत्यालसरालु एवं मीलसिरी पाटमु में संगृहीत हैं। कन्या शुल्कम् नामक नाटक इनकी कीर्तिका प्रकाश-स्तम्भ है जिसमें इन्होंने तत्कालीन समाजपर चुभता व्यंग किया है। इनकी भाषा व्यावहारिक है जिसमें प्रयास नाम मात्रको भी नहीं है। इनका समय १८६१ से १९१५ तक है।

पण्डितोंके हाथोंमें पड़कर कृत्रिम बनी हुई भाषाको उन बन्धनोंसे मुक्त कर, जन-सामान्यके सामने लानेका श्रेय श्री गिडुगु राममूर्ति पन्तुलुको है। इनकी रचनाओंका इतना महत्व नहीं है जितना कि व्यावहारिक भाषाके आन्दोलनका।

इन्होंने सवरों (उड़ियाकी एक जाति) के लिए लिपि व्याकरण और कोशका निर्माण किया। इनका समय १८६१ से १९४० तक है।

इस युगमें आन्ध्र-पत्रिका तथा भारती के संस्थापक श्री काशीनाथुनि नागेश्वररावका भी विशिष्ट स्थान है। अमृताञ्जन की आमदनीको इन्होंने इधर साहित्यिक और राजनैतिक क्षेत्रमें व्यय किया।

इस प्रकार प्रारम्भिक युग सच्चे अर्थोंमें तैयारीका युग था नवचेतना एवं नवजागृतिका युग था जिसकी गोदमें पलकर एवं परिपुष्ट होकर नवीन युग सामने आया।

नवीन युगको हम तीन कालोंमें विभाजित कर सकते हैं। प्रथम उत्थान-काल १९ से १९२ तक द्वितीय उत्थान-काल १९२० से १९४० तक और तृतीय उत्थान-काल १९४ से अबतक।

प्रथम उत्थान-काल

बीसवीं सदीके प्रथम भागमें एक नवचेतनाकी लहर सारे देशमें फैल गयी थी। भाषा शैली तथा काव्य-विषय आदिमें बहुत परिवर्तन हो रहा था। कांग्रेसके आन्दोलन द्वारा देशकी दु:खद स्थितिकी ओर युवकोंका ध्यान आकृष्ट हुआ। राष्ट्रीय भावनाएँ, प्राचीन गौरव-गान आदि विषय सामयिक कविताओंके मुख्य इतिवृत्त थे।

ऐसे समयमें प्राचीन और अर्वाचीनका समन्वय करके चलनेवालोंमें श्री तिरुपति वेंकट कवुलु अग्रगण्य हैं। कविताको जन-सामान्यके सम्मुख लाकर, जनताके हृदयोंको काव्यकी माधुरीसे परिप्लावित करनेवाले इस कवि-युगलने नगर-नगरमें शतावधान और अष्टावधान कर कविताको राजदरबारों और पण्डित समाजके कारागारसे मुक्त कर जनताके सामने उपस्थित किया। कविताके सम्बन्धमें जनतामें अभिरुचि पैदा करनेवालोंमें ये सर्वप्रथम हैं।

इस युग्ममें एक कविका नाम श्री दिवाकर्ल तिरुपति शास्त्री और दूसरेका नाम चेल्लपिल्ल वेंकट शास्त्री है। गुरु-दक्षिणाके रूपमें इन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि हम दोनों मिलकर ही कविता करेंगे और उससे तिरुपति वेंकट कवुलु के नामसे कविता करते रहे। तिरुपति शास्त्रीका देहान्त होनेपर भी वेंकट शास्त्रीकी रचना भी दोनोंके नामपर ही प्रकाशित हुई है। वेंकट शास्त्रीजी मद्रास सरकार द्वारा निर्वाचित प्रथम राजकवि थे। इनके समयमें आन्ध्र प्रदेशका प्रत्येक नगर इनके अवधानोंसे गूँजा करता था। आधुनिक कालके अधिकांश प्रमुख कवि इनके शिष्य प्रशिष्य हैं।

शताधिक ग्रन्थकर्ता राजकवि स्व० श्री श्रीपाद कृष्णमूर्ति शास्त्री पण्डित कवि थे। इनकी कविताका विषय चयन एवं शैली एकदम प्राचीन ढंगकी है। दीर्घ समासोंसे भरी होनेपर भी इनकी कवितामें अनुपम प्रवाह है। ये आन्ध्रके दूसरे राजकवि थे।

मनिमद तिक्कना के नामसे प्रसिद्ध श्री तुम्मल सीताराम मूर्ति चौधरी राष्ट्रीय भावोंके अच्छे कवि हैं। इनकी कवितामें तेलुगु मुहावरों एवं अति व्यावहारिक

पद्योंकी झड़ी-सी लगी रहती है। राष्ट्र-गानमु आत्मार्पण धर्म-ज्योति आदि इनके काव्य हैं।

प्राचीन वैभवपर लिखे गए श्री कोडालि सुब्बारावके गीत करुण रससे पूर्ण एवं हृदय-द्रावक हैं। उदाहरणार्थ —

कब्रोंमें नियति रोई
तुंगभद्रामें शिथिल हुई
मंदिर और महल बनीं
पत्थरोंकी दरारें।
इतिहासमें मग्न हो गई
आन्ध्र वसुन्धराविजयोज्ज्वल विजय प्रतापकी कहानी
बन गई उसकी स्मृति स्वप्नकी झाई।

यह गीत विजयनगरके खण्डहरोंको देख उसके विगत वैभव एवं वर्तमान दुरवस्थापर दिल थाम कर, आठ आँसू रोनेवाले कविके हृदयोद्गारोंसे भरा पड़ा है।

महाकवि श्री विश्वनाथ सत्यनारायण पंडित कवि हैं। आप गद्य और पद्यमें अनेक शैलियोंके प्रणेता हैं। प्राचीन और अर्वाचीन दोनों पद्धतियोंपर इनकी कलम समान अधिकारसे चलती है। प्राचीन आन्ध्र वैभवको लेकर इन्होंने अनेक कविताएँ लिखी हैं। आन्ध्र प्रशस्ति आन्ध्र-पौरुष ऋतु संहार आदि खण्ड काव्य किन्नरसानिपाटलु एवं कोकिलम्म-पेण्डिल नामक गीतकाव्य वेइ पडगलु एकवीरा आदि उपन्यास इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। वेइ पडगलु मानों भारतीय संस्कृतिका एक कोष है। इनकी विशेषता इस प्रदेशकी प्रकृति मानसिक प्रवृत्तियों एवं तेलुगु भाषाकी स्वाभाविकताका यथातथ्य चित्रण करनेमें है। उनके पात्र इतने सच्चे लगते हैं कि हम तन्मय हो उनके सुख-दुखमें अपनेको सहभागी मान लेते हैं।

आजकल आप रामायण कल्पवृक्ष नामक महाकाव्य लिख रहे हैं।

श्री गुर्रम जाषुवा भी सुप्रसिद्ध कवि हैं। आप प्राचीनताके पक्षपाती हैं। फिरदौसी स्वप्न-कथा मुमताज-महल आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। श्री जाषुवा ईसाई हैं फिर भी आपकी कविताओंपर हिन्दू-संस्कृतिकी अमिट छाप है। आपकी रचनाओंमें अछूतों और समाजके निम्न जातिके लोगोंकी वेदनाको साकार रूप दिया गया है। मेघदूतके आधारपर लिखे गए गब्बिलमु नामक खण्ड काव्यमें समाजके दलित प्राणियोंकी भावनाओंका मर्मस्पर्शी वर्णन किया गया है। आपका छन्द-चयन बड़ा सुन्दर है।

प्रथम उत्थान कालके अन्य प्रसिद्ध कवियोंमें श्री पच्चिदारपु वेंकट राय शास्त्री वड्डादि सुब्बाराय जनमञ्चि शेषाद्रि शर्मा कट्टमञ्चि रामलिंगा रेड्डी वेदमु वेंकटराय शास्त्री आदिकी गणना की जाती है।

द्वितीय उत्थान-काल

तेलुगु कविता क्रमशः प्रौढ़ावस्थाको प्राप्त हुई। वह समाज-सुधार, राष्ट्रीय भावनाएँ आदि स्थूल विषयोंसे ऊपर उठकर, सूक्ष्म भावनाओंके लोकमें विचरने लगी। इस युगको हिन्दी साहित्यमें छायावादी युग कहते हैं। तेलुगु साहित्यमें भी यह काल वैसा ही है। तेलुगुमें इस प्रकारकी कविताओंको भाव-कविता कहते हैं। छायावादके सभी लक्षण इस भाव कविताओंमें देख पा सकते हैं। वे ही लाक्षणिक प्रयोग भावोंकी नम्रता प्रकृतिका आकर्षण प्रकृतिका मानवीकरण आदि। रीति और नियमोंसे मुक्त हो कविता केवल भाव और लय-प्रधान होने लगी।

भाव और लय-प्रधान होनेसे ये कविताएँ गेय होती हैं और गीति-काव्यके लक्षणोंसे पूर्ण ये कविताएँ आत्मपरक होती हैं। कवि अपने व्यक्तिगत भावावेश-को बड़ी सफाईके साथ अभिव्यक्त करता है। वह स्पष्ट कहता है —

निखिल मेरा था गन्धर्व लोक भी
मधुर सुकुमार, सुखावास मंजुवाटि
मैं हूँ एक राह-भटकी वियोग वीथि।

इस युगके कवियोंका विषय चयन जैसे निराला है वैसे ही उनकी शैली एवं व्यञ्जना-प्रणाली भी नई है। इस युगके कवियोंने भाषा भाव शैली आदि सभी में अपूर्व परिवर्तन उपस्थित किया है।

इस नई धाराके विरुद्ध प्राचीनता वादी आन्दोलन करने लगे। इस नए स्कूलमें रोमाण्टिक कविताको लोकप्रिय बनानेवाले श्री देवुलपल्ली कृष्ण शास्त्री हैं। इस भाव-कविताका आरम्भ करनेवाले श्री रायप्रोलु सुब्बारावजी हैं। इन युवक कवियोंको एकत्र कर उन्हें प्रोत्साहन देनेवाले हैं श्री तल्लावझल शिवशंकर शास्त्री। इन्होंने साहिति-समिति नामक साहित्यिक संस्थाका आयोजन किया जिसके मुखपत्रोंमें इन कवियोंकी भाव-कविताएँ छपा करती थीं।

खण्ड-काव्योंमें नवीनता लानेवाले और कविताओंमें नए प्रयोग करनेवाले श्री रायप्रोलु सुब्बाराव हैं। इन्हें नव्यान्ध्र-कवि-ब्रह्म कहते हैं। आपने अनेक खण्डकाव्य और गीत लिखे हैं इनमें कष्टकमला तृणकंकणमु स्नेहलता जडकुच्चुलु आन्ध्रावली आदि प्रसिद्ध हैं। आपका सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय गीत है —

कहीं भी जाना हो
कहीं भी कदम रख
किसी भी आसन पर चढ़
कोई भी सम्मुख आए,
सराह अपनी मातृभूमि भारतीको,
अपनी जातिके गौरवकी रक्षा कर।

सुब्बारावजीने उमर खैयामकी रुबाइयोंका सुन्दर पद्यानुवाद किया है। ये अनूदित पद्य भाषा भाव दोनों सभी दृष्टियोंसे मौलिक-से दिखाई पड़ते हैं।

देवुलपल्ली कृष्णशास्त्री इस युगके प्रख्यात भावुक कवि हैं। इन्हें आन्ध्र साहित्यका पन्त कहा जा सकता है। प्रेमकी मधुरिमा प्रकृतिसे तादात्म्य एवं दुःखकी पीड़ा इनके काव्यके मुख्य विषय हैं। इनकी कल्पना बड़ी ही सुन्दर होती है। इनके प्रसिद्ध खण्ड-काव्य कृष्णपक्षमु महती [illegible] ऊर्वशी आदि हैं। सुकुमार भाव एवं सरल भाषा मानों इनकी सम्पत्ति हैं। कविताओंमें शब्दोंके नए चमत्कार दिखानेमें आप सिद्धहस्त हैं —

हँस लेने दो, मुझे काहेकी शरम ?
मेरी तो इच्छा अपनी है,
मुझे डर काहेका ?

कवि अपना परिचय इस प्रकार देता है —

देख मुझ किसीका किसीके न लिए
समझते क्या हो मुझे ?
मैं हूँ अनन्त शोक तिमिर लोक
का एकाधिपति।

कवि प्रकृतिमें मिल जानेकी अपनी इच्छा प्रकट करता है—

पवनमें बन गन्ध [illegible]
फूलमें बन फूल
डाली में बन डाली
बन बन कोयल
छिपूँ इस बन में
किसी तरह
रहूँ इस बन में ?

श्री कृष्णशास्त्रीके बाद श्री नंडूरि सुब्बारावका नाम आता है। ग्राम्य भाषा-में लिखे गए इनके 'एंकिपाटलु' में पवित्र प्रणयके भावोंसे भरे सुन्दर गीत हैं। इन गीतोंमें भाषा और भावकी होड़-सी चली दिखाई देती है। इन गीतोंने साहित्य-जगतमें एक तूफ़ान-सा खड़ा कर दिया। नूतन दम्पतियोंमें पवित्र प्रेम संयोगका आनन्द वियोगकी व्याकुलता प्रतीक्षाकी आकुलता आदि बहुत ही सुन्दर रूपमें व्यक्त किए गए हैं।

इस युगके हालावादी कवियोंमें श्री दुव्वूरि रामिरेड्डी प्रमुख हैं। आपने उमर खैयामकी रचनाओंका 'पानशाला' नामसे अनुवाद किया है। कृषीवलुडु इनका स्वतन्त्र काव्य है।

प्रसिद्ध कवियुग्म श्री पिंगलि लक्ष्मीकान्तम एवं काटूरि वेंकटेश्वरराव हैं। दोनों चेल्लपिल्ल वेंकट शास्त्रीके शिष्य हैं। इनका प्रसिद्ध काव्य सौन्दरनन्दमु है।

इसमें शृंगारके दोनों पक्ष एवं शान्त रसका सुन्दर परिपाक हुआ है। इनकी रचनाओंमें शब्दका माधुर्य एवं भावोंका अजस्र प्रवाह खूब मिलता है।

श्री जंध्याल पापय्या शास्त्री बड़े ही भावुक हैं। 'करुण श्री' के उपनाम से ये कविता करते हैं। 'उदय श्री', 'करुण श्री', 'विजय श्री' आदि इनके काव्य हैं। इनकी रचनाओंमें भाव-पूर्ण शब्द अपने आप निर्झरकी धाराके समान झरते हैं। प्राचीन शैलीमें नवीन भावोंको लेकर चलनेवाली इनकी कविता बड़ी ही सरस और सरल हुई है। इस कालके अन्य प्रसिद्ध कवि श्री तुम्मल सत्यनारायण, गौरी नरसिंह शास्त्री, नायनि सुब्बाराव, अडिवि बापिराजु आदि हैं।

तृतीय उत्थान-काल

जिस प्रकार हिन्दी साहित्यमें छायावादकी प्रतिक्रियाके रूपमें तत्कालीन परिस्थितियोंके कारण प्रगतिवादका आविर्भाव हुआ वैसे ही तेलुगु साहित्यमें भी हुआ। भाव कविताकी प्रतिक्रियामें यथार्थवादी कविताका आविर्भाव हुआ।

द्वितीय महायुद्धके आरम्भ होनेसे पूर्व सारे देशमें दरिद्रताका ताण्डव नृत्य हो रहा था। बेकारी बढ़ रही थी। समाजके मध्यम वर्गमें आर्थिक विषमताके कारण जागृति पैदा हुई। बंगालका अकालरूपी भीषण रूप आँखोंके सामने ज्वालाकी तरह धधक रहा था। सर्वत्र हाहाकार मचा हुआ था। स्वतन्त्रताकी भावनाके साथ सत्याग्रहका आन्दोलन जोर पकड़ रहा था। विदेशी शासनका दमन और उत्पीड़न चरम सीमापर था।

इन परिस्थितियोंमें कविका हृदय विकल हो गया। उसने देखा कि कल्पनाके संसारमें विचरण करनेका अब समय नहीं है। कल्पनाके आकाशमें कितना ही ऊँचा उड़ो पर पहुँचना तो जमीनपर ही है। अतः यथार्थवादी कवि कल्पनाके आकाशसे नीचे उतरकर आर्थिक विषमतासे पिसनेवाले समाजका चित्रण करने लगे।

साम्यवादी विचारधाराका इस यथार्थवादी कवितापर विशेष प्रभाव पड़ा। इस आधुनिक काव्यधाराको प्रोत्साहन देनेके लिए 'नवसाहित्य परिषद' की स्थापना हुई, जो आगे चलकर 'अभ्युदय रचयिताल संघम्' में विलीन हो गई।

इस धाराके प्रसिद्ध कवि श्री श्रीरंगम् श्रीनिवासराव हैं। आप 'श्री-श्री' के नाम उपनामसे प्रख्यात हैं। नई कविताके विषयमें आपके ये विचार हैं —

छन्दोंके बन्धनोंको
तोड़ फोड़ दिया डालें।
कहे कोई अरे मूर्ख है क्या यह?
तो कहो, यह कविता है।

इस छन्द-रहित कविताके लिए आप कई वस्तुओंको आवश्यक मानते हैं :—

सिन्दूर, रक्त चन्दन
बन्धूक संध्या राग

बाप-रुत-हिरण्य रक्त
कापालिक-नयन-ज्वाला
कालदष्टा-कालिका-जिह्वा
चाहिये नव कविताके लिए।

फिर यह कविता कैसी होगी? इसका प्रभाव क्या होगा? वे कहते हैं —

हिलनेवाली हिलानेवाली,
बहकनेवाली बहकानेवाली
गहरी नींदको हटानेवाली
पुन जीवन प्रदान करनेवाली
है नव कविता।

यह कवि केवल क्रान्तिसे ही सन्तुष्ट नहीं है वह एक नवीन सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाकी स्थापनाकी प्रेरणा भी देता है।

श्री श्री का प्रसिद्ध मुक्त-काव्य-संग्रह महाप्रस्थानम् है।

अनिसेट्टि सुब्बारावकी प्रगतिवादी विचारधाराका वह ही कलात्मक रूप व्यक्त करते हैं। अग्निवीणा इनकी कविताओंका संग्रह है।

आरुद्र (भागवतुल शंकर शास्त्री) प्रगतिका आह्वान करनेवालोंमें प्रमुख हैं। त्वमेवाहम् नामक पुस्तकमें आपकी कविताएँ संगृहीत हैं। हालमें ही आपका सिनीवाली नामक खण्ड-काव्य प्रकाशित हुआ है।

श्रीरंगम् नारायणबाबू अति यथार्थवादी कविताओंके प्रसिद्ध कवि हैं। अति नवीन शैली एवं नवीन विचारधारामें आपकी कविता चलती है।

कपालमोक्षम् विटकीलोदीपम् (निद्रामें प्रिया) रुधिर ज्योति आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। आपकी मृत्यु हाल ही में हुई है।

श्री दैवन्ति मूर्ति, श्री बसवराजु रामराजु, श्री पट्टाभि श्री कुन्दुर्ति आञ्जनेयुलु आदि इस धाराके प्रसिद्ध कवि हैं।

श्री मल्लूच रविन्द्रनाथरावकी पैरडी (व्यंग्य कविता) लिखनेमें सिद्ध हस्त हैं। अजिन्त नामक इनका पैरोडी पद-संग्रह काफी प्रसिद्ध है।

हैदराबादके कवियोंमें श्री दाशरथी प्रमुख हैं। आप सभी प्रकारकी शैलियोंमें निपुणताके साथ लिख सकते हैं। आपकी कवितामें सच्चे असीम व्यक्तिगत भावनाओंका सबल और स्वाभाविक प्रवाह है। अग्निधारा रुद्रवीणा आदि आपके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह हैं। अस्तित्वम् का ककारेटरी आपकी एक प्रसिद्ध कविता है।

नवक विचार अनायास हैं कविकि पद्यपद्य प्रमुख होते हैं। दाशरथी कहते हैं —

हैं यहाँ पहुनने
ग्रामदरबारा टैरिमेट सिवाल तो मैंने खूब पढ़ते हैं
जनताके सामने (भाव मेरे)।

कालोजि नारायण राव, सी. नारायण रेड्डी, उत्पल सत्यनारायणाचार्य, रामराजु हेमयानाके प्रसिद्ध कवि हैं।

इस प्रकार आधुनिक तेलुगु कविता यद्यपि बंगला एवं अंग्रेजी साहित्यसे प्रेरणा प्राप्तकर प्रारम्भ हुई थी, तथापि अपनी विशेषताओंका उपार्जन कर भिन्न भिन्न धाराओंमें प्रवाहित होती हुई, आधुनिक भारतीय साहित्यमें अपना विशिष्ट स्थानपर विराजमान है। वह भावोंमें, वस्तु चयनमें, शैलीमें, छन्दोंमें, भाषामें, काव्यके सभी अंगोंमें एक नवीनता लेकर उज्ज्वल भविष्यकी ओर अग्रसर हो रही है।

नाटक

आधुनिक आन्ध्र साहित्यके नाटक यक्ष गानों व वीथि भागवतोंकी अपेक्षा संस्कृत तथा अंग्रेजी नाट्य-परम्पराओंसे अत्यधिक प्रभावित हैं। इनके रचना शिल्प-विधानपर संस्कृत व अंग्रेजी नाट्य साहित्यका ही प्रभाव परिलक्षित होता है।

१९ वीं शतीके उत्तरार्धमें धारवाड़के नाट्य समाजने आन्ध्र प्रान्तमें घूम घूमकर पारसी और हिन्दी नाटकोंके प्रदर्शन द्वारा आन्ध्र धूम मचा दी। इन नाटकोंकी लोकप्रियतासे प्रोत्साहित होकर तेलुगुमें नाटक रचना करने और उन्हें अभिनीत करानेके लिए कुछ उत्साही युवक मैदानमें आए। प्रत्येक नगरमें एक या दो नाट्य-समाजोंकी स्थापना हुई। कांग्रेसके प्रख्यात आन्ध्र नेता देशभक्त कोंडा वेंकटप्पय्या पन्तुलु और आन्ध्र केसरी टी. प्रकाशम् पन्तुलु भी इनमें भाग लेते थे।

तेलुगु नाटक साहित्यका प्रारम्भिक युग अनुवादात्मक और अनुकरणात्मक रहा है। आधुनिक आन्ध्र साहित्यके प्रतिष्ठापक श्री वीरेशलिंगम पन्तुलुने शाकुन्तल, रत्नावली, कामेडी आफ एरर्स आदिका अनुवाद किया। अभिज्ञान शाकुन्तल के तो तेलुगुमें कोई पच्चीससे अधिक अनुवाद हुए, पर वीरेशलिंगम पन्तुलुका अनुवाद श्रेष्ठ माना जाता है। श्री वेदम् वेंकटराय शास्त्रीने उत्तर रामचरित और हर्षके सभी नाटकोंका, श्री वड्डादि सुब्बारायुडुने वेणी संहार का, तिरुपति वेंकटकवुलु मुद्राराक्षस, मृच्छकटिक, बाल रामायण का, वेदूरि प्रभाकर शास्त्रीजीने नागानन्द का, दासु श्री रामुलुजीने मालती माधवका, श्री चिलकमर्ति लक्ष्मीनरसिंहमजीने भासके सभी नाटकोंका अनुवाद किया है। इनके अतिरिक्त तापस वत्सराजु, कौमुदी महोत्सव, 'कर्पूर मञ्जरी' आदि लगभग सभी संस्कृतके नाटकोंका तेलुगुमें अनुवाद हुआ है। अंग्रेजीसे शेक्सपियरके नाटकोंके कई अनुवाद भी प्रकाशित हुए हैं। बंगला और हिन्दीके नाटकोंके अनुवाद भी हुए हैं। महाकवि रवीन्द्रके नाटकोंके कई अनुवाद हुए हैं जिनमें श्री बजवाडा गोपाल रेड्डीके अनुवाद सुन्दर हैं। श्री डी. एल. रायके "चन्द्रगुप्त" "सीता" आदिका श्रीपाद कामेश्वर रावजीने अनुवाद प्रस्तुत किया है।

सन् १८६ ई में श्री कोराड रामचन्द्र शास्त्रीने 'मञ्जरी मधुकरीयमु' की रचना की जो तेलुगुका सर्वप्रथम मौलिक नाटक माना जाता है। सन् १८७५ में

श्री वाविलाल वासुदेव शास्त्रीने 'नन्दक राज्य' नामक मौलिक नाटककी रचना की।

स्वयं मौलिक नाटकोंकी रचनाकर, उनका प्रदर्शन कर, लोकप्रिय बनाने-वाले प्रथम नाटककार और अभिनेता श्री धर्मवरम रामकृष्णाचार्य हैं। इन्होंने बल्लारि नगरमें 'सरस विनोदिनी सभा' की स्थापना की। इस सभाने आन्ध्र प्रान्तमें प्रथमतः पारसी कम्पनियोंके अनुकरणपर, नाटकोंका अभिनय किया। श्री आचार्यजीने ३० से अधिक नाटक लिखे हैं और ये सभी नाटक अभिनीत हो चुके हैं। (पन्द्रह नाटक पुस्तकाकार प्रकाशित हुए हैं।) इन नाटकोंके कथावस्तु यद्यपि पौराणिक हैं, फिर भी घटना-सन्निवेश और कल्पना चातुर्यके कारण ये नाटक अधिक लोकप्रिय हैं। चित्रनलीयम्, विषाद सारंगधर, प्रह्लाद, वरूथिनी आदि इनके प्रसिद्ध नाटक हैं। अंकोंको दृश्योंमें विभाजित करना, प्रॉलोग और एपिलोगका लिखना, छन्द स्वगत भाषण दुःखान्त आदि पश्चिमी नाटकोंके प्रभावसे इनके नाटकोंमें समाविष्ट हुए हैं। विषाद सारंगधर तेलुगुका प्रथम दुःखान्त नाटक माना जाता है। वर्तमान राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक समस्याओंको आचार्यजीने अपने पौराणिक नाटकोंमें भी स्थान दिया है। श्री रामकृष्णाचार्यको उनकी अनन्य सेवाओंके कारण आन्ध्र प्रदेश 'आन्ध्र नाटक पितामह' के रूपमें याद करता है।

इसी बल्लारी नगरमें एक दूसरे नाटक साहित्य हुए हैं — वे हैं श्री कोलाचलम् श्रीनिवासराव। इन्होंने भी नाटकोंकी रचनाकर उन्हें अभिनीत करवाया है। इन्होंने रामी-विलास नाटक सभा की स्थापना की। इन्होंने 'प्रपंच नाटक चरित्र' (संसारके नाटकोंका इतिहास) लिखा जो एक अच्छा परिचयात्मक और आलोचनात्मक ग्रन्थ है। पदमाहवन भी काफी नाटक लिखे हैं। सुनन्दिनी परिणय, विजय नगर राज्य पतनम्, प्रतापाग्रवरीयम्, मदालसा, सत्य हरिश्चन्द्र, पादुका पट्टाभिषेकम् आदि इनके प्रसिद्ध नाटक हैं। विजयनगर राज्य पतनम् बहुत ही लोकप्रिय हुआ है। मौलिक रूपमें ऐतिहासिक और पौराणिक नाटकोंकी रचनाके अतिरिक्त राववजीने संस्कृत, तमिल और मराठी नाटकोंके अनुवाद भी प्रस्तुत किए हैं। इन्होंने कुछ सामाजिक नाटक और प्रहसनोंकी भी रचना की है। ये 'आन्ध्र ऐतिहासिक नाटक-पितामह' के नामसे प्रसिद्ध हैं।

प्रतापरुद्रीयम्, उषा, बोब्बिलि — ये तीन मौलिक नाटक श्री वेदम् वेंकटराय शास्त्रीके हैं। इनमें 'प्रतापरुद्रीयम्' जो काकतीय प्रतापरुद्र और मुसलमान सुलतानोंके संघर्षसे सम्बन्धित है तेलुगुके ऐतिहासिक नाटकोंमें अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इस नाटकके रचना-वैशिष्ट्य, चरित्र चित्रण, पात्रोचित भाषा प्रयोग, सूक्ष्म व्यंग्य आदि सराहनीय हैं। प्रतापरुद्रका मन्त्री यौगन्धरायण भासके यौगन्धरायणकी याद दिलाता है।

पानुगण्टि लक्ष्मीनरसिंहरावजीने लगभग तीस नाटकोंकी रचनाकर, 'आन्ध्र शेक्सपियर' की ख्याति प्राप्त की है। इनके नाटकोंमें 'पादुका पट्टाभिषेक', 'राधाकृष्ण', 'विप्रनारायण' बहुत ही लोकप्रिय नाटक हैं। ये नाटक रचनामें पद्य और गीतोंकी अपेक्षा गद्यको ही महत्व देते हैं।

श्री चिलकमर्ति लक्ष्मीनरसिंहमजीका 'गयोपाख्यान' आन्ध्रके नाटक-जगतका श्रेष्ठ और लोकप्रिय नाटक रहा है। इस नाटककी जितनी प्रतियाँ बिकी हैं उतनी शायद ही किसी दूसरे नाटककी बिकी हों। 'प्रसन्न-यादवमु' 'पारिजातापहरणमु' 'प्रह्लाद चरित' इनके अन्य प्रसिद्ध नाटक हैं। नरसिंहमजीके नाटकपर संस्कृत नाटकोंका प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक है पर हास्य और व्यंग्ययुक्त वार्तालाप अंग्रेजी नाटकोंकी याद दिलाते हैं।

श्री तिरुपति-वेंकट कवुलका लिखा 'पाण्डवों उद्योग-विजयमुलु' इतना प्रसिद्ध हुआ है कि उसके मधुर पद्य जनताकी जबानपर चढ़ गए हैं। इस नाटकका कृष्णरायबा-रका (श्रीकृष्णका दूत-कार्य) दृश्य बड़ा मार्मिक और प्रभावशाली बन पड़ा है। इन्होंने महाभारतपर आधारित कुछ और नाटक भी लिखे हैं।

श्री बलिजेपल्लि लक्ष्मीकान्तमका लिखा 'सत्य हरिश्चन्द्र' भी काफी लोकप्रिय बना है। इस नाटकके पद्य बड़े ही मधुर हैं।

तेलुगुके सामाजिक नाटकोंमें श्री गुरजाड अप्पारावका 'कन्याशुल्क' (१८९७) सर्वप्रसिद्ध है। इस नाटकको लिखे सत्तर वर्ष हो गए, पर यह आज भी नया है। इसमें बड़े ही तीव्र व्यंग्यसे सामाजिक कुप्रथाओंकी पोल खोली गई है। वेश्या-प्रथा, बाल-विवाह, कन्या-शुल्क (वर शुल्क या दहेज नहीं), नई पीढ़ीके युवकोंके ढोंग फैशन आदिका मार्मिक चित्रण हुआ है। यह नाटक सामाजिक सुधारको दृष्टिमें रखकर लिखा गया है। अतः नाटककी कसौटीपर उतना खरा नहीं उतरता। इस नाटकका प्रमुख पात्र 'गिरीशमु' आन्ध्र प्रान्तमें ऐतिहासिक पुरुष-सा बन गया है, जो ढोंगी और धोखेबाज लोगोंका प्रतिनिधि है। परवर्ती सामाजिक नाटकोंपर 'कन्याशुल्कम्' का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

कवि-सम्राट् विश्वनाथ सत्यनारायणने कविता उपन्यासके अतिरिक्त नाटक रचनामें भी अपनी प्रतिभा दर्शाई है। 'नर्तनशाला' 'अनारकली' 'वेनराजु' आदि आपके सुन्दर नाटक हैं। 'नर्तनशाला'में कीचक (विराट महाराजका साला) को उदात्त विषाद नायकके रूपमें चित्रित करनेका सफल प्रयत्न किया है।

उपर्युक्त नाटककारोंके अतिरिक्त सोमराजु रामानुजराव, श्री सीतारामराव, यज्ञनारायण, मल्लादि सूर्यनारायण शास्त्री, काल्लकूरि नारायणराव, मुद्दुकृष्ण वेंकट सुब्बाराव, पिंगलि लक्ष्मीकान्तम् आदि भी प्रमुख हैं। प्राचीन सम्प्रदायोंके अनुकूल गद्य-पद्य युक्त नाटकोंकी सामग्री अधिकांशतः ऐतिहासिक व पौराणिक रही है। इस प्रथम उत्थानके बाद लेखकोंका दृष्टिकोण बदल गया। अतः वस्तु और शैलीमें स्पष्ट

परिवर्तन लक्षित होता है। नव उत्थानकी रचनाओंकी सामग्री बहुत कुछ वर्तमान सामाजिक समस्याओंपर ही आधारित है। इसमें केवल भाषाका ही प्रयोग किया गया है। भाषा व्याकरण सम्मत न होकर बोलचालकी है। रचना-विधान और रंगमञ्चके प्रबन्धपर अधिकाधिक पाश्चात्य प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

आचार्य आत्रेयके नाटकोंमें मध्यवर्गीय परिवारोंकी समस्याओंका प्रभाव शाली चित्रण मिलता है। सामान्य मनुष्यके हृदयमें वर्तमान परिस्थितिके प्रति परिलक्षित होनवाले भय शंका आदि मनोवृत्तियोंके चित्रणमें भी आत्रेय सिद्धहस्त हैं। 'मट्कोंप (ताशका मकान) कप्पलु (मेंढक)' 'भयं' आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। कोपल्ले वेंकट रामाराव ने अपने नाटकोंमें सामाजिक कुराचारोंका खण्डन बड़े चारुतर ढंगसे किया है। श्री पिनिशेट्टीकी 'पल्लेपडुचु' (ग्रामीण युवती) में किसान और जमींदारके संघर्षका सुन्दर चित्र है। श्री बुच्चिबाबूका 'आरम बम्बल' गोपी चंदनाके 'पौलित' कविराजु रामराजके 'मास्टरजी' पुनर्जन्म भी अच्छे नाटक हैं। इनके अतिरिक्त नरसराजु जि भूर्ते प्रभव श्रीरामभूति नरसिंहराव आदि ख्यातिप्राप्त नाटककार हैं। माना जाता है कि अबतक तेलुगुमें कोई हजार नाटक लिखे गये हैं।

एकांकी

गत दो दशकोंसे बड़े नाटक लिखनेकी प्रथा कम होती जा रही है और एकांकियोंका प्रचलन बढ़ता जा रहा है। मुख्यतया कालेज और स्कूलके वार्षिक उत्सवोंके उपलक्ष्यमें और मासिक पत्रोंमें प्रकाशनार्थ लिखे गए इन एकांकियों पर पश्चिमी प्रभाव अधिक है।

मद्रासके भू पू मुख्य न्यायाधीश श्री पी वी राजमन्नार तेलुगुके सर्वप्रथम एकांकी-लेखक माने जाते हैं। इनके एकांकियोंमें मध्यवर्गीय समाजकी समस्याओं और कुप्रथाओंका प्रभावशाली चित्रण मिलता है। 'ये भी कैसे मर्द हैं ?' 'इन्मतर्य दाप किसका ?' आदि श्री राजमन्नारके सुप्रसिद्ध एकांकी हैं। श्री गुडिपाटी वेंकटचलमके एकांकियोंपर फ्रायडका गहरा प्रभाव है। स्त्री-पुरुषके सम्बन्धका पुरुषका दमन और स्त्री की कुण्ठाओंको 'चलं' ने बिलकुल नग्न रूपमें पर बड़े ही चारुतर शब्दोंमें व्यक्त किया है। भले ही आप उनके भावों व सिद्धान्तोंसे सहमत न हों पर भावाभिव्यक्तिकी कुशलता प्रभाव और टेकनिककी देखकर उन्हें सराहना ही पड़ेगा। श्री मुनिमाणिक्यम नरसिंहरावके एकांकी मधुर हास्यसे युक्त पाठकोंको बार-बार पढ़नेके लिए विवश करते हैं। डा श्रीरंगम रामाराव ऐतिहासिक एकांकी लिखनेमें सिद्धहस्त हैं। पिन्ना वीरभद्रुडु, मल्लादि विश्वनाथ डी वी नरसराजु मल्लादि अवधानीने भी अच्छे एकांकी लिखे हैं।

१९४२ के बादसे तेलुगुमें यथार्थ (अति) के चित्रण की ओर अधिक ध्यान दिया है। बुच्चिबाबूका उमरसैय्याम व तिप्पयपीता इस नये दृष्टिकोणके

उदाहरण हैं। मानवकी प्रगति में मानव-समाजकी प्रगतिका वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। श्री विनिपट्टीके स्वर्ग नामक एकांकीमें धार्मिक मोहावेश-से अभिभूत होकर पत्नीको घरसे बाहर निकाल देनेवाले एक गृहस्थका मार्मिक चित्रण किया गया है। इस एकांकीकी विशेषता यह है कि पारिवारिक जीवनसे सम्बन्धित होनेपर भी इसमें एक भी स्त्री पात्र नहीं है।

कृष्ण पत्रिका भारती आन्ध्र पत्रिका आन्ध्र प्रभा आदि पत्रिकाओंमें भी सुन्दर एकांकी प्रकाशित हुए हैं।

श्री शिवशंकर शास्त्रीने दीक्षित दुहिता पद्मावती चरण चारण चक्रवर्ती के नामसे गद्य नाटक लिखे हैं जिन्होंने काफी प्रतिष्ठा प्राप्त की। श्री वी नारायण रेड्डीका नव्वनि पुव्वु (मुस्कराता फूल) इसी श्रेणीकी सुन्दर गद्य नाटिका है। श्री विश्वनाथ सत्यनारायणका किन्नरसानि पाटलु काव्य है फिर भी उसमें गद्य नाटकके लक्षण पर्याप्त मात्रामें मिलते हैं।

आजकल नाटक और एकांकियोंके क्षेत्रमें रेडियोका भी विशिष्ट स्थान है। इन श्रव्य नाटकोंकी अपनी कुछ मर्यादाएँ और सीमाएँ हैं। इस विधामें भी कपिल काशीपति बुच्चिबाबु गोरा शास्त्री पद्मराजु आचार्य रजनी मुनिमाणिक्यम् नरसिंहरावने स्तुत्य प्रयास किए हैं।

श्री कोम्पल्लु सुब्बारावका अली मुठा (लहरों का समूह) संगीत नाटकोंमें प्रथम और श्रेष्ठ माना गया है।

बालोपयोगी नाटक लिखनेमें नार्ल चिरंजीवि पालकि हरस्वर्ण देवी चिन्ता दीक्षितुलु प्रमुख हैं।

इस प्रकार तेलुगुने गत दो शताब्दियोंमें नाटक साहित्यमें उल्लेखनीय रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। तेलुगुका नाट्य साहित्य भारतीय नाटक साहित्यमें प्रमुख स्थानका अधिकारी है। क्या रचना क्या वस्तुविधान क्या शैली—सभी दृष्टियोंसे साहित्यका यह अंग उत्तम सिद्ध हुआ है।

उपन्यास

दक्षिणकी भाषाओंमें तेलुगुमें ही सर्वप्रथम उपन्यास-रचना हुई। सन् १८६४ में ही श्री कोक्कोंड वेंकटरत्नम पन्तुलुजीका महाश्वेता नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ जो कादम्बरी का स्वेच्छानुवाद है। सन् १८७२ में नरहरिसेट्टि गोपालकृष्ण शेट्टिका श्रीरंगराज चरित्र सबसे प्राचीन ऐतिहासिक उपन्यास है पर श्री वीरेशलिंगमका राजशेखर चरित्र (१८७८) ही तेलुगुका पहला उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यासमें सामाजिक कुराचारोंपर कटु व्यंग्य किया गया है।

चिन्तामणि पत्रिका (१८९२ ९९) के पुरस्कार प्राप्त करनेवाले लेखकोंमें श्री खण्डवल्लि रामचन्द्रुडु और श्री चिलकमर्ति लक्ष्मीनरसिंहमजी मुख्य हैं। नरसिंहम पन्तुलुजीने सामाजिक ऐतिहासिक हास्यरसात्मक और अनूदित कई उपन्यास

लिखे हैं। श्री कित्तवरपु वेंकट शास्त्रीजीने कई ऐतिहासिक उपन्यास लिखे हैं। 'आन्ध्र प्रचारिणी ग्रन्थमाला', 'विज्ञान चन्द्रिका ग्रन्थमाला' और 'वेगुचुक्क ग्रन्थमाला' ने कई सुन्दर उपन्यास प्रकाशित किए हैं। बंकिमचन्द्र और रवीन्द्रके बंगाली उपन्यासोंके सुन्दर अनुवाद हुए हैं। आज तो शरच्चन्द्र,प्रेमचन्द आदि लेखकोंकी रचनाओंके अनुवाद धड़ाधड़ हो रहे हैं।

श्री विश्वनाथ सत्यनारायणजीके उपन्यासोंका विशिष्ट स्थान है। 'एक वीरा' उनका प्रथम और सुन्दर उपन्यास है। इसका हिन्दी अनुवाद श्री पं. हनुमच्छास्त्रीने दक्षिण भारत (मद्रास) में प्रकाशित किया है। 'वेइ पडगलु' (सहस्र फन) भारतीय (खासकर आन्ध्र) समाज और संस्कृतिका मानों विश्वकोश ही है। 'चेलि-यलि कट्टा', 'धर्मचक्र', 'वल्लभमन्त्रि', 'स्वर्गको सीढ़ी', 'मा बाबू' आदि अन्य उपन्यास हैं।

श्री अडिवि बापिराजुने कई सामाजिक उपन्यास लिखे हैं। 'नारायणराव' शीर्षक उपन्यासने 'वेइ पडगलु' के साथ आन्ध्र विश्वविद्यालयके पुरस्कारको प्राप्त किया है। इसका हिन्दी अनुवाद श्री ए. रमेश चौधरीने साहित्य अकादमीके लिए किया है। उनके 'हिमबिन्दु' और 'कोनंगी' भी काफी लोकप्रिय सिद्ध हुए हैं।

श्री श्रीपाद सुब्रह्मण्य शास्त्री कृत 'आत्मबलि', 'पोलीचिन्नकी' की 'अबतमर्द की जीवन-यात्रा', बुच्चिबाबूकी 'अन्तमें बचनेवाली', श्री श्री कृष्णारावकी 'कठपुतली', बलिवाड़ कान्तारावकी 'दीवार परकी तस्वीर', पीठुमूर्ति साम्बशिवरावकी 'उदय किरण' आदि रचनाओंका सामाजिक उपन्यासोंमें विशिष्ट स्थान है।

श्री उन्नव लक्ष्मीनारायणजीके 'मालपल्लि' नामक उपन्यासमें सामाजिक और राजनैतिक समस्याओंका सुन्दर चित्रण किया गया है। भारतीय स्वतन्त्रता-आन्दोलन के क्रमिक विकासके साथ-साथ इसमें चित्रित प्रभावशाली चरित्र और इसकी मनोहर शैलीके कारण यह उपन्यास अत्यधिक लोकप्रिय बना हुआ है। श्री उप्पल लक्ष्मणराव का 'वह (He) और वह (She)', महीधर राममोहनरावका 'रथचक्र' और 'दमामल', स्व. श्री वट्टिकोट आल्वारस्वामीका 'जनताका आदमी' आदि उपन्यास सामाजिक और राजनैतिक विचारधाराओंके सुन्दर सम्मेलनके रूपमें लोकप्रिय बन हुए हैं।

ऐतिहासिक उपन्यासकारोंमें श्री नोरि नरसिंह शास्त्रीका प्रथम स्थान है। ऐतिहासिक उपन्यासोंके अन्य लेखकोंमें सर्वश्री नारायण भट्ट, रुद्रम्मा, मल्लारेड्डी आदि सुप्रसिद्ध हैं। आजकल श्री शास्त्रीजी श्री नाथ नामक प्रसिद्ध महाकविके जीवनपर आधारित एक उपन्यास तैयार कर रहे हैं। ऐतिहासिक तथ्योंको सुन्दर एवं सरस कथाके रूपमें गूँथनेकी शास्त्रीजीकी प्रतिभा अनुपम है। डा. धारले नरसिंहमका 'मल्काभिषेक', 'रघुनाथरायलु', श्रीमति वसुन्धराका 'तंजाऊरका पतन' एवं 'सप्तपर्णि', भूमिपाल श्री राममूर्तिका 'भुवनविजय', 'मस्तूरि'–

वेंकटरमणय्याका मधुमावती भी उनका सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है। श्री वेंकटसूरिका वेंकिरसाम मंगोलियाके शासनके वरिवका प्रभावशाली चित्र अंकित करता है।

ऐसे समस्याओंको लेकर उपन्यास लिखनवालोंमें श्री गुरुपाटि वेंकट चलमका प्रथम स्थान है। भावोंमें क्रान्तिके साथ चलम का रचनाकौशल अपना सानी नहीं रखता। शशिरेखा ब्राह्मणीकम् अमीना मैदान आदि आपके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। श्री धनिकोंडा हनुमन्तराव आदिने चलम का अनुकरण किया है।

हास्यप्रधान उपन्यास लिखनवालोंमें श्री मुनि मानिक्यम नरसिंहाराव मोक्कपाटि नरसिंह शास्त्री कम्मूमम रविमचीनाथ शास्त्री आदि प्रमुख हैं। नरसिंहा रावके उपन्यास घरेलू होते हैं। उनके उपन्यासोंकी नायिका कान्तम आपके पाठकोंको पुलकित करती रहती है। नरसिंह शास्त्रीके बैरिस्टर पार्वतीशम की एक-एक पंक्ति पढ़कर हँसे बिना नहीं रहा जा सकता।

मनोवैज्ञानिक ग्रन्थियोंको आधार बनाकर लिखनवालोंमें कोडवटिगण्टि कुटुम्बराव गोपीचन्द बुच्चिबाबू प्रमुख हैं। कुटुम्बरावके 'चदुवु' 'तर्म-चंचल' आदिमें मनोविज्ञानके साथ-साथ कथा सन्निवेश भी अच्छा बन पड़ा है। गोपीचन्दके अँधेरे कोने सूनके घर आदि उपन्यासोंमें मनके अँधेरेका चित्रण हुआ है। सौरीस रावकोण्डा विस्वनाथ शास्त्री और बुच्चिबाबूने मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास लिखे हैं।

पिलिसेट्टी सुब्बारावके वल्लवा (गौर वैश्या) शीर्षक उपन्यासोंमें धनी और निर्धन परिवारोंके जीवनके अन्तरको सुस्पष्ट रूपसे चित्रित किया गया है। नटराजन नामक तमिल भाषा भाषीने शारदा के उपनामसे मञ्चि-चेडु अपस्वर कौन सत्य नामक तीन सामाजिक उपन्यास लिखे हैं। इनमें निम्न और मध्यम वर्गकी समस्याओंका सुन्दर चित्रण हुआ है। अकाल मृत्युने इनकी लेखनी थाम दी वरन् इनसे तेलुगु उपन्यास साहित्यको काफी आशाएँ थीं।

आजकल जासूसी उपन्यासोंकी बाढ़-सी आ रही है। इनमेंसे कुछ अच्छे उपन्यास भी प्रकाशित हुए हैं। आत्म टेम्पोराव कौम्मूरि साम्बशिवरावने अच्छे उपन्यास लिखे हैं।

कुछ महिलाओंने भी उत्तम उपन्यासोंकी रचना की है। कनुपर्ति वरलक्ष्मम्मा का सुदक्षिणा चरित्र (पौराणिक) पुलगुर्ति लक्ष्मीनरसमाम्बाका सुभद्रा 'अन्नपूर्णा' (सामाजिक) मालती चन्दूरका चम्पक दीमक भसुन्धराका दूरके पहाड़ आदि इस विभागमें उल्लेखनीय हैं।

इतर भारतीय भाषाओंके उपन्यासोंके अतिरिक्त अनेक यूरोपीय उपन्यासोंके भी अनुवाद हो चुके हैं और हो रहे हैं।

इस प्रकार आन्ध्रका उपन्यास साहित्य विविध उपन्यास-रचनाओंसे सुसम्पन्न है। अनुवाद अनुकरणके साथ-साथ विभिन्न शैलियोंके मौलिक और श्रेष्ठ उपन्यासोंकी भी रचना हुई है। तेलुगु उपन्यासका विश्व-साहित्यमें विशिष्ट स्थान है।

कहानी

यूरोपीय साहित्यके सम्पर्कसे आधुनिक आन्ध्र पद्य साहित्यमें आई हुई विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियोंमें कहानीका विशिष्ट स्थान है। पश्चिमी कहानियोंके विशिष्ट शिल्प-विधान एवं टेकनीकसे सम्पन्न होकर आजकल तेलुगु कहानीकी गणना संसारकी सर्वश्रेष्ठ कहानियोंमें होने जा रही है।* यद्यपि सभी विधाओंका श्रीगणेश करनेवाले वीरेशलिंगम्‌जीके हाथों केवल इस विधाका ही प्रारम्भ नहीं हुआ। स्व श्री गुरजाड अप्पारावने १९११ में अंग्रेजीमें एक कहानी लिखी थी। उसके बाद आपका नाम सुधार आदि तेलुगु कहानियाँ लिखकर आपने कथा-साहित्यका श्रीगणेश किया।

वेदमु वेंकटराय शास्त्रीने भोज-कालिदासकी कथाओंमेंसे 'वेताल पञ्च विंशति' और कथा सरित्सागर नामक तीन कहानी-संग्रह प्रकाशित किए। श्री चलमचर्ल वेंकटनरसिंहम्‌जीके राजस्थान कथावली 'चमत्कारमञ्जरी' चित्रकथा गुच्छम् आदि कहानी-संग्रह प्रकाशमें आए। प्राचीन और नवीनका सामञ्जस्य करते हुए विभिन्न विषयोंको आधार बनाकर लिखनेवाले सुधारवादी लेखक हैं श्री वेलूरि शिवराम शास्त्री। आधुनिक सभ्यतापर मीठी चोट करते हुए हास्य प्रधान और व्यंग्योपयोगी कहानी लिखनेमें सिद्धहस्त थे चिन्ता दीक्षितुलु। श्री श्रीपाद सुब्रह्मण्य शास्त्रीकी कहानियोंमें तेलुगु कहानीका दृढ़ रूप परिलक्षित होता है जो पश्चिमी प्रभावसे परे है। सहज सुन्दर वार्तालाप और यथार्थ घटनाओंको लेकर इनकी एक-एक कहानी अनूठी हुई है। केवल वार्तालाप द्वारा ही पूरी कहानी लिखना इनकी विशेषता है। श्री तल्लावज्झल शिवशंकर स्वामी अडिवि बापिराजु विश्वनाथ सत्यनारायण आदि भी सुप्रसिद्ध कहानीकार हैं। व्यंग और चमत्कारसे भरी हुई कहानियोंके लिए प्रसिद्ध हैं श्री कोडवटिगण्टि कुटुम्बराव।

कथावस्तुमें शैलीमें भावमें और भाषामें भी निराली नवीनता लानेवाले लेखक हैं श्री गुडिपाटि वेंकटचलम्। साहित्यके इतिहासमें विपथगा विप्लव कारी के नामसे प्रसिद्ध हैं। विरोधी वर्गकी कटु आलोचना सहते हुए भी अपने मार्गपर अचल बने रहे। मुख्यतः सेक्स समस्याको लेकर लिखी गई आपकी कहानियाँ काफी प्रसिद्ध हुई हैं।

---

* श्री पालगुम्मि पद्मराजुकी लिखी 'तूफान' नामक कहानी सन् १९५२ में विश्व कहानी प्रतियोगितामें द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है। हालमें श्री चासोकी लिखी 'धोरावरीके कर्ण' शीर्षक कहानीको भी उत्तम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

श्री मुनिमाणिक्यम नरसिंहरावजी 'कान्तम्' तेलगु प्रान्तकी बहुओंके प्रतिनिधि हैं। आपकी कहानियाँ शान्त और मान्त दैनिक जीवनको मधुर हास्यसे भर देती हैं। इन कहानियोंमें 'कान्तम्' को नायिका बनाकर गृहस्थ-जीवनका सुन्दर चित्रण किया गया है।

श्री इन्द्रगण्टि हनुमच्छास्त्री और मोक्कपाटि नरसिंह शास्त्रीने अच्छी कहानियाँ लिखी हैं। इन्द्रगण्टिकी शैली पाण्डित्यपूर्ण है तो मोक्कपाटिकी शैली अति सरल है।

श्री पालगुम्मि पद्मराजुने कहानियाँ कम लिखी हैं पर प्रत्येक कहानी अपना विशिष्ट शिल्पके लिए प्रसिद्ध है। आकर्षक कथा-वस्तु, सहज सुन्दर कल्पनाएँ, मधुर वार्तालाप आदिने इनके टेक्नीकमें चार चाँद लगा दिए हैं। 'गालिवान' कहानीने विश्व कहानी-प्रतियोगितामें द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कर तेलुगु कहानीको महत्व प्रदान किया है।

श्री करुण कुमार ने कहानियोंसे अपने उपनामको सार्थक किया है। आपकी कहानियोंमें ग्रामीण जनताके पीड़ित जीवनकी झाँकीके साथ-साथ आधुनिक सभ्यताके कारण पिसनेवाले नागरिकोंके चित्र भी मिलते हैं।

श्री गोपीचन्द एक सफल कहानीकार हैं। मानसिक संघर्षको और संस्कारके परदेमें छिपी भावनाओंको आप बड़े ही प्रभावशाली ढंगसे व्यक्त करते हैं। ऐतिहासिक घटनाक्रम, सामाजिक परिस्थितियाँ, व्यक्तियोंकी मानसिक गतिविधियाँ और हेतुभूत भिन्न-भिन्न वातावरणको समझकर रचना करनेवाले हैं श्री गोपीचन्द। सामाजिक और राजनैतिक समस्याओंसे प्रभावित रहनेके कारण इनकी कहानियाँ हृदयकी अपेक्षा मस्तिष्कको अधिक प्रभावित करती हैं।

नवीन कहानी लेखकोंमें श्री बुच्चिबाबूका अपना विशिष्ट स्थान है। अंग्रेजी प्राध्यापकके पदपर रहनेके कारण आपने अपने कहानी-शिल्पमें पश्चिमी रीतियोंको अत्यधिक अपनाया है। रचनाओंमें दृष्टिगोचर होनेवाले उपमान आपकी व्युत्पत्तिको बतलाते हैं तो व्याख्याएँ, आलोचनाएँ आपकी प्रतिभाको। हृदयके साथ-साथ मस्तिष्कको भी स्पन्दित कर देनेमें आप सिद्धहस्त हैं। टेक्नीकपर पूर्ण अधिकार होनेके कारण कहानियोंमें विविधता ला देनेमें आप समर्थ हैं।

भरद्वाज धनिकोण्ड अनिसेट्टि आदि लेखकोंकी गणना यथार्थवादी लेखकोंमें की जाती है। श्री एन. आर. चन्दूर और श्रीमती मालती चन्दूरकी कहानियोंका भी विशिष्ट स्थान है। मधुरान्तकम राजाराम अविसल बलिवाडा कान्ताराव अमरेन्द्र पोतुकूचि साम्बशिवराव भास्करभट्ल कृष्णाराव इसुकपल्लि दक्षिणामूर्ति आदि अन्य प्रसिद्ध कहानीकार हैं। श्री मुल्लपूडि वेंकटरमण हास्यरस प्रधान कहानियाँ लिखनेमें प्रसिद्ध हैं। आजकल आप 'राजकीय बेताल पञ्चविंशति' नामसे आपकी राजनीतिपर व्यंग्यपूर्ण कहानियाँ लिख रहे हैं।

श्रीमती नायिनेनी सीतादेवी इल्लिन्दल सरस्वती देवी श्रीमती (डॉक्टर) श्री देवीने भी अच्छी कहानियाँ लिखी हैं। मल्लवरपु इन्दिरादेवी मदनभूषि सुलोचना रानी वानकी रानी आदि लेखिकाएँ अभी-अभी इस क्षेत्रमें प्रवेश कर रही हैं। इनका भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है।

यूरोपीय और अन्य भारतीय भाषाओंकी अनेक श्रेष्ठ कहानियोंके सुन्दर अनुवादोंसे तेलुगुका कथा-साहित्य सम्पन्न हो चुका है। बंगलाके शरत्चन्द्र और हिन्दीके प्रेमचन्दसे तेलुगुके कहानी साहित्यके पाठक अत्यधिक प्रभावित रहे हैं।

जीवनियाँ

तेलुगुमें आत्मकथाएँ और जीवनियाँ भी अधिक संख्यामें लिखी गई हैं। वीरेशलिंगम पन्तुलु और चिलकमर्ति लक्ष्मीनरसिंहारावकी आत्मकथाएँ, उनके जीवनकी विशेषताओंके अतिरिक्त उस समयकी सामाजिक एवं साहित्यिक प्रवृत्तियोंका परिचय देनेवाली हैं। 'आन्ध्र-केसरी' टंगुटूरि प्रकाशम पन्तुलु, कोण्डा वेंकटप्पय्य पन्तुलु अय्यदेवर कालेश्वररावजी आदिकी आत्मकथाएँ साहित्यमें ही नहीं आन्ध्रके कांग्रेस आन्दोलनके इतिहासमें विशेष स्थानकी अधिकारिणी हैं। वेटूरि प्रभाकर शास्त्रीजी की 'प्रज्ञा प्रभाकरमु' जैसे शुद्ध आत्मकथा नहीं पर उनके सात्विक जीवनकी अनेक विशेषताओंपर प्रकाश डालनेवाली है।

वीरेशलिंगम पन्तुलु और चिलकमर्तिजीने कई सुन्दर जीवनियाँ लिखी हैं। स्वामी चिदम्बरानन्दकी रामकृष्ण और विवेकानन्दकी जीवनी विशेष उल्लेख्य है। इनके अतिरिक्त और भी कई महान व्यक्तियोंकी जीवन-कथाएँ लिखी गई हैं।

आलोचना

आलोचनात्मक साहित्यके जन्मदाता भी श्री वीरेशलिंगम ही हैं। 'आन्ध्र कवुल चरित्र' हिन्दी साहित्यमें मिश्रबन्धु विनोद के समान ही आन्ध्र साहित्यके सभी प्राचीन साहित्यकारोंकी जीवनी एवं रचनाओंपर प्रकाश डालती है। गुरजाडा श्रीराम मूर्तिकी 'कवि जीवितमुलु' भी ऐसी ही रचना है। इतर उल्लेख्य रचनाओंमें कट्टमंचि रामलिंगारेड्डीजी (Sir C. R. Reddy) का 'कवित्व-तत्त्व-विचारमु' पेण्डचाल वेंकट सुब्रह्मण्य शास्त्रीजीका 'महाभारत चरित्रमु' जनमंचि शेषाद्रि शर्माजीका 'वैमना' और 'कारस्थानमु' पुट्टपर्ति नारायणाचार्यका 'प्रबन्ध नायिकाएँ' विश्वनाथ सत्यनारायणजी का 'नन्नयकी प्रसन्न कथा-कलितार्थयुक्ति' कोराड राम-कृष्णय्याजीका 'महाभारत कविता विमर्शनमु' वेटूरि प्रभाकर शास्त्रीजीका 'शृंगार श्रीनाथमु' आदि ग्रन्थ हैं। साहित्यके इतिहासोंमें कन्दुकूरि वेंकट नारायणरावका 'संग्रह आन्ध्र-वाङ्मय चरित्रमु' खण्डवल्लि लक्ष्मीरञ्जनमका 'विजयनगर साम्राज्यका आन्ध्र वाङ्मयमु' गुरजाड सीतारामय्याका 'गद्यांधसाहित्यवीथुल' कस्तूरि वेंकट रमणय्याका 'दक्षिणान्ध्र कवित्व चरित्रमु' निडुदवोल वेंकटरावजीका 'दक्षिणान्ध्रकवुल चरित्र' उल्लेखनीय हैं। अनुसंधानात्मक ग्रन्थोंमें श्री वी. रामराजुका 'जानपद

वाङ्मयमु' श्री दिवाकर्ल वेंकटावधानीका 'नन्नयमु' श्री के वी रामकोटि शास्त्रीका 'तिक्कन कवित्व और वेदान्त' श्री के. वीरभद्ररावका 'आन्ध्र साहित्यपर जैनधर्मका प्रभाव' उल्लेख योग्य हैं। तेलुगु भाषाकी उत्पत्ति और विकासपर डॉ. चिलुकूरि नारायणराव डॉ. गंटि जोगिसोमयाजि कोराड रामकृष्णय्या वज्झल चिन सीताराम स्वामी शास्त्रीके ग्रन्थ श्रेष्ठ हैं किन्तु तेलुगुमें आलोचनात्मक साहित्य सर्जनात्मक साहित्यकी अपेक्षा बहुत कम है।

हैदराबादमें स्थित 'आन्ध्र सारस्वत परिषद्' ने भी कई अच्छे ग्रन्थोंका प्रकाशन किया है जिनमें सुरवरपु प्रताप रेड्डीका 'आन्ध्रोंका सामाजिक इतिहास' 'महाभारत-भागवतपर विभिन्न विद्वानोंके भाषण' 'आन्ध्र वाङ्मय चरित्र' प्रतिभाशालि सूर्यनारायण शास्त्रीजीका 'काव्यालंकार संग्रह विवरण' मुख्य हैं।

निबन्ध रचनामें पानुगण्टि लक्ष्मीनरसिंहरावके 'साक्षी' के छह भाग (जो एडिसनके स्पेक्टेटरके समान व्यंग्यात्मक एवं आलोचनात्मक हैं।) मुट्नूरि कृष्णारावजी (कृष्णा पत्रिकाके प्रसिद्ध सम्पादक) के विविध निबन्ध कोमर्राजु लक्ष्मणरावजीके 'लक्ष्मणराय निबन्धावलि' 'मल्लम्पल्लि सोमशेखर शर्माजीके ऐतिहासिक प्रधान लेख कोराड रामकृष्णय्याजीके भाषा और साहित्यपर लेख प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त 'भारती' 'आन्ध्र पत्रिका' आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओंमें समय-समयपर काफी अच्छे लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

इस प्रकार तेलुगु साहित्य गौरवकी परिमाणसे सम्पन्न विश्व-साहित्यके इतिहासमें अपने विशिष्ट स्थानका अधिकारी बना हुआ है।

• • •

काट्टूरि वेंकटेश्वरराव
और
पिंगलि लक्ष्मीकान्तम
[कवि-परिचय]

काटूरि वेंकटेश्वरराव
और
पिंगलि लक्ष्मीकान्तम

• • •

तेलुगु साहित्यके इतिहासमें दो कवियों द्वारा रचा गया काव्य प्रबोध-चन्द्रोदयमु है। यह पद्य-काव्य नन्दि मल्लय्य तथा घण्ट-सिंगन (१५वीं सदीका उत्तरार्ध) नामक दो कवियों द्वारा रचा गया। एक कवि एक चरण कहता तो दूसरा कवि दूसरा चरण—इस प्रकार समग्र काव्यकी रचना होती थी। इस कवियुग्मके बाद तेलुगु साहित्यके आधुनिक कालमें कई कवियुग्मोंके दर्शन होते हैं। इन कवियुग्मोंमें तिरुपति-वेंकट कवुलु, वेंकट-रामकृष्ण कवुलु, वेंकट-पार्वतीश्वर कवुलु, वेमूल पल्लि बन्धु आदिके नाम लिए जा सकते हैं। इस प्रकार दो कवियोंके मिलकर, एक कविके समान कविता करनेकी प्रथा शायद आन्ध्र प्रदेशमें ही प्रचलित है। यह बड़ी ही कठिन साधना है। काव्य-रचना ही नहीं अवधान* करते समय

---

* अवधान दो प्रकारके होते हैं अष्टावधान और शतावधान। शतावधान में सौ लोगोंको उनकी इच्छापर (विषय और वृत्त) संस्कृत और तेलुगुमें क्रमसे सौ आशु पद्योंके प्रथम चरण कहना और अन्तमें पूरे सौ पद्योंको फिर सुनाना पड़ता है। अष्टावधान में चार-पाँचको आशु कविता सुनाना, शास्त्र चर्चा या आकाश पुराण, घण्टियोंको गिनना, शतरंज आदि आठ कामोंमें चित्तको एक ही समय एकाग्र रखना पड़ता है। । १ ।

सैकड़ों दर्शकोंके समक्ष ८ या १०० पृच्छकोंकी उनकी इच्छानुसार विभिन्न विषयोंपर आशु कविता रचकर सभी पद्योंको क्रमसे सुना देता था यह कवियुग्म। इन कवियुग्मोंमें भी तिरुपति-वेंकट कवुल (दिवाकर्ल तिरुपति शास्त्री और चेळ्ळपिळ्ळ वेंकट शास्त्री) अति प्रसिद्ध हैं। आधुनिक तेलुगु कवियोंमें उनके बहुतसे प्रत्यक्ष शिष्य हैं तो कई परोक्ष। एक प्रकारसे आधुनिक-तेलुगु-काव्यसाहित्यके वे ऐसे सूर्य हैं जिनके प्रकाशमें नव चैतन्य फैल पड़ा।

इस कवियुग्मके लब्धप्रतिष्ठ शिष्योंमें पिंगलि-काटूरि-कवि हैं। एक श्री पिंगलि लक्ष्मीकान्तमजी हैं तो दूसरे काटूरि वेंकटेश्वरराव हैं।

श्रीकृष्णदेवरायलुके दरबारके सुप्रसिद्ध कवि पिंगलि सूरनके वंशज हैं लक्ष्मीकान्तमजी। लक्ष्मीकान्तजीका जन्म कृष्णा जिलेके चल्लपल्लि ताल्लुकेके आर्तमूरु नामक गाँवमें १ जनवरी सन् १८९४ को हुआ था। आपकी माताका नाम बुटुचम्मा तथा पिताका नाम श्री वेंकटरत्नम है।

वेंकटेश्वररावजीका जन्म कृष्णा जिलेके काटूर नामक ग्राममें १५ अक्तूबर १८९५ को हुआ था। आप श्री वेंकटकृष्णय्याके पुत्र थे पर अपने छोटे दादाको गोद दिए गए थे। यहाँ आप दत्तक दिए गए थे उन दत्तकके नाम (माता-पिता) रुद्रम्मा और कोण्डय्या थे।

लक्ष्मीकान्तमजीके पिता चल्लपल्लि जमींदारीके ग्रामपालकों में गाँवके मुखिया बन जीवनयापन करते थे। लक्ष्मीकान्तमजीने मैट्रिक तक मछलीपट्टणम् के हिन्दू हाईस्कूलमें और एफ. ए (इण्टर) और बी. ए वहींके नोबल कालेजसे किया। १९०९में जब आप ८वीं कक्षामें पढ़ रहे थे तब तिरुपति-वेंकट कवियोंने मछलीपट्टणम्में शतावधान किया। उसे देखते ही लक्ष्मीकान्तमजीमें कविता करनेकी इच्छा पैदा हुई। उसके बाद वेंकट शास्त्रीजीसे आशीर्वाद प्राप्तकर आप लगभग तीन वर्ष तक गुरुजीके यहाँ रहे। वहाँ आपने संस्कृत और आन्ध्र भाषाओंका अच्छा अध्ययन किया।

सन् १९१९ में बी ए पास करनेके बाद आपकी नियुक्ति नोबिल पाठशालामें आन्ध्र भाषाके अध्यापकके पदपर हुई थी। चार वर्षके बाद आप उसी कालेजमें प्राध्यापक बने। पुनः चार वर्ष बाद आप मद्रास विश्वविद्यालयके रिसर्च फेलो बने। तीन सालके बाद तंजाऊरके सरस्वती महल-पुस्तकालयमें बैठकर आपने कई प्राचीन ताड़-पत्र ग्रन्थोंका अध्ययन किया। आपने १९३ मे मद्रास विश्वविद्यालयसे एम ए की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९११ में आप आन्ध्र विश्वविद्यालयके तेलुगु विभागके आचार्यके पदपर नियुक्त हुए। वहाँसे अवकाश ग्रहण करनेके पश्चात् छह-सात वर्ष आप आकाशवाणीके विजयवाड़ा केन्द्रमें संस्कृत विभागके निरीक्षक रहे। आजकल आप तिरुपतिके वेंकटेश्वर वि॰विद्यालयमें तेलुगु विभागके अध्यक्ष एवं प्रोफेसरके पदपर हैं। ६८ वें वर्षमें इस पदपर नियुक्त होना आपकी विद्वत्ता और योग्यताका ज्वलन्त प्रमाण है। आप केन्द्रीय-साहित्य-अकादमीके भी सदस्य हैं।

तञ्जाऊरमें प्राप्त 'द्विपद-भारत' का आपने सुष्ठु सम्पादन किया और उक्त ग्रन्थको अपनी एक विद्वत्तापूर्ण भूमिकाके साथ आन्ध्र विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित करवाया है। श्री वेटूरि प्रभाकर शास्त्री द्वारा सम्पादित 'रंगनाथ रामायणमु' के लिए लिखी भूमिका लक्ष्मीकान्तमजीकी विद्वत्ताका प्रदर्शन करनेवाली है। 'मधुर पण्डित राज्यमु' इनकी एक सुन्दर कृति है। जिसमें पण्डितराज जगन्नाथके सुन्दर श्लोकोंका सरल व सरस अनुवाद प्रस्तुत किया है। 'गौतमी व्यासमुलु' आपके साहित्यिक एवं आलोचनात्मक समीक्षा संग्रह है। इसके अतिरिक्त आपने कई पुस्तकोंके लिए भूमिकाएँ लिखीं और विविध पत्र-पत्रिकाओंमें समय-समयपर कई पाण्डित्यपूर्ण लेख भी लिखे हैं। आकाशवाणीमें रहते समय आपने संस्कृतके समग्र सभी नाटकोंके रेडियो रूपक प्रसारित किए हैं। युवावस्थामें सफल अभिनेताके रूपमें भी आप प्रसिद्ध थे।

वेंकटेश्वरशास्त्रीके पूर्वजोंके घरका नाम 'कल्लपटु' था पर जबसे वे 'कादूर' में आकर बस गए, तबसे 'कादूरि' कहलाए। बचपनमें ही आपको आपके छोटे दादाने गोद ले लिया था। आपकी प्रारम्भिक पढ़ाई तो कादूरमें ही हुई। ८ वीं कक्षा तक पुलिवाड़ामें पढ़कर, वहाँसे आप मछलीपट्टणम् पहुँचे। वहाँ आपको लक्ष्मीकान्तमजीकी अच्छी संगति प्राप्त हुई और वेङ्कटपिङ्कळ वेंकटशास्त्रीकी सेवाका सुअवसर प्राप्त हुआ।

स्वयं कविके शब्दोंमें सुनिए —

पिंगळि काटूरि सुकवि तो
संगातम्मु वेङ्कटपिङ्कळसद्गुरुकृप न
मुं महिमायुगि माकि
बें गीर्वाण पद्यरचन वेलुगु जगत्स्तम्।

[सुकवि पिंगळि लक्ष्मीकान्तकी संगति और गुरुवर वेङ्कटपिङ्कळ वेंकटशास्त्रीजीकी कृपाने ही मुझे कवि बनाया है। इसीके परिणामस्वरूप कुछ कविता करके मैं अपनी बुद्धिकी चपलता ही दरसाता हूँ।]

आप सन् ३९ से ४१ तक मछलीपट्टणम् स्थित नगरम् हाईस्कूलके प्रिन्सिपाल रहे। उसके बाद आपने आन्ध्रकी प्रसिद्ध साप्ताहिक 'कृष्णा पत्रिका' के सम्पादनका भार सम्हाला। सन् ४२ तक सफलतापूर्वक उस कार्यको निभाया।

लक्ष्मीकान्तमजी और वेङ्कटेश्वररावजी एक कवियुगलके शिष्य हैं जिन्होंने अपने काव्यको किसी एकके लिखनेपर भी उसे 'तिरुपति-वेंकटीय' ही माना है उसी परम्पराके अनुकूल इन्हें भी 'लक्ष्मीकान्त-वेंकटेश्वर कवि' या 'पिंगळि-काटूरि कवि' होना चाहिए था। पर प्राचीन सम्प्रदायके अनुरूप कुछ काव्य तो इन दोनों कवियोंने मिलकर लिखे हैं। उनपर नाम तो अलग-अलग ही लिखे गए हैं। तोलकरि 'सुन्दर संग्रह' 'सौन्दरनन्दमु' आदि काव्य दोनोंने मिलकर लिखे हैं और कुछ काव्य

सैकड़ों दर्शकोंके समक्ष ५ या १०० पृच्छकोंको उनकी इच्छापर विभिन्न विषयोंपर आशु कविता रचकर सभी पद्योंको क्रमसे सुना देना था यह कवियुग्म। इस कवियुग्ममें श्री तिरुपति-वेंकट कवुल (दिवाकर्ल तिरुपति शास्त्री और चेळ्ळपिळ्ळ वेंकट शास्त्री) अति प्रसिद्ध हैं। आधुनिक तेलुगु कवियोंमें उनके बहुतसे प्रत्यक्ष शिष्य हैं तो कई परोक्ष। एक प्रकारसे आधुनिक-तेलुगु काव्यसाहित्यके वे ऐसे सूर्य हैं जिनके प्रकाशमें नव चैतन्य फैल पड़ा।

इस कवियुग्मके लब्धप्रतिष्ठ शिष्योंमें पिंगलि-काटूरि-कवि हैं। एक श्री पिंगलि लक्ष्मीकान्तमजी हैं तो दूसरे काटूरि वेंकटेश्वरराव हैं।

श्रीकृष्णदेवरायलके दरबारके सुप्रसिद्ध कवि पिंगलि सूरनके वंशज हैं लक्ष्मीकान्तमजी। लक्ष्मीकान्तजीका जन्म कृष्णा जिलेके चल्लपल्लि तालुकेके आर्तमूरु नामक गाँवमें १ जनवरी सन् १८९४ को हुआ था। आपकी माताका नाम कुटुम्बम्मा तथा पिताका नाम श्री वेंकटरत्नम है।

वेंकटेश्वररावजीका जन्म कृष्णा जिलेके काटूर नामक ग्राममें १५ अक्टूबर १८९५ को हुआ था। आप श्री वेंकटकृष्णय्याके पुत्र थे पर अपने छोटे दादाको गोद दिए गए थे। यहाँ आप दत्तक दिए गए थे उन दत्तकके नाम (माता-पिता) अक्कम्मा और कोण्डय्या थे।

लक्ष्मीकान्तमजीके पिता चल्लपल्लि जमींदारीके आमुदार्लंका में गाँवके मुखिया बन जीवनयापन करते थे। लक्ष्मीकान्तमजीने मैट्रिक तक मछलीपट्टनम् के हिन्दू हाइस्कूलमें और एफ. ए (इन्टर) और बी ए वहींके नोबल कालेजसे किया। १९०९में जब आप ८वीं कक्षामें पढ़ रहे थे तब तिरुपति-वेंकट कवियोंने मछलीपट्टनममें शतावधान किया। उसे देखते ही लक्ष्मीकान्तमजीमें कविता करनेकी इच्छा पैदा हुई। उसके बाद वेंकट शास्त्रीजीसे आशीर्वाद प्राप्तकर आप लगभग तीन वर्ष तक गुरुजीके यहाँ रहे। वहाँ आपने संस्कृत और आन्ध्र भाषाओंका अच्छा अध्ययन किया।

सन् १९१९ में बी ए पास करनेके बाद आपकी नियुक्ति नोबिल पाठशालामें आन्ध्र भाषाके अध्यापकके पदपर हुई थी। चार वर्षके बाद आप उसी कालेजमें प्राध्यापक बने। पुनः चार वर्ष बाद आप मद्रास विश्वविद्यालयके रिसर्च फेलो बने। तीन सालके बाद तन्जाऊरके सरस्वती महल-पुस्तकालयमें बैठकर आपने कई प्राचीन ताल-पत्र ग्रन्थोंका अध्ययन किया। आपने १९३० में मद्रास विश्वविद्यालयसे एम ए की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९३१ में आप आन्ध्र विश्वविद्यालयके तेलुगु विभागके आचार्यके पदपर नियुक्त हुए। वहाँसे अवकाश ग्रहण करनेके पश्चात् छह-सात वर्ष आप आकाशवाणीके विजयवाड़ा केन्द्रमें संस्कृत विभागके निरीक्षक रहे। आजकल आप तिरुपतिके वेंकटेश्वर विश्वविद्यालयमें तेलुगु विभागके अध्यक्ष एवं प्रोफेसरके पदपर हैं। ६८ वें वर्षमें इस पदपर नियुक्त होना आपकी विद्वत्ता और योग्यताका ज्वलन्त प्रमाण है। आप केन्द्रीय-साहित्य-अकादमीके भी सदस्य हैं।

तञ्जाऊरमें प्राप्त 'द्विपद-भारत' का आपने सुष्ठु सम्पादन किया और उक्त ग्रन्थको अपनी एक विद्वत्तापूर्ण भूमिकाके साथ आन्ध्र विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित करवाया है। श्री वेटूरि प्रभाकर शास्त्री द्वारा सम्पादित रंगनाथ रामायणम् के लिए लिखी भूमिका स्वर्गं कान्तमजीकी विद्वत्ताका प्रदर्शन करनेवाली है। 'मधुर पण्डित राज्यम्' इनकी एक सुन्दर कृति है। जिसमें पण्डितराज जगन्नाथके सुन्दर श्लोकोंका सरल व सरस अनुवाद प्रस्तुत किया है। गौतमी व्यासमुलु आपके साहित्यिक एवं आलोचनात्मक लेखोंका संग्रह है। इसके अतिरिक्त आपने कई पुस्तकोंके लिए भूमिकाएँ लिखी और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओंमें समय-समयपर कई पाण्डित्यपूर्ण लेख भी लिखे हैं। आकाशवाणीमें रहते समय आपने संस्कृतके लगभग सभी नाटकोंके रेडियो रूपक प्रसारित किए हैं। युवावस्थामें उत्कृष्ट अभिनेताके रूपमें भी आप प्रसिद्ध थे।

वेंकटेश्वररावके पूर्वजोंके घरका नाम ब्रह्मभट्ल था पर जबसे वे काटूर में आकर बस गए, तबसे काटूरि कहलाए। बचपनमें ही आपको आपके ताऊ रामय्याने गोद ले लिया था। आपकी प्रारम्भिक पढ़ाई तो काटूरमें ही हुई। बादमें कृष्णा तक गुडिवाडामें पढ़कर, वहाँसे आप मछलीपट्टणम् पहुँचे। वहाँ आपको लक्ष्मीकान्तमजीकी अच्छी संगति प्राप्त हुई और चेल्लपिल्ल वेंकटशास्त्रीकी सेवाका सुअवसर प्राप्त हुआ।

स्वयं कविके शब्दोंमें सुनिए —

> पिंगळि का ? सुकवि तो
> संगमम्मु, चेल्लपिळ्ळवरगुरुकृप न
> न्नुं गविगा नुनि चाले
> नें जौकोक पद्यरचन चेतु वलननम्॥

[सुकवि पिंगळि लक्ष्मीकान्तकी संगति और गुरुवर चेल्लपिल्ल वेंकटशास्त्रीजीकी कृपाने ही मुझे कवि बनाया है। इसीके परिणामस्वरूप कुछ कविता करके मैं अपनी बुद्धिकी चपलता ही दरसाता हूँ।]

आप सन् १९ से ४२ तक मछलीपट्टणम् स्थित नेशनल कालेजके प्रिन्सिपाल बन रहे। उसके बाद आपने आन्ध्रकी प्रसिद्ध साप्ताहिक कृष्णा पत्रिका के सम्पादनका भार सम्हाला। सन् ४२ तक सफलतापूर्वक उस कार्यको निभाया।

लक्ष्मीकान्तमजी और वेंकटेश्वररावजी एक कवियुग्मके शिष्य हैं जिन्होंने अपने काव्यको किसी एकके लिखनेपर भी उसे तिरुपति-वेंकटीय ही माना है इसी परम्पराके अनुरूप इन्हें भी लक्ष्मीकान्त-वेंकटेश्वर कवि या पिंगलि-काटूरि कवि होना चाहिए था। पर प्राचीन सम्प्रदायके अनुरूप कुछ काव्य तो इन दोनों कवियोंने मिलकर लिखे हैं। उनपर नाम तो अलग-अलग ही लिखे गए हैं। तोलकरि, मुक्तक-संग्रह सौन्दरनन्दमु आदि काव्य दोनोंने मिलकर लिखे हैं और कुछ काव्य

और रचनाएँ अलग-अलग लिखी हैं। आपने अपनी रचनाओंमें परम्परा और गुरुओंपर श्रद्धा भावके साथ अपने व्यक्तित्वको भी कायम रखा है। प्रस्तुत निबन्ध भी काटूरि वेंकटेश्वररावजीपर ही लिखना है फिर भी लक्ष्मीकान्तमजीके बिना वेंकटेश्वररावका पूर्ण परिचय नहीं दिया जा सकता। अतः दोनोंका परिचय और दोनोंके काव्यों (वेंकट स्वररावजीकी रचनाओंके अतिरिक्त) से उद्धरण दिए गए हैं। इन दोनों कवियोंके संगमने कालान्तरमें सम्बन्धका रूप धारण किया है। काटूरिजी की बहनकी लड़की पिंगलिके सालेकी पत्नी है। पर इस सम्बन्धकी अपेक्षा उनका साहित्यिक संगम प्रगाढ़ है।

ऊँचा कद आजानु बाहु गोरा शरीर, गम्भीर चेहरा धारदार नाक घनी सफेद मूँछें मोटे चश्मा चश्मा घनी भौंहें छोटे-छोटे केशोंसे युक्त लम्बा सिर, हाथमें छड़ी बनी छड़ी पाँवोंमें चप्पल ... कुर्ता कन्धेपर काश्मीरी शाल या जरीदार ... उत्तरीय मुँहमें ... लम्बा-पतला चुरुट— संक्षेपमें यह काटूरिजीके बाह्य स्वरूप एवं उनकी वेशभूषाका वर्णन है।

—(के० राधाकृष्णमूर्ति)

२०वीं शतीके प्रारम्भमें मछलीपट्टणम् आन्ध्रकी साहित्यिक एवं राजनैतिक चेतनाका केन्द्र बना हुआ था। उस पट्टणमें ... मुट्नूरि कृष्णाराव वेंकट शास्त्री जैसे प्रसिद्ध व्यक्ति उसी नगरमें रहा करते थे। वहींपर काटूरिजी के जीवनका अत्यधिक भाग बीता। आपका जन्म चूँकि धनी परिवारमें हुआ था अतः आपके सामने आर्थिक समस्या कभी नहीं रही। असहयोग-आन्दोलनमें भाग लेनेके कारण आपने पढ़ाई छोड़ दी। सन् १९२१ के सत्याग्रहमें पकड़े ... गए। आपकी रचनाओंपर गाँधीवादका प्रभाव है। राजनीतिके बाद साहित्य जगत ही उनका सर्वस्व बन गया। 'कृष्णा' पत्रिकाका सम्पादन करते समय आन्ध्र प्रदेशके कई नगरोंमें साहित्यिक भाषण देकर आपने अपनी विद्वत्ता एवं प्रभावशाली भाषासे लोगोंको मुग्ध कर लिया था। १९५२ में नव साहित्य परिषदके तेनालीके अधिवेशनमें सभा-पतिके पदसे काटूरिजीने जो भाषण दिया उसका साहित्यमें एक विशिष्ट स्थान है।

रचनाओंके परिमाणकी दृष्टिसे काटूरिजी की कविताओंकी संख्या अधिक नहीं है। पर आपने जो कुछ भी लिखा उसने साहित्यमें अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है। काटूरिजीकी अपनी लिखी कृतियाँ पौलस्त्य हृदयमु गुडिपण्टलु (मन्दिरकी घण्टियाँ) 'मावूळ्ळु, मा ऊरु' (मेरे लोग मेरा गाँव) हैं। इनके अतिरिक्त समय-समयपर पत्रिकाओंमें प्रकाशित कविताएँ हैं। पिंगलि-काटूरि कवियुगके नामपर १९२१ में ताळकरि (प्रभात वर्षाके दिन) नामक कविता-संग्रह प्रकाशित हुआ। आन्ध्र साहित्यमें इस कवियुगको अमरकीर्ति देनेवाला काव्य सौन्दरनन्दम् है जिसका प्रकाशन सन् १९३४ में हुआ था। यह काव्य श्री वेंकटशास्त्रीकी षष्ठि-पूर्तिके समारोहके समय गुरु-दक्षिणाके रूपमें उनके चरणकमलोंमें समर्पित किया गया था। मछलीपट्टणम्के नागरिकोंके जीवनमें तिरुपति-वेंकट कवियोंके प्रति श्रद्धा-भक्तिसे

प्रदित लोगों द्वारा सम्पन्न यह समारोह आन्ध्र साहित्यके इतिहासमें ही एक रमणीय एवं अविस्मरणीय घटना है। इस समारोहमें कई कविशिष्योंने काव्यके उपहारोंके रूपमें अपनी गुरु-दक्षिणा चुकाकर अपनको धन्य माना। इस प्रकार समर्पित सौन्दर नन्दमु तेलुगु-शारदाकी सेवामें प्रस्तुत अपूर्व कुसुम है —

पुडमिरेडुगु तलवडपुल नोर्पग
नडिचु काव्य नंदुवाड
अत्यद्भुतंबैन अवधानविद्यनु
उभयकारत्वमेन प्रतिभवाडु
वीनुलोविंदि [illegible] सोमनु वलिकु
बाल्यमाधुरिति वोड बलिकवाडु,
चिननाडे पलडि वरियेन कविताकन्य
नेक पत्निग नोसि पेमुवाडु
पूर्णकामुं स्वामियु योगियैन
गुरुनि कष्णनीयुपोंडेनी चिरत कन्य
मईत नडिपुकोनुपाक सत्प्रवाणि
नन्नपुल कोलोनु प्रसादलमपस्वाभिर।

[चरणोंमें नत राजाओंके सादर समर्पित भेंटको स्वीकार करनेवाले
अवधान नामक आशुकविता-पाठका क्रम प्रचलित करनेवाले
कानोंमें मधु बरसानेवाले वाङ्माधुर्यके लिए प्रसिद्ध
बचपनमें ही वरण कर ज्ञानवाली कविता-कन्यापर एक-पत्नी सम शासन करनेवाले
पूर्ण काम स्वामी और योगी जो हमारे गुरु हैं,
उनके ऋणसे उऋण होनेके लिए यह छोटा-सा काव्य आन्ध्र-सरस्वतीके नयन-कोरोंका प्रसाद प्राप्तकर पावन बने।]

पौलस्त्य हृदय   तुहिनाश्रु   मेरे लोग मेरा गाँव इन तीन कविताओंको एक संग्रहके रूपमें प्रकाशित किया गया है। इस काव्य-संग्रहको कविने अपने बड़े भाई स्वर्गवासी रामकृष्णस्वामीकी दिव्य स्मृतिमें समर्पित किया है। घर-गृहस्थी बाल-बच्चे पत्नी-भाई किसी पर ध्यान दिए बिना घुमक्कड़ बन घूमते रहनेवाले इस छोटे भाईका बड़े भाईने बिना किसी शिकायतके लालन-पालन किया था।

नेनु शीर्षक प्रथम कवितामें कविने बड़ी विनम्रताके साथ अपना परिचय दिया है। इन पंक्तियोंको पढ़नेसे कविकी नम्रताका ही नहीं अपितु सहृदयता एवं ईमानदारीका भी पता चलता है।

'मेरे लोग मेरा गाँव' शीर्षक कवितामें पिंगु स्वामी मुक्त होनेके लिए, कादूरिर्वीन अपने वंशका और अपने ग्रामका हृदयंगम वर्णन किया है। उन्होंने कहा है—

अप्रयत्नम्मुगा नाकु नब्बिनट्टि
कवनलेशम्मु वंशकवनमुन नु
सार्थमगु जेयु नहान वलपुलो पि
पुनमारम्मवेनु पूर्तिविवेकि।'

[सहज ही में प्राप्त थोड़ी-सी कविता करनेकी सामर्थ्यको अपने वंशकथनसे कृतार्थ बनाना चाहा। यह भी आशा कि इससे पिंगु स्वामी उऋण हो सकूँगा।]

इस प्रकार इस कविताके अन्तर्गत कविने अपने परिवार और अपने बन्धु बान्धवोंका काव्यमय परिचय दिया है। कादूर ग्राममें आनेसे पहले इनके घरका नाम* कमलपटु था। कादूरमें आकर मुधिर्वीके राजाके आदेशानुसार उस गाँवमें पटवारीके पदका निर्वाह करते रहे, तबसे 'कादूरि' कहलाए। इस कवितामें गाँवके परिवारवालोंकी आपसी मित्रता सौजन्यता और सौहार्दका सुन्दर वर्णन किया है। यह वर्णन न केवल उनके परिवार तक सीमित है, अपितु पाश्चात्य सभ्यताके सम्पर्कमें न आनेवाले प्रत्येक भारतीय आदर्श परिवारके लिए लागू होता है।

प्रस्तुत कवितामें ध्यान बचपन मानते हुए भी हृदयमें उमड़नेवाली वेदनाके मारे गाँवकी प्राचीन तथा सम्प्रदाय प्रथाएँ और वर्तमान परिस्थितियोंका प्रभावशाली चित्रण किया है। इस कवितामें प्राचीन गाँवोंकी सम्पन्नता सम्मिलित प्रयास परस्परके सौमनस्यके साथ वर्तमान अवनति स्वार्थपरायणताका हृदयद्रावक वर्णन किया गया है। कविके पूर्वज आन्ध्र साहित्यमें 'प्रबन्धपरमेश्वर' और 'शम्भुदास' के नामसे प्रसिद्ध एर्रन के वंशज थे। ये लोग पहले चदलवाडा में रहते थे वहाँ से कमलपटु और फिर कादूर पहुँच गए। यह गाँव पहले बहुत गरीब दशामें था। लेकिन अंग्रेज शासकोंके कृष्णा नदीपर (विजयवाड़ाके पास) बाँधका निर्माण करते ही उस प्रान्तकी कायापलट हो गई। भूमि उपजाऊ बनी और सोना उगलने लगी। कृष्णाकी नहरोंसे पानी कादूर तक पहुँचा। इस तरहसे मानों किसानोंका पुण्य प्रवाह ही नहरोंसे होकर बहने लगा हो। फलतः कादूर अब लक्ष्मीका निवास बन गया। इस गाँवके सभी कुटुम्बके मिलजुलकर रहते और गाँवकी उन्नतिमें बिना किसी मदभावके हाथ बँटाते। कविने प्रातःकालमें नींदसे जागनेवाले गाँवका बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। चारों वर्णोंके लोग आपसमें एक परिवारके लोगों-जैसा बर्ताव करते। सचमुच यह देखकर आश्चर्य होता है कि उस समयकी और आजकी परिस्थितियोंमें कितना अन्तर आ गया है।

*आन्ध्रमें प्रत्येक परिवारका अपना एक वंश नाम होता है, जिसे 'घरका नाम' (Surname) कहते हैं। प्रत्येक व्यक्तिके नामके पहले वंशका नाम जोड़नेकी प्रथा है।

पल्ले कनुगुल माधुर्यमेल्ल विरिगि
पंचकोसल्याय मुष्पतिल्लल ?

[ग्रामीण जीवनका यह सारा माधुर्य बिगड़ गया और हाय ! यह पञ्चमात-न्याय कहाँसे टपक पड़ा ?]

उस समयके लोग पाप कर्म न करते रहे हों ऐसी बात नहीं है, पर उस पापको तरह-तरहके सिद्धान्तोंकी आड़में छिपाना या उसीको पुण्य कर्म सिद्ध करना उन्हें न आता था। भारतीय ग्रामीण जीवनके आदर्श ही क्रमशः अवनत होते गए—इसे देखकर कविका हृदय व्यथित हो उठा और उन सुखमय दिनोंका स्मरण कर कविका कोमल हृदय द्रवित हो उठा।

इस प्रकार कवितामें पारिवारिक जीवनकी गरिमा भारतीय जीवनके आदर्श और विशेष रूपसे आन्ध्रके ग्रामीण और पारिवारिक जीवनका प्रभावशाली वर्णन किया गया है।

इस तथ्यमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि श्रीरामचन्द्र आन्ध्र जातिके प्रियतम भगवान हैं और उनकी गाथा परमप्रिय रही है। क्या साहित्यमें क्या दैनिक जीवनमें—जहाँ सुनिए, वहीं यह पवित्र नाम प्रतिध्वनित होता सुनाई पड़ता। राम चन्द्रजीने वनवासके चौदह वर्षोंकी अवधिका अधिकांश भाग आन्ध्र प्रदेशमें दण्डकारण्य और गोदावरीके किनारोंपर ही बिताया था। उस पावन-स्मृतिको जागृत करनेवाले अनेक स्थान और चिह्न आन्ध्र देशमें यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होते हैं। मर्यादा-पुरुषोत्तमकी पुनीत गाथा प्राचीनकालसे महानुभावोंने आन्ध्र-साहित्य भरा पड़ा है। कट्टूरिजीने भी रामकी गाथाको एक नए रूपमें गाया है।

पाश्चात्य प्रभावके कारण हमारे देशके कई मनीषियोंने पौराणिक गाथाओं-को नए रूपमें देखने और चित्रित करनेका प्रयास किया है। इनमें बंगालके माइकेल मधुसूदन दत्तका नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। पर इन लेखकोंने भारतीय संस्कृतिकी विचार-धाराके विरुद्ध कुछ कल्पनाएँ की हैं कुछ काव्य रचे हैं पर कट्टूरिजीके रावणका चरित्र भारतीय विचारधाराके अनुकूल ही है। रावणके पिता पुलस्त्य परम निष्ठावान और ज्ञानी थे। वे तो साक्षात् ब्रह्मा थे। ऐसे पुलस्त्यका पुत्र है रावण। उसका हृदय अपने पिताके आत्मज्ञानसे प्रदीप्त था। कविने 'पौलस्त्य हृदय' नाम रखकर ही काव्यके इस पहलूपर पाठकोंकी दृष्टि आकर्षित की है।

रावण विष्णु भगवानके उन परमभक्तोंमेंसे था जो वैरभावसे तीन जन्मोंमें ही भगवानके सान्निध्यकी प्राप्तिका उत्कट अभिलाषी था। पुराणोंके अनुसार रावणके जन्मका वृत्तान्त इस प्रकार है। सनत्सनन्दन आदि महर्षि एक बार भगवानके दर्शन करने वैकुण्ठ पहुँचे तो जय-विजय नामक द्वारपालोंने उन्हें अन्दर जानेसे रोका। ऋषियोंने क्रुद्ध होकर शाप दिया कि तुम दोनों पृथ्वीपर जन्म लो। जय-विजय उनसे गिड़गिड़ाने लगे इतनेमें भगवान भी आए। तब ऋषियोंने शाप विमोचनका

मार्ग बतलाया। भक्त बनकर सौ जन्मोंमें या विरोधी बनकर तीन जन्मोंमें वैकुण्ठको वापस आ सकते हो। भगवत्-सान्निध्यमें विलम्बको न सह सकनेके कारण उन भक्तोंने तीन ही जन्मोंमें अर्थात् विरोधी बनकर ही लौट आनेकी इच्छा प्रकट की। प्रथम जन्ममें वे हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु बन और दूसरे जन्ममें रावण और कुम्भकर्ण और तृतीय जन्ममें शिशुपाल और दन्तवक्र। उन्हें तो भगवानके हाथों मरना था। और भगवान निरपराधियोंको मारते कैसे? अतः उन्होंने खूब जी खोलकर पाप किए, जिससे स्वयं भगवानको वैकुण्ठ छोड़कर पृथ्वीपर अवतार लेकर उन्हें मारना पड़ा।

इस दृष्टिकोणसे काट्टूरि वेंकटेश्वररावजीकी रचनाओंमें रावणके चरित्रका बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया गया है।

सन्द्र (समुद्र) द्वारा रामचन्द्रजीके आगमनकी बात सुनकर रावण प्रसन्न होकर कहता है—"कितने दिनोंके बाद उस रावणकी गुफापर कृपा हुई? बीसों आँखें रहनेका फल कितने दिनोंके बाद मिला?" अन्तमें वह कहता है—

पौलस्त्युडु, सिरिकैवेल्पु
कलिमिच्चेलि वक्षम्मु चन्द्रहार
वारितमोमिंचि आ मंदुवारिकैट
हृदयमुन् जोच्चि येकान्तमिच्चगिंचि
स्वागतमु पल्कुनिति विन्नपमुसल्पु
मकराने पुनर्दर्शनमगुत चालु।

[लक्ष्मीके निवासस्थान विष्णुके वक्षस्थलको चन्द्रहारसे छूकर, उस झरोखेसे हृदयमें प्रवेशकर, वहाँ भगवानसे एकान्त प्राप्त करनेका इच्छुक है यह पौलस्त्य। और वहीं उनका स्वागत करेगा। यह मेरी विनती जाकर सुना दो। वहीं फिर मिलन होगा।]

भीषण वैरको अपनानेवाले रावणका ऐसा हृदयग्राही चित्रण किसी रामायण कारने नहीं किया है। पौलस्त्य हृदय की यह कविता नवीन कल्पनाका उज्ज्वल उदाहरण है।

कलियुगी वैकुण्ठ माने गए तिरुपतिकी पर्वत श्रेणियोंपर विलसित वेंकटेश्वर (बालाजी) के प्रति आन्ध्र जनताके भक्ति पारावारकी कोई सीमा नहीं। उन सातों पहाड़ोंपर पैदल चलनेवाले घुटनोंके बल चढ़नेवाले भगवानके सामने लोटते हुए प्रदक्षिणा करनेवाले सर्वस्व समर्पण करनेवाले (उफ्, उस दृश्यको देखकर हृदय और शरीर दोनों पुलकित हो जाते हैं!) भक्तजनकी पुकारको सुन दौड़ पड़नेवाले उस भगवानके दर्शनार्थ अत्यन्त भक्तिभावसे वहाँ जाते हैं। गुडिगंटलु (मन्दिरकी घण्टियाँ) नामक कवितामें कविने भी वेंकटेश्वरके प्रति अपने हृदयोद्गार इस प्रकार प्रकट किए हैं—

नमस पुष्पांजलुलु,
नाविगुळम्मुल विन्नपम्मुलिडिन्

पोंगितमाममानसगुहैयिल
पंगवीपिकोवमसू,
सागरकन्यका हृदयसारस
मटपवगीतिकावमुल
पोंगुडिमह सम्बुद्धुनिमि
पेसगे पमुद्धलोकमुल ।

[आपके मन्दिरकी घण्टियोंकी ध्वनियाँ जो विश्वसृष्टिकी नाँदी रूप निगमोंके मूलमन्त्रोंके समान योगी समाजके मानसरूपी गुफाओंमें उदित मंगल दीपोंकी कान्तियोंके समान, सागर-कन्या (लक्ष्मी) के हृदयरूपी सारस (कमल) के भ्रमरके मधुगुञ्जारके समान हैं। वे आकाशमें फैल रही हैं, जिससे सारे लोक प्रबुद्ध (जागृत) हो रहे हैं।]

नीपावम्मुलु मोमुलनिल्पुचु,
मीपाटले पाडुचुन्
रेपुन्मापुनु नन्निकोलुचु
मीपेर मांपन्दिलो
दीपंबेत्तुचु मटिकोपिकल्पुरियि,
मेषु मी कोंडपै
वच्चु चूडग वच्चिनाम वरदार्पुल
मोमु चूपिम्पवे ।

[तुम्हारे चरण-कमलोंको ही सिर-आँखों लगा तुम्हारे गीत ही गाते हुए, शाम-सबेरे तुम्हारा ही स्मरण करते हुए, तुम्हारे नामपर घरमें दीप जलाते हुए, तुम्हारी विनती करते रहते हैं। आज स पहाड़ी पर्वतपर चढ़ तुम्हारे दर्शनके लिए आए हैं। हमें अपनी मोहनी मूरत दिखा दो ना!]

अन्तमें कवि कहते हैं —

कसवून् जिम्मेद मीद जिम्मेदन
मीसन्यापयोद्दान ना
नसमु चेसेद नद्दियलविसु,
पिजल मोव्ढुनी पिसन्
कुसुमार्चमुल वाडि मीसिन्देद,
मट्टलु चीमुखुन् चीवनम्
पिसरन् आवमुलोल नाकिडवे
तंडी जन्मजन्माल्तुन् ।

[झाड़ दूँगा पानी छिड़क दूँगा। तुम्हारे कल्याण मन्दिरमें यावज्जीवन काम करूँगा लकड़ियाँ तोड़ दूँगा। ठीक तौरसे धान कूट दूँगा। दूध जैसे चावल पकाकर तुम्हें खिलाऊँगा। तुम्हारे पूठ चरनन मीज दूँगा। तुमपर पंखा झलता रहूँगा। हे स्वामी! जन्म-जन्मोंमें पैर दाबने और सेवा करनेके ऐसे अवसर दो।]

भगवानकी प्रार्थना करते हुए वे उनसे विनती करते हैं कि हरिजनों की पुकारको भी सुनिएगा। हे स्वामी ! अब तुम्हारा इन दीनोंपर ध्यान देना उचित है —

एन्नेंड्लायेनो कोंडपै वेलसि
सामी ! नीवु, नित्यम्मु ना
पमुलु बलुक, नीवुनित्तुवु पदा
भयम्मु; कौगिलि इ
म्मरी वाकिलि ग्रोविक यी हरिजनुल्
कैसाचिरे ? नीवले
विमबुल्लुड वोलड वेलुपुल
किस्सी बभेपी कालियो !

[हे स्वामी ! कितने वर्ष हो गए तुम्हें इस पर्वतपर अवतरित हुए ! रोज ही भावुक तुम्हारे समीप आते हैं और तुम उनका कल्याण करते हो। आज तक इन हरिजनोंने क्या कभी तुम्हारी देहली पारकर हाथ पसारा है ? इतने बड़े देवता हो उन्हें निराश करना तुम्हें कहाँ तक शोभा देता है ?]

प्रगतिवादी कवितामें कवि पद दलित जनताकी वकालत करता है। जो जोश खरोश वर्ग-विषमताकी निन्दाके स्वर सुनाई पड़ते हैं वह इस गांधीवादी कविकी रचनामें नहीं। गांधीवादका प्रगति-मार्ग तो अहिंसापर आधारित है। कवि हरिजनोंके उद्धारके लिए भगवानकी करुणा और कृपाभावकी ही याचना करते हैं।

अब नल्लीकाल्व और वेंकटेश्वरराववाँ द्वारा सम्मिलित रूपसे लिखे हुए काव्योंपर एक दृष्टि डालें तो समुचित होगा।

दोनों कवियोंके नामपर तोलकरि (प्रथम वर्षाके दिन) नामक ग्रन्थ सन् १९२१ में प्रकाशित हुआ है। यह विभिन्न विषयोंपर समय-समयपर लिखी हुई फुटकर कविताओंका संग्रह है। इस काव्य-संग्रहकी भूमिका आन्ध्रके प्रसिद्ध समालोचक और आन्ध्र विश्वविद्यालयके उपकुलपति सर सर. सी आर. रेड्डीने लिखी है। उन्होंने लिखा है —

"यह पुस्तक अनेक कविताओंसे विकसित सुकुमार पुष्पमञ्जरीके समान है। प्रत्येक कविताका रस सौरभ आकार-विन्यास वर्णन-शैली अनुपम और असाधारण है। प्रत्येक कविताकी शैली भी भिन्न है ये कविताएँ भावकवित्वके नामसे (छाया वादी कविता) हालमें प्रचलित नवीन कविता-प्रचारसे सम्बद्ध हैं। प्रकृति-वर्णन सुन्दर और सूक्ष्म भावसे समन्वित है। प्रकृतिकी चित्तवृत्तियोंका मनुष्योंकी सहज प्रकृतिम चित्तवृत्तियोंके साथ सुन्दर समन्वय किया गया है। ये कवि सचमुच स्वतन्त्र हैं। भारतीय और पाश्चात्य वाङ्मयके सारको ग्रहणकर तथा उस सारको आत्मसात् करके उसके आधारपर अपनी अनुभूतियोंको खूब लिख सकनेवाले हैं ये कवि।

इस पुस्तकमें कविताकी सामग्री कविसिंग्नु कौशिक सम्मान्ति व्यारका नव विसोह अज्ञातहृदय रसाल प्रथम और तुम कौन हो 'पिंजड़का सिंह और रक्त-तिलक' शीर्षक बारह कविताएँ संगृहीत हैं। इनमें कुछ कविताएँ प्राचीन शैलीपर लिखी गई हैं और कुछ नवीन शैलीपर। इन रचनाओंमें हमें प्राचीन और नवीन वर्णन-शैलीका सुन्दर समन्वय दिखाई पड़ता है।

बौद्ध धार्मिक विचारोंको मनोहर काव्यमय रूप देनेवाले महाकवि अश्वघोषका संस्कृत साहित्यमें विशिष्ट स्थान है। अश्वघोष महान् कवि थे और साथ ही साथ बौद्ध धर्मपर अटल विश्वास रखनेवाले श्रमण थे। अतः आपकी रचनाओंमें काव्यके आवरणमें धर्मोपदेशकी मात्रा अधिक है।* इसी दृष्टिसे संस्कृत सौन्दरनन्द की रचना हुई है। उसमें अतिकामुक नन्द (बुद्धके सौतेले भाई) के बौद्ध श्रमण होनेकी कथा वर्णित है। उसी मूलकथाका आधार लेकर पिंगलि-काटूरि कवियोंने तेलुगुमें 'सौन्दरनन्दमु'की रचना की है। इसकी गिनती आधुनिक कालके प्रसिद्ध खण्डकाव्योंमें की जाती है।

आमुखमें कवियोंने स्वीकार किया है कि संस्कृतके सौन्दरनन्द का अनुकरण नाम-मात्रका है। सचमुच ही यह अनुकरण नाम-मात्रका ही रहा है। तेलुगु काव्य सभी दृष्टियोंसे मौलिक बन पड़ा है। कारण स्पष्ट है कि रचनाके उद्देश्यमें ही ऐक्य नहीं है। अश्वघोषका लक्ष्य बौद्ध-धर्मका प्रचार करना था तो इन कवियोंने विरक्ति प्रेम समझानेवाले अतिरिक्त कथापक्षपर भी अधिक ध्यान दिया है। सुन्दरी और नन्दके पारस्परिक और व्यक्तिगत प्रणयका बौद्धधर्म ग्रहण करनेपर विस्तृत और पुनीत विश्वप्रेममें परिणत होनेका वर्णन बड़ा ही काव्यमय बन पड़ा है। प्राचीन कथा-वस्तुको लेकर आठ सर्गोंमें एक सुन्दर काव्यकी रचना की है पिंगलि-काटूरि कवियोंने।

प्रथम सर्गमें महात्मा बुद्धका नगर-प्रवेश और धर्म-प्रचारका वर्णन है। दूसरे सर्गमें सुन्दरी और नन्दके कामुक क्रीड़ाओंमें मग्न रहते समय बुद्धकी अपनी पुकारका जवाब न सुनकर लौट पड़ना और अनिच्छापूर्वक ही नन्दका उन्हें बुलानेके लिए जाना वर्णित है। उस समयकी मनकी अवस्थाका सुन्दर चित्रण किया गया है —

> बुद्धपताकेन चेंगुमाकित पुन्नुराग
> वेलदिर्ग रतित लागे वेन्नेगुक व्यतानि
> भूमिकम मध्य हुस ला मोप्पेनपुड
> निरुपमम्मुग गहकक निलवकताड

---

* प्रायशास्त्रतपर्गत विषयवर्गितरम्
मस्यान्यगिरम्मम् काव्य व्याजन तस्य कविनहि॥ —(अश्वघोष)

[युद्ध-वाहिनि चलजती आग छकेले
कामिनीकी रक्ति लौंचे पीछ
लहरोंपर बैठ हंसकी भाँई
न आग बढ़ न पीछ हटे।]

भक्ति और रक्ति के अन्तर्द्वन्द्वमें फँसे नन्दको देखकर बरबस कुमार सम्भव की पार्वतीका ध्यान हो आता है।

तीसरे सर्गमें नन्दके निमन्त्रणको अनसुना करके बुद्ध नन्दके हाथोंमें भिक्षापात्र देकर आगे बढ़ते हैं और विहारमें चले जाते हैं। बेचारा नन्द किंकर्तव्यविमूढ़ हो उनका अनुसरण करता है। वहाँ महात्मा बुद्ध नन्दको वैराग्यक धर्मोपदेश देते हैं —

निर्दयी है मृत्यु
उसकी करामातका प्रतीकार है नहीं धरापर।
+ + +
जरा और रोग हैं दो घोर राक्षस
मृत्यु देवताके इशारोंपर नाचनेवाले। आदि।

तदुपरान्त वे अन्य भिक्षुओंको आज्ञा देते हैं नन्दको जबरदस्ती भिक्षु बना दें। बेचारे नन्दपर मानों गाज गिरी। भगवानके बचे बलपर, भिक्षु नन्दका सिर मुँड़ा देते हैं। इस सर्गका अन्तिम पद्य बड़ा सुन्दर बन पड़ा है —

भिक्षुमंडलि वेविविक्क पेनुपुलाडि
वेडुकोनि विड्डुवा विलपिंचि कडरि
विलिलिचि वेग्वलु वाडिक सोम्मसिलिल्लि वाविल
सुन्दरीप्राण धनमु भिक्षुल्कु दक्के।

[भिक्षु मंडलीसे घिरे, छटपटा,
याचना कर, रोकर, लौटकर
छटकर, बेहोश हो गिरकर (भूपर)
सुन्दरीका प्राण-धन लगा भिक्षुओंके हाथ।]

चौथे और पाँचवें सर्गमें विरह-वर्णन है।

छठे सर्गमें महात्मा बुद्ध और नन्दके वार्तालापका वर्णन है। नन्द जीवनमें प्रेमकी महत्ताका वर्णन करते हुए कहता है —

प्रिय वनिताविहीन मैन जीवितमु मोपु
प्रणयमाधुरी चौलिम्न वलुपु विषत
मानमैनिपु जाल, प्रेममुलैनि
फलम निष्फलमगु वेरकलो देव।

[प्रिय-जन-रहित जीवन है दूँठ बराबर
प्रणय माधुरी एक बीना बस छिनभर,
प्रेम शून्यतासे बढ़कर वञ्चितता है क्या और?]

उसका जवाब देते हुए भगवान कहते हैं कि ममता ही दुखका कारण है। ममताहीन प्रेम ही नित्य है। इन सब दुखोंका कारण अहंकार ही है। यह मत समझो कि बौद्ध धर्म प्रमहीन है। शील-करुणा ही इस धर्मका मूलाधार है। तुम अपने प्रमको सीमित क्यों करते हो?

इम्मि पुमुलुक मीर्बिलक पुप्यम्
पुपक्नोल ? पेडवमुल्लु माटि
तापर्मवनोल ? तन्य ममत्वकी
कम्मे पोलक कारणम्मु पुन्नु।

[हैं इतने फूल तो एकपर आसक्ति क्यों?
चुभा काँटा तो दुख क्यों?
ममता ही है कारण दुखका।]

अन्तमें नन्द बौद्ध-धर्म ग्रहण कर लेता है। उसकी इस इच्छाको कि सुन्दरीको भी सन्यास ग्रहणका अधिकार मिले मान लिया जाता है।

सातवें सर्गमें नन्द और सुन्दरी समाज-सेवामें रत दिखाए गए हैं। दोनोंका मिलन विलक्षण परिस्थितियोंमें होता है। नन्द एक मरणासन्न अनाथ स्त्रीकी सेवा कर रहा है। उस स्त्रीका नन्हा बच्चा सुन्दरीको वहीं खींच लाता है।

संस्कृत-काव्यके अष्टादश सर्गोंमें फैले हुए मूल कथाका आधार लेकर मौलिक प्रतिभा और कल्पना घोलकर, केवल सात सर्गोंमें ही एक अनुपम काव्यकी सृष्टि की है इन कवियोंने। सारा काव्य सुकुमार भावनाओंसे भरा हुआ है और वर्णके अनुकूल शैलीमें इस ग्रन्थमें माधुर्य गुण कूट-कूटकर भरा हुआ है। इस काव्यकी विशिष्टता यह है कि यद्यपि यह दो कवियोंकी सम्मिलित रचना है, पर कहीं भी इसका आभास तक नहीं मिलता।

सौन्दरनन्दमु का नाम सुनते ही द्वैत भावनाका भास होता है। नायक-नायिका दोनोंका प्राधान्य दिखाता यह काव्य है और इसके रचयिता कवि भी दो हैं। जिनके करकमलोंमें यह ग्रन्थ समर्पित किया गया वे गुरु भी दो हैं। यह आकारमें काव्य होनेपर भी वस्तुविन्यासमें नाटकके समान है। इस काव्यके विषय भी शृंगार और करुणा-समाज-सेवा—दो हैं। शान्त रसकी प्रधानता होनेपर भी इसमें शृंगार रसका पूर्ण निर्वाह हुआ है। कहना न होगा कि इस प्रकार यह ही स्वाभाविक ढंगसे इस द्वैत का निर्वाह हुआ है।

[बुद्ध भक्ति बलवती आगू खींचल
कामिनीकी रक्ति खींच पीछे
लहरोंपर बैठे हंसकी नाईं
न आगे बढ़ न पीछे हटे।]

भक्ति और रक्ति के अन्तर्द्वन्द्वमें फँसे नन्दको देखकर बरबस कुमार सम्भव की पार्वतीका ध्यान हो आता है।

तीसरे सर्गमें नन्दके निमन्त्रणको अनसुना करके बुद्ध नन्दके हाथोंमें भिक्षापात्र देकर आगे बढ़ते हैं और विहारमें चले जाते हैं। बेचारा नन्द किंकर्तव्यविमूढ़ हो उनका अनुसरण करता है। वहाँ महात्मा बुद्ध थोड़ी देरतक धर्मोपदेश देते हैं —

निर्दयी है मृत्यु
उसकी करामातका प्रतीकार है नहीं धरापर।
+ + +
जरा और रोग हैं दो घोर राक्षस
मृत्यु देवताके इशारोंपर नाचनवाले। आदि।

तदुपरान्त वे अन्य भिक्षुओंको आज्ञा देते हैं नन्दको जबरदस्ती भिक्षु बना दें। बेचारे नन्दपर मानों गाज गिरी। भगवानके चले जानेपर भिक्षु नन्दका सिर मुँड़ा देते हैं। इस सर्गका अन्तिम पद्य बड़ा सुन्दर बन पड़ा है —

भिक्षुमंडलि बेढ़लि बेमुधुकाहि
बेदुकेमि विलपुना बिलखिलि कतहि
विसितहि बेन्हतु ससित, लोकमतिसित नचित
सुन्दरीप्राण धनतु भिक्षुनक हाथे।

[भिक्षु मंडलीसे घिरे, कलपकर,
याचना कर, रोकर, लौटकर
छटपटाकर, बेहोश हो, गिरकर (भूपर)
सुन्दरीका प्राण-धन क्या भिक्षुओंके हाथ।]

चौथे और पाँचवें सर्गमें विरह-वर्णन है।

छठे सर्गमें महात्मा बुद्ध और नन्दके वार्तालापका वर्णन है। नन्द जीवनमें प्रेमकी महत्ताका वर्णन करते हुए कहता है —

प्रिय वामविहीन जैन जीवितमु मोहु
प्रणयमाधुरी प्रीतिमे मधुर विभव
भावमेनिपु चारु, प्रेममूर्तिमि
धन्य निम्नवरतु देवतारो [illegible]।

[प्रिय-जन-पीड़ित जीवन है घूँट बराबर
प्रणय माधुरी छक पीना बस दिनभर,
प्रेम शून्यतासे बढ़कर दरिद्रता है क्या और?]

इसका जवाब देते हुए भगवान कहते हैं कि ममता ही दुखका कारण है। ममताहीन प्रेम ही नित्य है। इन सब दुखोंका कारण अहंकार ही है। यह मत समझो कि बौद्ध धर्म प्रेमहीन है। जीव-करुणा ही इस धर्मका मूलाधार है। तुम अपने प्रेमको सीमित क्यों करते हो?

इनिम पुवुगळ मीतोरुक पुष्पम्मु
पुवाकलेक? वेळवमुळ्ळ् नाळि
तावळंवनेक? ममत पमताठी
पम्मे शोक कारणम्मु दुम्मु।

[हैं इतने फूल तो एकपर आसक्ति क्यों?
चुभा काँटा तो दुःख क्यों?
ममता ही है कारण दुखका।]

अन्तमें नन्द बौद्ध-धर्म ग्रहण कर लेता है। उसकी इस इच्छाको कि सुन्दरीको भी संन्यास ग्रहणका अधिकार मिले मान लिया जाता है।

सातवें सर्गमें नन्द और सुन्दरी समाज-सेवामें रत दिखाए गए हैं। दोनोंका मिलन विस्मयक परिस्थितियोंमें होता है। नन्द एक मरणासन्न अनाथ स्त्रीकी सेवा कर रहा है। उस स्त्रीका नन्हा बच्चा सुन्दरीको वहाँ खींच लाता है।

संस्कृत-काव्यके अष्टादश सर्गोंमें फैले हुए मूल कथाका आधार लेकर मौलिक प्रतिभा और सरलता घोलकर, केवल सात सर्गोंमें ही एक अनुपम काव्यकी सृष्टि की है इन कवियोंने। सारा काव्य सुकुमार भावनाओंसे भरा हुआ है और उनके अनुकूल शैलीमें इस ग्रन्थमें माधुर्य गुण कूट-कूटकर भरा हुआ है। इस काव्यकी विशिष्टता यह है कि यद्यपि यह दो कवियोंकी सम्मिलित रचना है, पर कहीं भी इसका आभास तक नहीं मिलता।

सौन्दरनन्दम्मु का नाम सुनते ही द्वैत भावनाका भास होता है। नायक-नायिका दोनोंको प्रधानता देनेवाला यह काव्य है और इसके रचयिता कवि भी दो हैं। जिनके करकमलोंमें यह ग्रन्थ समर्पित किया गया वे गुरु भी दो हैं। यह आकारमें काव्य होनेपर भी वस्तुविधानमें नाटकके समान है। इस काव्यके विषय भी शृंगार और करुणा-समाज-सेवा—दो हैं। शान्त रसकी प्रधानता होनेपर भी इसमें शृंगार रसका पूर्ण निर्वाह हुआ है। कहना न होगा कि इस प्रकार बड़ा ही स्वाभाविक ढंगसे इसमें द्वैत का निर्वाह हुआ है।

प्रवीजनकी एकाग्रतामें यह काव्य अपना सानी नहीं रखता। काव्यका प्रारम्भ बुद्धके हितोपदेशसे होता है और सारा काव्य नन्द और सुन्दरीके 'बोधीकरण' में संपन्न है। अन्त भी नन्दके कल्याणात्मकी विजयमें होता है। रचनाशैली कथा-विधान निर्वाह-चातुर्य आदिकी दृष्टिसे यह काव्य सचमुच अत्यन्त सुन्दर है।

उपरोक्त काव्योंके अलावा समय-समयपर आकाशवाणी और अन्य पत्र पत्रिकाओंके लिए लिखी गई फुटकर कविताएँ सैकड़ोंकी संख्यामें हैं। १९६ में केन्द्रिय साहित्य अकादमीकी तरफसे तेलुगु साहित्यके प्रारम्भसे लेकर आज तकके कवियोंकी रचनाओंका बृहद्-संकलन प्रकाशित किया गया है। इस संग्रहके सम्पादक श्री वेंकटेश्वर राव ही हैं। इस पुस्तकमें कविताओंका ऐसा सुन्दर सम्पादन है कि पाठकके सामने तेलुगु काव्यके विकास-क्रमकी सुस्पष्ट झाँकी उपस्थित हो जाती है। भूमिकाके रूपमें तेलुगु काव्य साहित्यके इतिहासकी एक झलक प्रस्तुत की गई है।

श्री कादूरि वेंकटेश्वररावकी गद्यरचनाओंमें बीसियों रेडियो रूपक हैं। इनमें श्रीनिवास-कल्याणमु, गुणमोपाल, राजा आदि प्रसिद्ध हैं। वेंकट शास्त्रीजीके राजकवि के पदपर नियुक्तिके समय 'आन्ध्र-पत्रिका' के विरोधी नाम संवत् (१९४९)के वार्षिक अंकमें तिरुपति-वेंकट कवुल शीर्षकसे बड़ा ही विद्वत्तापूर्ण लेख प्रकाशित किया है। आपके कई साहित्यिक लेख अप्रकाशित ही पड़े हुए हैं।

श्री कादूरिजीने अँग्रेजी और संस्कृतके कुछ श्रेष्ठ ग्रन्थोंका अनुवाद भी किया है। आपने संस्कृतके प्रसिद्ध कवि भास कृत स्वप्नवासवदत्ता और प्रतिज्ञा-यौगन्धरायण का भी तेलुगुमें अनुवाद किया है। अँग्रेजीसे 'वन वीरज' 'एक्लो लोटस' आदि उपन्यास महात्मा गाँधीजीकी आत्मकथा रोम्यारोलाकृत गाँधी महादेव भाईकृत 'अबुल-कलाम आजाद' श्री ए एस पी अय्यरके विभूति चन्द्रगुप्त आदि उपन्यासोंका भी अनुवाद किया है। पर आन्ध्र प्रदेशमें उनकी गद्य रचनाओंकी अपेक्षा काव्य रचनाओंको ही महत्व प्राप्त है।

गाँधीजीने राष्ट्रीय-पुनर्निर्माणके कार्यक्रममें हिन्दी-प्रचार को भी विशिष्ट स्थान दिया था। गाँधीजीसे अत्यधिक प्रभावित श्री कादूरिजीकी रुचि हिन्दी और हिन्दी-प्रचारकी ओर प्रारम्भसे ही रही है। आन्ध्र राष्ट्र हिन्दी-प्रचार संघ (दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रासकी शाखा) विजयवाड़ाके कार्यमें आपका सक्रिय सहयोग रहा है।

आज अपनी सड़सठ वर्षकी उम्रमें भी श्री कादूरि वेंकटेश्वररावजी निरन्तर साहित्य-सेवामें रत हुए हैं। आपके दोनों पुत्र—श्री कोदण्डय्या और विजयसारथी भी तेलुगु साहित्यकी श्रीवृद्धिमें यथायोग्य योग दे रहे हैं। भगवान करे कादूरि सहस्र-मासाधिक आयु प्राप्त कर तेलुगु-भारतीके सौन्दर्यमें चार चाँद लगाते रहें।

काट्टूरि वेंकटेश्वरराव

और

पिंगलि लक्ष्मीकान्तम

[काव्य-सम्भ्रम]

१ नेनु

लोकमु मन्नु गनिगा
वाक्लोमुट निजम्मु सत्यु वांछितमु तुदि
वाकुट्टरि सेक्ल्ये पिट्टु
पाकमुचेडि चपसु, वुद्धिपटिमयुतम्मेन् ॥१॥

पिगळि काम्ल मुक्कवितो
संगातमु, वेळ्ळपिल्ळलमुमुस्कप न
पुं गाविमाजुनि गावि
चें, मोंडोक पद्यरचन चेतु जपस्लन् ॥२॥

आंध्र गीर्वाणकविराजु, सोमसुन्दु
मल रवींद्रकवीगुडु सत्यु गाम्प
कुसुममासमु वनवाल्लुकोनेदुपाडि
सरसत पटिम्ले, वालु नी वम्मसुमकु ॥३॥

कविकुलमंचमी कवित
गम्पम चेयनि चिन्त मा मदिम्
पशुलमु सुस्त एवो कवि
नाममु वाडिचमवानि कीर्तनर
स्तायमर्पिनम् मवम्बयकथाविद्य
मेनिपु चेप्पमैति न
पर चेलिति यप्पुडप्पुडु न
मैपुन वोचि विगुल्यामिचेक्विन् ॥४॥

१ मैं

दुनिया मुझे कवि कहती रही। उस कथनको सत्य करनेकी इच्छा मेरे मनमें बनी रही। पर उस इच्छाकी पूर्ति हुए बिना ही उम्र ढलती जा रही है, बुद्धिका तेज भी घटता जा रहा है ॥१॥

एकमात्र सुकवि पिंगलि लक्ष्मीकान्तमका साथ और गुरुवर चेळ्ळपिळ्ळ वेंकटशास्त्रीकी कृपाने ही मुझे कवि बनाया है जिसके परिणामस्वरूप जो कुछ कविता करके मैं अपनी बुद्धिकी चपलता ही दरसाता हूँ ॥२॥

आन्ध्र और देवभाषाके कविवरोंके काव्य, अंग्रेजोंके सुकवियोंकी रचनाएँ, उधर कवीन्द्र रवीन्द्रके अमर गान, इन काव्य-कुसुम-मालाओंको सिर-आँखों रखनेकी सहृदयता प्राप्त हुई। बस, इस जीवनके लिए यही पर्याप्त है ॥३॥

कविकुलसे सराही जानेवाली कविता की कल्पना (रचना) नहीं की। इसकी मुझे कोई चिन्ता नहीं है किन्तु कवि कहलाता हूँ। न ईश्वरकी स्तुति ही की या अपने वंशकी कथाका कथन ही किया। कभी-कभी इस बातका ध्यान हो आता है तो थोड़ी चिन्ता होती है ॥४॥

१ नेनु

सोकमु मर्नु गनिगा
वाकोनुट मिजम्मु सत्नु वांछितमु तुदि
वाकुडरि सेमल्ये पिदु
पाकमुचेडि मयमु, बुद्धिपटिमपुरम्मेम् ॥१॥

पिगळि कान्त सुमवितो
संगातमु, चेल्ळपिल्लसत्गुरुरूप म
र्नु गविमामुनि गावि
पें , गौडोक पद्यरचन चेतु मपस्सतन् ॥२॥

आंध्र गीर्वाणकविराजु कोगन्सुकनु
क्त रवीन्द्रकवींद्रुनु सत्नु गाम्म
कुसुममालनु रुचवास्युकोनेकुपाटि
सरसत घटिन्के, जाल् मी जन्ममुनकु ॥३॥

कविकुलनेत्रमी कवित
गस्पन चेपनि चित्त मा मविन्
पपुत्नु सुत्त , एवो कवि
नाममु वास्त्विनवानि कीरवर
स्तवममिमन्, मवन्मयकथाविध
मेनियु चेप्पनैति म
न्न चेकिसि यप्पुडप्पुडु म
गंडुन वोचि विगुत्वनिचेसिम् ॥४॥

१ मैं



दुनिया मुझे कवि कहती रही। उस कथनको सत्य करनेकी इच्छा मेरे मनमें बनी रही। पर उस इच्छाकी पूर्ति हुए बिना ही उम्र ढलती जा रही है, बुद्धिका तेज भी घटता जा रहा है ॥१॥

एकमात्र सुकवि पिंगलि लक्ष्मीकान्तमका साथ और गुरुवर वेट्लपिल्ल वेंकटशास्त्रीकी कृपाने ही मुझे कवि बनाया है जिसके परिणामस्वरूप जो कुछ कविता करके मैं अपनी बुद्धिकी चपलता ही दरसाता हूँ ॥२॥

आन्ध्र और देवभाषाके कविवरोंके काव्य, अँग्रेजी सुकवियोंकी रचनाएँ, उधर कवीन्द्र रवीन्द्रके अमर गान इन काव्य-कुसुम-मालाओंको सिर-आँखों रखनेकी सहृदयता प्राप्त हुई। बस, इस जीवनके लिए यही पर्याप्त है ॥३॥

कविकुलमें सराही जानेवाली कविता की कल्पना (रचना) नहीं की। इसकी मुझे कोई चिन्ता नहीं है किन्तु कवि कहलाता हूँ। न ईश्वरकी स्तुति ही की या अपने वंशकी कथाका कथन ही किया। कभी-कभी इस बातका ध्यान हो आता है तो थोड़ी चिन्ता होती है ॥४॥

चेसियेवंग वेवतकसेवल्,
तीर्थमुखाड, सेन्नर्स
पासमोनर्पे, विमुख सपर्य
सोनर्पनु, पैतृकम्मु म
दा सहितुंकनै समुप,
मानमु धर्ममेस्प, संजमुल्
चोरिसिर योग्य मेयमु म
धोमतिके चेयिसाघुघुग् सवा ॥५॥

फुसमुनु निघयु वपमु
पसिमिपु मा किल्पि पपमा, मचिपेस्लम्
गनुपित मोमर्पुकोमि मे
गलिने वर्तिोविक मेमु मळमळमघुघुम् ॥६॥

न कभी किसी देवताकी सेवा की, न किसी तीर्थमें डुबकी ही लगाई। न किसी पुण्यक्षेत्रमें रहा न ब्राह्मणोंकी सेवा ही की। मैं पितृ-कर्मोंको श्रद्धायुक्त होकर नहीं करता हूँ। दान धर्मसे हाथ खींच लेता हूँ। किसी भी सन्ध्याके समय सूर्य भगवानको अर्घ्यकी अञ्जलितक नहीं भरता। उन्नतिकी बात तो दूर सदा अवनतिकी ही तरफ बढ़ता जाता हूँ ॥५॥

भगवानने उत्तम कुल विद्या रूप सम्पत्ति सब कुछ दिया। पर उन सबको मैंने कलुषित ही किया उसे बेकार गँवाया और अब मूर्ख बनकर हाय-हाय करता हूँ ॥६॥

———

एरवास पिय्यमु योयि राजमनु
कायेमु मुचित, पूरिटिका
पुरमुस योयेनु मंडुवास भयमम्मुल
मन्पिकायेमु, जाला
हरपवसेनमु वासि पांडुकु बेराछुळ
यम्मे गूपांगुपुल
सरसांत करणावयिमु योगडगा
प्रवयवे कृष्णानचिमु ॥४॥

नलुगड कोसकुल्लतो वो
पुल्लतो, वेसिमीटिकूपमुल्लतो वसि पै
रल्लतो, वहुनेम्मिविकुल
मुल्लतो मम्मूर माडु योसिवे सिवल्लतो ॥ ५ ॥

घनपाठ्यै वातिगम भायवपुस
हृनमवृवयुडु झिम्दुलगुमेटि,
पाणिनीयमु गाक्षि बठिंयिचि यच्छिव
प्रसूरि शंकर रामसूरि,
संगीतविद्याव्यसन मुगुवाल्तो
मवळविमट्टि मेंडुयासवाव
अनघवर्तमुलिगवाम्बवमुल, सदा–
चारशोभितुलम्मुलूरिवाव ॥ ६ ॥

यक्षगानम्मुलाडि पेरविनट्टि
सात्तनुल, सोदेवेष्पेडि नृत्ति तोड
परिके चुग्गुल्वाव मा पस्सेटूर
कोलुवुनविके योर्गावरि काळसकेस ।

विसमवशमिनाडु वेताळ पूजलु
मामुघमुलपूज सार्वारिपु
हैहयान्वयमु कायिरोलगु पेर
गापुले बसिमु मा पुरमुन ॥ ७ ॥

लाल-लाल मोटे चावलकी जगह अच्छेसे अच्छे चावल खानेको मिलने लगा। झोपड़ियोंकी जगह खपरैलदार घर बने। स्त्रियाँ दूरसे पानी भर लानेकी तकलीफसे बच गईं क्योंकि अब घर-घरमें कुएँ खुदवा दिये गए। कृष्णा मंत्रीके अन्तःकरणकी कृपाकी सीमाका अन्त कहाँ? उसकी प्रशंसा करनेकी सामर्थ्य ही किसमें है? ॥४॥

उस समय हमारा गाँव धन-दौलतसे भरपूर था। चारों तरफ सरोवर, बगीचे साफ और मीठे पानीकी बावड़ियाँ तथा चारों ओर हरी भरी फसल ऐसी लहलहा रही थी मानो श्री-सम्पत्तिने उस गाँवको घर लिया हो। हमारे गाँवमें अठारह कुलोंके लोग रहते थे ॥५॥

भागवत वाचक बुधवर हनुमय्य व जो शिष्ट जनोंमें अग्रगण्य और घनपाठी* थे। मातूरि शंकर राममूर्ति काशीमें रहकर पाणिनीय पढ़कर आनेवालोंमेंसे थे। पेण्डयाल वंशके सज्जन थे जिन्हें संगीत विद्या बचपनसे ही आती थी। अनघ चरित्रवाले थे इगुव वंश वाले। सदाचार शोभित थे उप्पुलूरि वंशके जन। यक्ष गानोंका अभिनयकर सातान प्रसिद्ध बने थे और भविष्यकथन× करनेवाले पलिके मुगुके वंशज थे। इन सभी लोगोंने हमारे गाँवको सभी कलाओंसे विलसित कलामण्डप बनाया था ॥६॥

विजयादशमीके दिन बेतालकी एवं आयुधोंकी पूजा करनेवाले हृष्ट पुष्ट क्षत्रिय 'आयिरी' के नामसे 'कम्म'¶ बन हमारे नगरकी शोभा बढ़ाते हैं ॥७॥

---

*वेदमंत्रोंके मंत्रके एक एक छन्दको १२ बार आवृत्ति करते हुए पढ़नेको 'घनपाठ' और ८८ बार आवृत्ति करते हुए पढ़नेको 'जटापाठ' कहते हैं।

×आंध्रकी यात्रियोंकी स्त्रियाँ सूपमें चावल डलवाकर, एक छोटी सी लकड़ीका साथ पकड़ानेवाली स्त्रीका हाथ पकड़ इधर-उधर घूमती भविष्यका कथन करती हैं, जिसे 'सोदे' कहते हैं।

आयिरी–'ऐरु' का विकृत रूप। 'आयिरी' किसान अपनेको 'हाथ का बंधन' बताते हैं।

¶ कम्म–आन्ध्रमें शूद्रोंकी एक उपजाति। ये गाँवके आधारपर किसान होते हैं।

काकतिवस्यभूमुमुल
    कालमुनं वरिवीर कठसुं
ठाकमुलैन वडगमुस
    डाविरि पट्टिकस्न् , हसापुग्र
स्वीहृति वाडिपंटसमु,
    वॅचिरि, पाड्वडिमट्टि परिस्यम्
मेकोनि कपरॅवलु
    रॉविविरि वारले तोॅटिकापुले ॥ ८ ॥

कालुपेट्टिनट्टि नेमनेस्सनु गनि
गड्ड वेयनेयु कम्मवारि,
कममुक्षुममेकनट्टि कापुस्कु मा
मूव काषयाविये रहिवे ॥ ९ ॥

अभिमानधनुलु नारनाम्ववायुसुनु, नि
    ष्कपकसाहसुलु वेस्संक्रियार,
कलिमियु बलिमियु जेमुयार कडियास
    वार, कावेंट वेमूरिवार
सवुपामलीवनास्सुलु नागवुछुना
    मॅरवायुल्नु सुपनैनिवार,
करिसेनम्मुन सवित गसवेसगावार,
    कवुमोभिमल धेलंगड्ववार,
पाडिवप्पनि कंवमुपाटिवार
पेदगास सूर्यदेवरवार मिकसु
पलुसेगल कम्मनायकुल हस्तमुलाम
पल्लिप्य मोसंट विहिरि भाग्यरेख ॥ १० ॥

अभिमनाभिमानु सकुटिसवर्तनुलु
धैर्यविमुलुस मुवारमतुलु
मुष्ठ्मट्ट गलुगु पुर्सम पॅरिदि
कापुल्नु नायकरमु वाडिव ॥ ११ ॥

काकती वंशके शासन-कालमें लोगोंने शत्रुओंके कण्ठोंको काट कर डालनेवाले खड्गोंको अटारीपर छिपाकर रखा दिया था और अब उन हाथोंमें हल थामकर वे खेतीमें लग गए। उजड़ बने गाँवको उन्हीं लोगोंने सम्हाला और उसे सम्पन्न बनाया ॥८॥

जहाँ कदम रखा, उस जगहको सोनेकी निधि बना सकनेवाले 'कम्म' जातिके लोगों और भोले-भाले 'कापु'* जातिके लोगोंके लिए हमारा गाँव चिर निवास-स्थान बना रहा ॥९॥

नार्ल वंशज स्वाभिमानके धनी थे। बेल्लंकि वंशवाले निश्शंक और साहसी थे। गड्डियाल वंशवाले सम्पत्ति और शक्तिसे सम्पन्न थे। उनके बाद वेमूरि वंशवालोंका नम्बर था। जीवन निर्वाहके समुचित साधनोंसे सम्पन्न थे मागलुल्वंश वाले तो चतुर थे सूरपनेनि वंश-वाले। खेतीमें अत्यन्त आसक्ति रखनेवाले वेलगा वंशवाले थे, तो अत्यन्त सहिष्णु थे येर्लगड्ड वंशज। वचनपर जान देनेवाले कम्पमुपाटि वंशज थे, अति प्रसिद्ध थे सूर्यदेवर वंश वाले। इस प्रकार 'कम्म' जातिके कई सुपुत्रोंने हलके सहारे हमारे गाँवकी सौभाग्य-रेखामें सिन्दूर भरा ॥१०॥

अपनी जन्मभूमिसे प्रेम रखनेवाले, निष्कपट, धैर्यवान, उदार बुद्धिवाले और सम्भ्रान्त 'गुरिंड' वंशके कापु जन हमारे गाँवके मुखिया बन हुए थ ॥११॥

---

* 'कापु' शब्दमें शूद्रोंकी एक उपजाति है जो गाँवों पर, अपना जीवन बिताती है।

तोसिम्कोळ्ळ मेल्मारिसम रेयक मस्साचि
　　मक्कोळ्ळगमुल् मारेमुगु मुप,
मुगुमुम मेल्कम मुविमय्य कनुर मं
　　तुसि पुतिगा मूमिकुलुल् याड,
गरककजम्पगुल कव्यपु जप्पुळ्ळु
　　मेरयगा निल्लाइ_ मेरगुवस्य,
मुलुगुल ककवलम्मुलतोड मस्मपि
　　सम्मुल् तीयमै संविशिप,
मोडगिस्मकम रचळितो बोटलकुनु
मस्मुतोड् वलीवर्धमुल्नु गापु
म्मसुपन् मोकु मम्माठ कार्सकिपु
मल्लम म्मेसुकोपु मा पल्लेदूर ॥ १२ ॥

वेगुड् सेप्पुवेप्पुलनु
　　वेगिरपाड् मवंपसेक हु
ह्रागलरंप मुद्दविवि
　　पाडुलु मेड्डनु गळ्लीरमं
दापक, मंगमै चिंग्रुपलें
　　चिस्मुलेपुगुतिमोलमै
सागक वैडिकट्टम् तोसि
　　पामुल पसिम्प मेसुकोम्पेविन् ॥ १३ ॥

मेपुल्पवित्र मोगम्मुसेत्ति तनय
　　स्नेहार्द्रमी पुष्कुलनु
पेर्पु गापुनु मानु पिल्प, वत्सुग़
　　पोडिचि पेस्तामदनु
पापुस्मिम्पोडि यन्त पेळ्लुक्कु लेगल
　　मास्पसम्नु वळी
मा पस्तीरम मेसुकोम्नुनु
　　तर्पमारापसमाहुमुग ॥ १४ ॥

सर्वप्रथम बाँग देनेवाले मुर्गेकी आवाजपर पंख फड़काकर दूसरे मुर्गोंके समूहके बाँग देते समय,तरुके जगी बुढ़ियाकी तकलीके स्वरमें स्वर मिलाकर गाते समय कर-कंकण ध्वनियोंके साथ सुहागिनियोंके दधिमथन करते समय, पक्षियोंके कलरवके साथ आँगनमें गोबरके छिड़कावके मधुर स्वरोंके सुनाई पड़ते समय मोट या रहँटकी ध्वनिके साथ, बगीचोंको पानी देनेवाले किसानोंके बैलोंको धमकाते समय, मोटके रस्सेकी आवाजके निकलते समय उत्पन्न होनेवाली विशिष्ट इन सुमधुर ध्वनियोंको सुनते हुए प्रशान्त चित्त हो हमारा गाँव जाग उठता है ॥१२॥

सबेरा होनेकी प्रतीक्षामें उतावलेपनको रोक न सकनेके कारण हृदयके रागतरंगोंके उमड़कर, छलाँग भरते हुए कण्ठसीरोंमें न रुककर बाहर टूटकर, छोटे मोतियोंकी मालाके समान छूट पड़नेपर पक्षी प्रातःकाल ही अपने कलरवसे गाँवको जगाते हैं ॥१३॥

पेन्हानेपर, मुँह उठाकर सन्तान-स्नेह (वात्सल्य) से आर्द्र चितवनोंसे बछियोंको देखती हुई गायोंके बुलानेपर रस्सियोंसे छूट पड़ते हुए, भूखके मारे, किसानोंके छोड़ने सब छलाँग भरते हुए, बछड़ोंके रँभाते समय हमारा गाँव, उन मधुर स्वरोंको सुनते ही जाग उठता है ॥१४॥

तोसिकोळळ पेच्चरितस रेक्क कस्साथि
    मसुकोळळगमुलु मारेमुगु सुप,
मुनुमुस मेत्नस मुवियम्व कडुर मे
    इति मुतिगा मूलिहमुसु बाड,
गरर्कणप्पमुस् कम्पु कप्पुळ्ळु
    वेरयगा निस्सोडु. पेरुगुवरव,
मुसुगुस वलस्कसम्मुस्तोड गसम्पपि
    सव्वडुल सीयनी सर्विडिप,
मोस्टगिसकल रवळितो वोटलकुनु
    कलमुतोडु वलीवर्समुस्नु गापु
सवसुपन् मोकु अम्बाट कार्लकिपु
    चल्लन म्मेसुकोडु मा पस्तेन्दूव ॥ १२ ॥

वेगुटु वेप्पुवेप्पुडनु
    वेणिरपाडु मर्डपस्सेक डु
डागतरंग मुहमिडि
    वाडुल वेदुबु गळतीरम
वागक, मंपमे चिडुपले
    चिस्मुसेपुगुसिमोतमे
सापक वेडिकटलु तोलि
    कामुस पसिम्प मेसुकोल्मेमिन् ॥ १३ ॥

वेपुस्थलिम मोपम्मुसेरि तनप
    स्नेहार्मी पुडुकम
पेपु गापुडु मालु पिल्म वमुगुल
    प्रोडचि पेस्साकाटन्
गापुनिम्प्पेडि वल्ल पेळ्ळस्कु सेगल
    मायपल्कन् वळी
मा पस्सीरम मेसुकोसुनु
    तवमारावससादिमुल् ॥ १४ ॥

सबप्रथम बाँग देनेवाले मुर्गेकी आवाजपर पंख फड़काकर दूसरे मुर्गोंके समूहके बाँग देते समय सबसे जगी बुढ़ियाकी तकलीके स्वरमें स्वर मिलाकर गाते समय कर-कंकण ध्वनियोंके साथ मुहागिनियोंके दधिमंथन करते समय पक्षियोंके कलरवके साथ आँगनमें गोबरके छिड़कावके मधुर स्वरोंके सुनाई पड़ते समय मोट या रहँटकी ध्वनिके साथ, बगीचोंको पानी देनेवाले किसानोंके बैलोंको धमकाते समय मोटके रस्सेकी आवाजके निकलते समय उत्पन्न होनेवाली विशिष्ट इन सुमधुर ध्वनियोंको सुनते हुए प्रशान्त चित्त हो हमारा गाँव जाग उठता है ॥१२॥

सवेरा होनेकी प्रतीक्षामें उतावलेपनको रोक न सकनेके कारण हृदयके रागतरंगोंके उमड़कर छलाँग भरते हुए कण्ठवीरोंमें न रुककर बाहर टूटकर, छोटे मोतियोंकी मालाके समान छूट पड़नेपर पक्षी प्रातःकाल ही अपने कलरवसे गाँवको जगाते हैं ॥१३॥

पेन्हानेपर मुंह उठाकर सन्तान-स्नेह (वात्सल्य) से आर्द्र चितवनोंसे बछियोंको देखती हुई गायोंके बुलानेपर रस्सियोंसे छूट पड़ते हुए, भूखके मारे किसानोंके छोड़ने तक छलाँग भरते हुए, बछड़ोंके रँभाते समय हमारा गाँव उन मधुर स्वरोंको सुनते ही जाग उठता है ॥१४॥

मामायमुल्लुनु, ता
तामनुमन वाचियतस वमर मपुडु मा
प्रामनुन मास्नु कोसमुलु
वेसमुम मेसगु मरमरिक लेस्रावके ॥ १५ ॥

कष्टसुखमुलंनु गलिमिलेमुलम्पु
वेंचि कुडुनु नाटि पल्लेमुनुकु
कमु मोरणे नेष्टियमस केडमोणास्
पेडमोमासु वम्मि पडिये नेड्सु ? ॥ १६ ॥

नाडु केलि कोसम्मुसु मेडु राडु,
कलिमिलेमु लेनाडुनु गसमुगावे ,
पल्ले बहुकुल माधुर्य मेसम विरिगि
पंचकोलकम्पाय मुम्पतिसमोस ? ॥ १७ ॥

पंडिमपट पूर्विडिचि
    वेंटिकि मेगडु, पेवसाव प
स्तुंडग ग्राम्यमम्मुटमु
    डोसमुगा वमपोवु वर नै
म्बंडु बरोपजीवनमु
    पास्पड, डेप्पलि बुसि पानि के
पुडंग नेडम्पुतमुनु
    भुम्मडिमूटग वेंचे सौख्यमुन् ॥ १८ ॥

तमतम कार्यम्मुसु सर
तमभावमुलेक स्वकुलधर्ममुगा, पा
समु सेवलोरि सलिपेडि
पुमतुल मेन्टु लोपवे मेज पुखसत्परतस ? ॥ १९ ॥

चारों वर्णोंके लोग विना किसी दुराव छिपावके प्रेमपूर्ण जीवन बिताते थे। मामा और दामाद दादा और पोते—इस प्रकारके सम्बोधनसे सभी मिल-जुलकर रहते थे, मानों सारा गाँव एक ही कुटुम्ब हो ।।१५।।

सुख और दुःख अमीरी और गरीबीमें एक दूसरेके सुख-दुःखको आपसमें बाँट कर अनुभव करनेवाला वह ग्राम्य-जीवन ही लुप्त हो गया। आजकल तो भाई-भाई आपसमें एक दूसरेका मुँह देखना नहीं चाहते ।।१६।।

उस समय जो कुल (वर्ण) नहीं थे, वे आज तो नहीं टपक पड़े। अमीरी-गरीबी तो सदासे ही चली आ रही है। ऐसी हालतमें ग्राम जीवनकी उस मधुरिमाके स्थानपर रह यह पञ्चमेल कषायकी तिक्तता कहाँ से आ गई? ।।१७।।

गाँवमें जो उपज होती थी वह गाँवसे बाहर नहीं जाती थी। गरीबोंके भूखे रहते अनाज बेचना दोष माना जाता था। गाँवमें कोई दूसरेपर आधारित हो जीवन-यापन नहीं करता था। प्रत्येकका अपना-अपना पेशा था। इस प्रकार सभी पेशे एक दूसरेके अभावोंकी पूर्ति करते हुए साझेमें समान रूपसे उपभोग करते हुए सुखोंकी वृद्धि करते थे ।।१८।।

अपने-अपने कामोंको करते समय ऊँच-नीच भावको छोड़कर और स्वकुल-धर्म मानकर सारे ग्रामके सुखको अपना सुख माननवाले सुमतियोंके मनमें स्वार्थकी ये भावनाएँ कैसे घर कर गई? ।।१९।।

मद्रिवलुसवारिकि मंतो यिंतो
मूवसति युंडु, मोकडु बेप्युस मोसंग,
मारुगा वानि बोकडु कुम्मरमो, कम्म
रम्मो यांयिवु पोतुविन्नु रेंवु वानु ॥ २० ॥

मोसमोसु बीळळकोवरि
कमगमुपुग मूरि पासकुपुसु मेपुन्
गलवारि पाविकुमसु
पसुगन् बेवक्कु बस्स करवेदुसंकुन् ? ॥ २१ ॥

क्रूर बडगट्टि पुप्पुमकु गूड
कोलुचोसगि नाडु विविविकोनिरि ,
चुट्टनिप्पु गूड चुट्टु कम्मीय
किपुडु परस्नेट्टळ्ळ कोमिबक्के ! ॥ २२ ॥

कम्युनिजमु लेडु, कपासु बासिचिन मे
स्त्रीसु लेद, स्वस्ववृत्तिपरत
संममुनकु मेलु समकूरुव मिरस
रासुलन्यु , मेट्टि यम्मुरम्मो ! ॥ २३ ॥

नाडुनु गस्कुप्रायिरि
    धनम्मुसु भुञ्चिसि, रम्यबारसम्
गुडिरिकानि पापमपु
    कोंडुनु, पोसकुनो यस मोति बे
साकेनु बारि मिय्यवन
    मट्टिभयम्मुबिवोयि चप्पगा
मूकेनु सिग्गु, पापरसु
    मूर्जितुले विहरिंतु रिवसमे ॥ २४ ॥

मोरुसकिनुटे मोगमु मनु
रिलो बलमपुलगुठे कोरलबकुणा
धुरि कोस्ममपु मोससाडे बोन्सिकडि परलोक ॥ २५
मिस्मप्राम बीबन

सभी पेशावालोंके पास थोडी-बहुत जमीन होती। एक जूते मनाता तो दूसरा उसके बदलेमें लोहेका सामान या मिट्टीका सामान देता। किसान सभीको अनाज तौल देता ॥२०॥

कमर तक बढ़े घासके मैदानोंमें (चरागाहोंमें) गाँव भरके मवेशी झुण्ड-के-झुण्ड, चरते रहते। अमीरोंके यहाँ गोरसके घड़े-के घड़े भरे रहते तो फिर गरीबोंको छाछकी कमी कैसी? ॥२१॥

गाँवमें पैदा न होनेवाले नमक को भी लोग अनाज देकर ही खरीदते थे। आज तो चुरुट जलानेके लिए भी आग बिना पैसेके नहीं मिलती। हाय इन गाँवोंको क्या हो गया है! ॥२२॥

उस समय न कम्युनिज्म ही था न हाथमें कोड़े रखनेवाले राजा ही थे। लोग निरक्षर (अपढ़) होकर भी अपने-अपने कार्योंमें निरत होकर समाजकी भलाई करते थे। वास्तवमें यह कैसा आश्चर्य है! ॥२३॥

तब भी लोग सेंधी(ताड़ी)पीते चोरी करते व्यभिचार करते पर उनके हृदयमें या तो पापका डर बना रहता था या पोल खुल जानेका सकोच भाव। आज तो पापका डर कभीका समाप्त हो गया है और लज्जा तथा अपमानकी बात तो कोसों दूर चली गई है। आज पापरत मनुष्य सिर ऊँचा उठाकर तथा स्वच्छन्द होकर विचर रहे हैं ॥२४॥

दूसरोंको दान करना ही भोग है चार आदमियोंके बीच अपमानित होना ही मृत्यु है सूलीपर चढ़ना है। व ग्राम आतंकहीन जीवनकी मधुरिमाका उपभोग करते थे ॥२५॥

मृगुलस्तोम चक्रुवमु
　　मेवकुव लॅपव, सच्चरिमुलन्
नेत्तिनि वेट्टिकोंवुव, ग
　　भिपव नीतिविधुर्मम सं
पत्तिनि रिस पॉविश्ति मि
　　वर्णमु, नाकयमंतु वेलुपे
सत्तेमु सासिया मन्नि
　　सज्जमुक मुर्तिपिय जेल्सवे ॥ २६ ॥

पोमुगर्रंसु, मिर्रंवेप्पुस्नु, मीव
काविर्पवेलु, वक्कगोल्कलनु वास्थि
रैडिडगास्तो गोलुन वीरियेवि धर्मे
तत्पवल माटि पूरिपेट्टल वर्मेतु ॥ २७ ॥

इदि सावार्पक्रमय
वेव मेवलेडि बाध वेलिकिमिट्टुलुभ्बिन ॥ २८ ॥

———

अपने-अपने पेशोंमें ऊँच-नीचका भाव नहीं रखते थे। चरित्र वान व्यक्तियोंको सिर-आँखों लेते। नीति-विशारद,सम्पत्ति, पाण्डित्य और धर्म (कुल) को आदर नहीं देते थे। मन्दिरमें स्थित भगवान और सत्यको ही साक्षी मानकर जीवन-यापन करनेवाले वे सुजन क्या स्तुति करने योग्य नहीं हैं ? ।।२६।।

धामी सभी छड़ियाँ, चरमर करती हुई चप्पलें, हल्के लाल रंगकी धोतियाँ, सिरपर पगड़ियाँ बाँध, ग्रामकी देख रेख करनेवाले धर्म-तत्पर ग्राम-नेताओंका स्मरण करता हूँ ।।२७।।

शेष यह (ग्राम और समाजका वर्णन) विषयसे (कथा-कथन) सम्बन्धित नहीं है फिर भी हृदयसे उमड़नेवाली वेदनाके कारण ही ऐसा किया गया है ।।२८।।



३ पौलस्त्य हृदयमु

गुरुमुल प्रवक्तृपु मूर्पुसदहुलु
    मिमुम् मुद्दु मोक्कुम्मदिन्
घनुल द्रोणकृपु सील केळामुल
    मुग्गहंडव वच्यु स
तपमुन् गांचिन गुत्तलपडेडि
    चित्त, श्री मयोद्वेग मे
व्वरिचे नी कोमगूडे गर्वधपती।
    वाकृष्णवस्था। पेसन् ॥१॥

स्फुटिमात्रमुचे मूडु भुवनमुलकु
विस्मयमु धरिंपु चागवेल्वीरुस्मट।
मोकु महार्हविसति नाकु नीवु
वोधिकाकोटि पट कोट। वेरपिकेल? ॥२॥

नाकु मोकु भयपटमुनि
    पेसतैन विनाम? ने
डोसकंपम्मुनकुन् पतन्मु कनरावे।
    मुन्तमुन्, भास्कर
रेखाकारत पेन्मु, वायुवुगु
    मुपेद्दद्द् से पोवु, से
वै कल्पान्तपयोधगर्भ कमरावे
    तारकस् राहुटक ॥३॥

चमहासमु म पेयि भारसेनु
वीर्येशिखिमु मी जठरमंधारसेनु
सव्यकार्मुकुचे रामचमामूर्ति
धिमिनीटोकृतिपु मिक सेपसेनु ॥४॥

४ पौलस्त्यका हृदय

[श्रीरामचन्द्रकी लंकापर चढ़ाई करनेके लिए आते देखकर सागरके तटपर रावणके उद्गार]

हे अर्णवपति! फेन उगलते हुए, साँसोंके फूटनेकी आवाजसे आकाशको भर देते हुए उछलते-दौड़ते शिखर वालों और ऊपर उठे हाथ मकर वालेवाले तुम्हारी घबराहट देखकर मेरा हृदय शंकित हो रहा है। यह भय और उद्वेग किसके कारण है? जल्दी बोलो तो ॥१॥

केवल भौंहोंको टेढ़ा कर मन मात्रसे ही तीनों लोकों में प्रलय मचा देनेवाले जगत्‌वीर हैं हम! तुम्हारी रक्षाके लिए मेरे बीस हाथ हैं तुम्हारा वीचि-समूह ही मेरे लिए दुर्ग है। फिर डर किस बातका? ॥२॥

क्या कभी सुना है मेरे लिए और तुम्हारे लिए डर नामकी कोई वस्तु है? आज तुम्हारी इस कँपकँपीका कोई कारण तो दिखाई नहीं देता। भास्कर वैसे ही (यथावत्) प्रकाशमान है वायु भी पहले जैसी ही चल रही है प्रलयकालीन मेघोंकी गरज भी सुनाई नहीं पड़ रही है। तारिकाओंका टूट पड़ना भी नहीं दिखाई दे रहा है ॥३॥

चन्द्रहास (रावणकी तलवार) भी मेरे हाथसे छूटी नहीं है। तुम्हारे गर्भकी अग्नि भी (वाड़वाग्नि) बुझी नहीं है। धनुष हाथमें लिए रामचन्द्र अभी टंकार नहीं कर रहे हैं ॥४॥

एटसु ? चप्पनु ? रायबुडे ! भरेस !
विडुवु कपमु, जोक राविबुमुमतनि
कनुजसौमित्रितो, सूयतनयुतोड
हनुमसो, दशचरचर्कमिमुम सोड ॥५॥

एचाळ्ळकु ! एचाळ्ळकु !
कनुल विसतियु माकु गल्गिनफलमा
सन्नमयि चच्चे ! भुजम
चॉमति चरिसायममु मुहूर्तमु चच्चेम् ॥६॥

माटिकि मेडा ? तस्मुन
मस्टेमु सामिकि विर्भुंठनगरोवितमी
माटलु , दीर्घविलयनमु
चाटिचि चिमुंडु मनु चविचेगदे ! ॥७॥

पातालायियु सोक प्रोचिकति,
　　　　चाची प्राप्नेभुचनयम्मु डा
चेतं चट्टिति चेडिकोड क्षितुसो
　　　　सीताचलैप्रास्मको
पेते चल्लसमाड चेसितिगदा !
　　　　मो विवचविलोम मे
स्त तप्पिपवु सानि नमेरिपि ?
　　　　मेका नन्नु चविचुटस् ॥८॥

शिवकोवंडमु दुंचे, सीत चरियिंचेन्
　　　　रामु डसप्पुडे मा
घनु कायमुकोटि, मार्गम भुजा
　　　　चर्पापहारविम्मा
अवर्णमुम् सरिखाकगा विमनु
　　　　चर्पचेन मुल्कळचे
नविवेकम्मुन गनुगाम कदु
　　　　प्रोद्धारममुन् चेसितिन् ॥९॥

है! क्या कहा? राघव है! फिर कहते क्यों नहीं? अब क्या? इस कॉपर्केपीसे बाज आओ उसके लिए मार्ग दे दो। भाई लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान और बन्दरोंकी सेनाके साथ आनेवाले उस रामचन्द्रके लिए रास्ता दे दो ॥५॥

कितने दिनोंके बाद! हाँ, कितने दिनोंके बाद बीसों आँखोंके रखनेका फल प्राप्त करनेका समय निकट आया है। भुजाओंकी गर्वोन्नति के चरितार्थ होनेका भी मुहूर्त आया है ॥६॥

तबकी बात अब याद आई स्वामीको! वैकुण्ठनगरकी वे बातें—सनकसनन्दनादि मुनियोंके शाप देनेपर अभय-प्रदानकी बातें—अब ध्यानमें आइं। इतनी देरी करके भगवानने मुझ सान्निध्यके सुखसे वञ्चित किया न! ॥७॥

पातालके राजाको तुम बताई शची देवीके प्राणेश (इन्द्र) के कान बाएँ हाथमें से पकड़े। शिवजी और पार्वतीके साथ रजताचल (कैलास)को हाथोंमें पर ले कर हिला या। जानबूझकर भी स्वामीने इस विद्वेष-विक्षोभकी इतिश्री क्यों नहीं की? सब कुछ जानते हुए भी मुझे छलनेमें मजा क्या रखा है? ॥८॥

शिवके धनुषको तोड़कर रामने सीताका वरण किया' यह सुनते ही समझा कि यह माधवका ही काम है। परशुरामके भुज-दर्पके दूरकरनेकी बात सुन एक-एक दिनको एक वर्ष मानकर बड़ी उत्कण्ठासे प्रभुकी प्रतीक्षा करता रहा। अविवेकके कारण उस स्मृतिमें आँखोंके मुँद जानेपर विद्रोही काम करने शुरू कर दिए ॥९॥

हंसघोसिसनगामि मार्किपुर्कत
मषिवक्कगलनीडाये मायपुंडु ,
सागरा ! एमि वर्थिमिपु ? आमकम्म
तल्लिमने हरिरियपक तप्पवाये ॥१५॥

स्वामिद्रोहमुतूड मर्पे पुषकुम्
वैकुंठुधीरीर ! ता
मेमो मार्कितु वास कोवसपडाग्येम्,
पुदि्वलोकम्मु त
ये मेव्वेन दोसगेल्ल वाल्पुवस्ससम्
मित्येम्, महांबोनिधि
स्वामी ! मर्त्युस राजनीति निपुणत्व
वेल्ल विशापुगा ॥१६॥

पट्टिगाट्टि पिचट पूरेगमुडिमा
येमि ? लोकमीति येल माकु ?
सस्कनिम्मु मंचितनयेल्ल चिमुनके ;
मततु ममेम्गुटविय चाकु ॥१७॥

एल्ल एरिगिपुडि एमि एल्लनि
मदनु हरि चरितु मप्पुडपुडु ,
एरिगियेस्सलेक ये ममकला ! पूमि
पुमि मपर्हरिचि मोसपोसि ॥१८॥

इंट मुस पम्पुडी मायमटनमुक
वेमु वेसपुमपु , मेवसुकपि
पर्वजम्मोसगु तंडि से सेवाने !
मामपारि पम्मे महिहकि किमिगि ॥१९॥

इतने कुकर्म कर डाले पर माधवने मेरे पल्ले थोड़ी भी अच्छाई नहीं रहने दी? हे सागर! क्या कहूँ? जानकीमाताको हरने तक दम नहीं लेने दिया ॥१४॥

अरे, अन्तमें उस वैकुण्ठवासीने स्वामी-द्रोह करना भी सिखाया। मुझे जो वचन दिया वह तो मनमें लाते नहीं। और यह व्यर्थ वह उसीकी तारीफ करता है। सारे दोष तो मेरे सिरपर ही मढ़ देता है। हे अम्बुनिधि स्वामी! इन मर्त्योंके राजनीति-कौशलको सुना है न?॥१६॥

क्या मैं यहीं पर घर बनाकर रहनेवाला हूँ? संसार लाख कहे, मुझे डर काहेका? रहने दो सारी भलाई प्रभुके साथ ही। वे मुझे जान लें, मेरे लिए इतना ही काफी है ॥१७॥

सब कुछ जानते हुए भी हरि कभी-कभी ऐसा करते हैं मानों कुछ जानते ही नहीं। जानते हुए भी अनजान बनकर भूमिपुत्रीका हरण कर मैं धोखा खा गया! ॥१८॥

परपर तो ये कपट नाटक नहीं करता था केशव। मोक्षदाता होकर दर्शन देनेवाले मेरे स्वामीको मैं नहीं जानता। वह इस महीपर आनेपर ही मायावी बन गया ॥१९॥

तमवरि श्रेमु रावगिन वारल
मसिटि मूसियुधिनम्
मनमुन नोचि, मन् वरियु
मार्गमुसमिटि चिप्पियुचि, रा
चप्पममवाचिमुह कमुपट्टनि
सुविमोमस मेसमुम्
कनकु मिगुल्नेतिमि कवा!
चिमुवेटिकि आयुचेसेनो? ॥२०॥

कमसकलाप्पमुस मवमिमामुलु
गावुटेरिगि म्रान्तिम
निसुवुनो मसुवोवकमि
निवकुमुमार्गमोकंडे वेसितिम्,
लोकगमि रावबाटगव
तोम्यलि मे गोमिचमवारि, म
मत्मट वेड्रिमन् मिकुतुना?
तम मायमु चेक्कनितुमा? ॥२१॥

रावपुदम पाळ्ळ वनु
रायियु रप्पयुमसु, आसिमे
गावग मासि कोतियुमु
गान्तिमु प्रबुगारु, सोकचि
प्रावगुकुप्रवीरचरित
प्रचितुकसिमानियो वस
वीवुनु पोरिलो बोडिचि
गेम्बुनु जयपुनुगाक, वेकुमे? ॥२२॥

अपने पास आ सकनेवाले सभी मार्ग उसने मेरे लिए बन्द कर रखे फिर मैं भी सहनशील बना रहा। मेरे पास आनेके सभी मार्ग मने खोल रखे और रावणके भयोत्पादक भ्रूविभ्रमोंसे रहित भूमि सूईके नोकके बराबर भी, रख नहीं छोडी। इतना होनेपर भी प्रभुने देरी क्यों की? ॥२०॥

यहाँपर जितने भी मार्ग हैं वे सब तो मेरे पास ही आनेवाले हैं। इन मार्गोंको देखकर तथा थककर कहीं रुक न जायें, इस कारणसे एक सीधा मार्ग, राजमार्ग बना दिया। सीता मार्गके लिए अर्णसे पाया वह तो न मिटनेवाला राजमार्ग है न? मुझे सतानेपर मैं भी क्यों छोडूँ? उसकी मायाको यहाँ कब चलने दूँगा? ॥२१॥

रावणको क्या समझा? वह ऐसे ही पैरों पडनेवाला कंकड-पत्थर नहीं है। दया दिखाकर रक्षा करनेके लिए न स्त्री ही है, न बन्दर ही। न कौआ है न गीध ही। यह रावण तो लोकविद्रावण है उपवीरपरित्राण्ण है अत्यन्त प्रसिद्ध महा स्वाभिमानी है। ऐसा दशग्रीव रणक्षेत्रमें युद्धकरके जीतेगा या मरेगा, पर, शत्रुके आगे कभी नहीं झुकेगा ॥२२॥

पूडुमु नेमसली ! विभुनि
  चूचितिमेकत ! चेप्पुमेट्टमु
पाद्मोरपूड्लंबु, लक्ष्मा
  विरहव्यथ, प्राणि विचिकमु
पादो ? वशास्यकण्ठवळम
  प्रबलापहवृति वेल्गुनु
पादो ? मधिष्यधनुकबम
  द्युतिरचित मेत्रकोपुडे ॥२३॥

विदिनि मारीचुनिचे
विदिनि शूर्पणकचेत, विदि हनुमचे
विदिनि जनकात्मजचे
विदिनि रघुवीर बाहुवीर्यकथनमुल ॥२४॥

पसवात्नु चेविनडुल नयमुन लक्ष्मी
  मुनियम्म वाचक पुनुमु सोमसु
गुनपासु वेसु नीवुन सोबचापम्मु
  विरिचिन न्यूपार बीर महिम
पसपुवद्रुलनिम्मु पस मार्गवक्रोध
  तेम्यमार्पिचिन शौर्यसार
मापि बासिम कोस यसलमै बय्यासा
  पनि बाकि मोक कोस पुनुमु पठिम
विठयेकामि हमिटिमंडे, राच
पट्टमु बोरपि, मारल पट्टि काम
मेट्टिनट्टि येकसमैन विमुतनपु
विठि सामिके तपुनमुकोविकानि ॥२५॥

देखा मित्र, तुमने स्वामीको देखा है न! कहो तो वह रघुकुल तिलक कैसा है! प्रियाकी विरह-व्यथासे व्यथित होकर दुर्बल बना हुआ है। रावणके दसों सिरोंको काट डालनेकी उसकी लालसा प्रबल है न? उसने धनुषवाला और अरुण चोलिवाला रञ्जित चितवनवाला वह कैसा है? ॥२३॥

उस रघुवीरके बाहुबलकी कथा मारीच, शूर्पणखा, हनुमान और जानकीके मुहसे सुन चुका हूँ ॥२४॥

कोमल कपोलवाले वयमें शरमाते हुए, मुनिकी आज्ञासे ताड़काको मार डालनेका वह सौन्दर्य लहराते कुन्तलोंके वयमें शिवधनुषको तोड़ डालनेकी शृंगार-वीररसमहिमा पीले वस्त्रोंमें प्रौढ़पनसे भार्गव क्रोध रूपी सन्ध्याका मिटानेवाला वह शौर्य-सार, पत्नीके बिछोहके नए क्रोधमें वज्रकाय बालिको एक ही बाणसे धराशायी करनेकी वह शक्ति (सामर्थ्य) इन सबके बारेमें मैंने सुना है। पर इनसे भी बढ़कर राज्यपदको छोड़कर, वल्कल पहन जंगलोंमें रहनेकी कठिन दृढ़ताको सुना और समझा कि यह सब स्वामीको ही योग्य है ॥२५॥

श्यामलकान्तिमोहनमु
सौम्यगभीरमु सुप्रसन्नरे
खामुखहासभासुरमु
मधुरस्वरधुर्मन रामु मे
म्मोमुनु मीरचोले गन
मोमनुगाने कठोरवृत्तिनै
सामिनि मुन्ने घोररजसत्र
निर्मितु जासि मुचुटन् ॥२६॥

भिनुमु, दशकंठरूमि विजय विक्रमकीर्ति
वर्धमर्दमि तळतळतळ वसुंगु
चन्द्रहासमे श्रीरामचन्द्रुमकुनु
माकु धर्विचिंपुल मिपोवलोकनम्मु ॥२७॥

तोयजी ! धम्मुडपुनीमु तोलिति मत्स्य
कमठवन्मत मीरे मोपर्वमु हरि,
मेनु वेंडि वरिपनुमाड मिनु,
मेल्लि मिनु मेरि पवळिचु मेमि येचग
मट्ट नु तरंगमालिलुंबगुनु शौरि ॥२८॥

मगुवुर मिम्मुवीचु चरितार्थुल
कावलगामि, मोमु मु
रमोमिन तक्रिमर्दे, बयलो
चनु प्रोल्मिम तल्लिकर्दे, मै
सगमगु सोलर्दे, वरिचर्म
सोनर्मिम तम्मुकटे मी
नगरमिधाति रक्कसुडे
सामिरिक मिविकलि पूर्वे मेल्वसी ! ॥२९॥

तल्लिवेंडि याम्र कुम्मुडु मोवसु मी
कोसल सके वेचे वत्सपुंडु,
वत्समुनकु मेने वेंचिति वेगुसंचे
गोसलोवेणरिहि पवडे येरागु ॥३०॥

श्यामल कान्तिसे मोहक सौम्य-गम्भीर, सुप्रसन्नरेखा मृदु-हास युक्त, चितवनको धन्य बनानेवाले उस रामचन्द्रके सुन्दर मुखड़ेको तुम लोगोंके समान मैं देख नहीं पाया। कारण मैंने कठोर बनकर पहले ही उसे रणयज्ञमें निमन्त्रित कर रखा है न? ॥२६॥

सुनो, दशकन्धरकी विश्वविजय-कीर्तिका दर्पण बन चमकनेवाला चन्द्रहास ही हम दोनोंका परस्परावलोकन संघटित करेगा ॥२७॥

हे सागर! तुम धन्य हो। पहले भगवान मछली और कछुआ बनकर तुम्हारे गर्भमें तैरते रहे। आज वही हरि फिरसे तुम्हें तारनेवाले हैं। परसों फिरसे तुम्हारी तरंगोंसे लालित होते हुए ऐसे लेटे रहेंगे मानों कुछ जानते ही न हों ॥२८॥

यह मानता हूँ कि तुम जैसे लोग कृतार्थ तो होते ही हैं। पर मुखको चूमनेवाले पितासे प्रेमसे दूध पिलानेवाली मातासे अर्द्धांगिनी सीतासे, निरन्तर सेवाएँ करनेवाले भाईकी अपेक्षा भी हे मित्र! जगत्का कण्टक यह राक्षस ही स्वामीको प्रियतम लगेगा मित्र! ॥२९॥

माता-पिता पत्नी भाई आदि तुम सबको उसने बाँध रखा पर मने ही उस वल्लभको एक बड़े मल्लजन्दकमे बाँध रखा है। यह राज कोई दूसरा नहीं जानता। उसीको मालूम है ॥३०॥

श्यामसत्कान्तिमोहनमु
　　सोम्यगमोरमु सुप्रसन्नरे
खामुद्रुहासभासुरमु
　　गमुस्पंडुमुनन रामु ने
म्मोमुनु मीरवोसे गम
　　मोमनुगावे , कठोरवृत्तिनै
सामिमि मुन्ने घोररणसम
　　निर्मभितु असि पुंगुटम ।।२६।।

विनुमु वसकधरनि विश्व विजयकोर्ति
वपर्णवयि तळतळताळ वर्लुनु
चन्द्रहासमे श्रीरामचन्द्रमकुनु
माकु पर्सियिवुत मिपोवलोकनम्मु ।।२७।।

तोयधी ! घम्पुरवुनोवु, तोरिस्त मस्त्य
कमठरूपत मीवे मोगर्ममु हरि,
मेवु चॅडि बरिपमुलाडु मिमु,
मेस्ति मिमु चेरि पचळिवु मेमि येवग
मट्टु_कु तरंगसामिर्तुंडगुगु सौरि ।।२८।।

मगुवर मिम्मुवोंडमु चरितार्थुनु
　　कावमगानि, मोमु मु
रगोमिन तद्विमटे, दयतो
　　जमु घोस्मिम तस्तिमधे, मै
सणमगु सीतकंटे, वरिधर्य
　　कोर्गाचन तम्मुकटे मी
घगवभिषाति रक्तमुडे
　　सामिकि मिमिकमि गूर्धु मेव्वसी ! ।।२९।।

तमिलवट्टि याकु कुम्मुंडु मोवलु मी
चेरस संके चेचे वस्सभुडु ,
वस्सभुमकु मेने चैचिति चेनुसंके
मोपलेसंपरिहि पवडे येदमु ।।१०।।

श्यामल कान्तिसे मोहन सौम्य-गम्भीर, सुप्रसन्नरेखा मृदु-हास-युक्त चितवनको धन्य बनानेवाले उस रामचन्द्रके सुन्दर मुखड़को तुम लोगोंके समान मैं देख नहीं पाया। कारण मैंने कठोर बनकर पहले ही उसे रणयज्ञमें निमन्त्रित कर रखा है न? ॥२६॥

सुनो दशकन्धरकी विश्वविजय-कीर्तिका दर्पण बन चमकनेवाला चन्द्रहास ही हम दोनोंका परस्पराबलोकन संघटित करेगा ॥२७॥

हे सागर! तुम धन्य हो। पहले मंगलोंने मछली और कछुआ बनकर तुम्हारे गर्भमें तैरते रहे। आज वही हरि फिरसे तुम्हें तारनेवाले हैं। परसों फिरसे तुम्हारी तरंगोंसे लालित होते हुए ऐसे लेटे रहेंगे मानों कुछ जानते ही न हों ॥२८॥

यह मानता हूँ कि तुम जैसे लोग कृतार्थ तो होते ही हैं। पर मुखको चूमनेवाले पितासे, प्रेमसे दूध पिलानेवाली मातासे, अर्द्धांगिनी सीतासे निरन्तर सवाएँ करनेवाले भाईकी अपेक्षा भी हे मित्र! जगत्का कण्टक यह रावण ही स्वामीको प्रियतम लगेगा मित्र! ॥२९॥

माता-पिता पत्नी भाई आदि तुम सबको व्यसन बाँध रखा पर मैंने ही उस वल्लभको एक बड़े वल्लन्दकसे बाँध रखा है। यह राज कोई दूसरा नहीं जानता। उसीको मालूम है ॥३०॥

प्रियदर्शनुड पितुल क
मधमुन धरिंपु सर्व मधुनि मयवि
स्मयकारि विसयसमया
हृपमार्व सम्पतुर्लममु मे गतुम् ॥३१॥

एवि पूव पानकि हरियिपुटॅल
संचिपनि पव्वे ! स्वास्मकिम्माहिक वोसिल
एव्वरपचार मोमरिंचि ? ऐव्वरिकिनि
वोरकनि पमाधतनमुलु वोरकु नाकु ॥३२॥

पोस्सेरगरो, पमुल
पुंगवुलम् मपुर्वमाधुलम्
वीरि वधिपरो, किटिनृसिंह
मुखास्युलम् धरिपरो,
गीरनमिधृकोनर्व दवावंकुन
गो पुरुषोत्तमाकृतिम्
वीरि कपूर्वविक्रम
रसम्मुन वारमसेयगावलेन ॥३३॥

पसिमिसम् गाचिकिंचि पुण्यरूपतिम्
वधिपि, समस्ता प
वर्तमुन् वातपर्तिचि, वंटवळ
मारमम्मुवे गीयु व
पितु गार्विचिनपवृत्तुगानु, मुरवैरिन्
मोमु मात्मेषु न
चितु गार्पिवोडि मेटिपकुनिवे
पम्मेन् पक्षहासासिरो ! ॥३४॥

स्वीकृतवीरव्रतपरि
पाकमु, वैरानुबन्ध फलसिद्धि पिवे
मैकरजमप्रमपिमि ! येदु
काकुत्स्थुन कानिभिस वर्तिमपोवपो ! ॥३५॥

प्रियदर्शन हो आश्रितोंको अभयमुद्राके साथ दर्शन देनेवाले उस सर्वभद्रके भय और विस्मयको उत्पन्न करनेवाले प्रलयकालके अद्भुत-मूर्तिके दर्शन, जो अन्योंके लिए दुर्लभ हैं मैं प्राप्त करूँगा ।।३१।।

जरा पीछे मुड़ कर तो देखूँ कि जानकीको हर लाना कितना अच्छा हुआ है! अपनी ही आत्माका किसने इस प्रकार अपकार किया है? मुझे ऐसे अगाधतल मिलेंगे जो अबतक किसीको नहीं मिले हैं ।।३२।।

क्या यह (हरि) युद्ध करनेके मजेको नहीं जानता? मधु कैटभ आदि राक्षसोंका वध नहीं किया था उसने? वराह और नृसिंह आदिका रूप उसने नहीं धरा है? इस प्रकार पुरुषोत्तमका आकार धारण करके उसने दशकाण्ठके गौरवको ही बढ़ाया है। शूरका अपूर्व विक्रम रससे धारण करना चाहिए ।।३३।।

गणोंके पति भिक्षा देकर कुबेरको फेंककर, कैलास पर्वतको समूल हिलाकर, सिर काट-काटकर शिवको धमकाना नहीं है। मुरवैरि, भीम और आरमेशकी भजना करनेका तो यह महोत्सव आया है, हे चन्द्रहास! ।।३४।।

वीरव्रतके स्वीकारकी पराकाष्ठा वरानुबन्धकी फलसिद्धि यही है। हे अनेक-रण प्रणयिनी! देखें उस वाङ्मुखक युद्धकी भिक्षाका प्रबन्ध किस प्रकारसे करोगी ।।३५।।

मेदु पतयपाहमम्, लेमु करवुल वांमप मको
मोरकुलुम्, मुवर्समम् पूमडु, रावणु गेल्पवल्वे वा
मोरदस्टेत मेल्परियो ! पदिमटलपेतुसार ! आ
कसुमुमाजिपेळ हरि ककोनुमारिक मरार्कमिपुडी ।।१६।।

औंटि विसुकाडवे मनु मोर्पु तेगुम
यमहुरा ! रापवा, रापवा ! बजास्पु
नमस्टा ! कूरविक्मु, स्वारमहुनन
पत्तकुनि खेयदुमुर ! मी पावमाम ! ।।१७।।

चिरविरहाग्नि पागु मड चिल्पुल्गुंडमु बोसे वस्मुव
गुरनेंडि बेतुम्मिर्वविट गूरिचिपट्टि, दशास्यमडमिन्
बरिकोनि रावणाग्नि बहुधा बहिर्पिप, सयास्तमम्मु वा
सरचियो पंक्तिकधरुडो, साम्मतमावमु गांचु गावुतन् ।।१८।।

पोम्मुनेर्व्वेलि ! राममूर्तिकि नेडुरेगि पुट्ट,मुसिपमुल छुगु वेट्टि
अरयुस्तम्मुनु मतिगभीरम्मेम गमबोधिमतस्कि गद्देवेट्टि
रमकढे गौस्तुभरत्नमम्मुकटे गा रामेम भणुलु वर्शनमोसगि
संकतु वपु,पोम्मरपुडु सिरिकोस्नु चपिकयो वसम्मु चन्द्रहास

बारितमोर्नचि, आ गंठुबारिचेट
हुवमुन् बोंचि, पेकान्त मिच्छगिचि
स्वपागतमु वस्तुनजि विसपम्मु सस्तु
-मचदने पुनर्वसनमगुत मनकु ।।१९।।

———

न पक्षिवाहन है न हाथोंमें पाञ्चजन्य कौमोदक ही है और न चक्र ही है। बिना किसी हथियारके आनेमें यह दामोदर कितना चतुर होगा? हे मेरे बीस हाथो! अपने पराक्रमका ऐसा प्रदर्शन करो कि हरिको उन हथियारोंको ग्रहण करना ही पड़े ।।३६।।

हे राघव! हाथमें सिर्फ धनुष-बाण लिए अकेले मेरे सामने आनेका साहस मत करो। तुम्हारे चरणोंकी शपथ क्रूर विक्रमशाली इस दशाननको स्वात्महननके पापका भागी मत बनाओ ।।३७।।

चिर विरहकी अग्निसे भड़कती एवं धू धू जलती हुई अग्निके कुण्डको, बीस हाथोंसे पकड़कर, उस रावणाग्निके दसों चेहरोंको जला देते समय इस युद्ध रूपी यज्ञके बाद या तो दाशरथी या दशकंधर ही शाश्वत भाव प्राप्त करेंगे ।।३८।।

जाओ मित्र! रामचन्द्रकी अगवानीमें मोतियोंकी रांगोली सजाकर, अति उन्नत और अति गम्भीर वीचिकाका सिंहासन तैयार कर, रमा और कौस्तुभ मणियोंसे भी बड़े बड़े मणियोंका उपहार देकर लंकामें भेजो।

लक्ष्मीके स्थान बने श्रीवत्सको चन्द्रहाससे विदारित कर उस घरोंच द्वारा हृदयमें प्रवेश कर वहीं एकान्त प्राप्त कर पौलस्त्य श्रीरामका वहीं स्वागत करेगा उनसे जाकर यही विनती करो। जाओ वहीं फिर दर्शन होंगे ।।३९।।



४ गुडिगण्टलु

एलिमल जगम्मुलकु मेलुमरल
      पयिकोम्मु मीव भो
मीळ्ळनु ओल्लाड शर्यनिचित
      देवर ! मेलुको, कृपा
वाल ! भितानुकूल ! श्रुतिपारचर
      स्वरूप ! मेलुको
नीलसरोजपत्ररमणीय
      विलोकन ! मेलुकोपरे ! ॥१॥

नैयम मूलमन्त्रमुलु
      नादिमुलम्मुलु विश्वसृष्टिकिन्
योगिसमाजमानसगुहोचित
      मंगळदीपिकाल्मुल
सागरकन्यका हृदय सारस
      षट्पद गीतिकाल्मुल्
नी मुडिगल सव्वडुलु निनि
      योक्तो मधुरश्लोकमुल ॥२॥

वेदशिखालमलीन मर्रविकसत
      म्मनमरोल पुष्पित
वादिमसर्गमूल मलिकाचित
      रक्षण वलमैन श्री
— पुणम्मु चोल्लगनि,
      पाणितसम्मुलु मोदिच धाम्मुले
६ चीव, भागिल्लुनु मूपकु
      नी गुडिको दयालया ! ॥३॥

४. मन्दिरकी घण्टियाँ

जगोंके शासक बन सात पर्वतोंके ऊपरके शिखरपर श्री और नीळा देवी द्वारा गायी गई लोरीसे शयनका आनन्द लेनेवाले हे प्रभु! जागो। जागो हे कृपापालक! आश्रित-अनुकूला! श्रुतिपारपरतत्-पद पद्मा!* हे नीलसरोज-पत्ररमणीय विलोकना! जागो न! ॥१॥

तुम्हारे मन्दिरकी घण्टियोंकी ध्वनियाँ जो विश्वसृष्टिकी नान्दी रूप निगमोंके मूल मन्त्रोंके समान भागी समाजके मानसरूपी गुफाओंमें उदित मंगल दीपोंकी कान्तियोंके समान सागर-कन्या (लक्ष्मी) के हृदयरूपी सारस (कमल)के भ्रमरके मधुर गुञ्जारके समान हैं आकाशमें फैल रही हैं जिससे सारे लोक प्रबुद्ध (जागृत) बन रहे हैं ॥२॥

उपनिषदोंके मार्गपर आनेवाले अरविन्द सम, अमरेन्द्रपूजित आदि सृष्टिके मूल मणिरूप आश्रित जनकी रक्षामें दक्ष तुम्हारे श्रीचरणोंको दूरसे ही देख हाथ जोड़ धन्य बन जाते हैं ये लोग। हे दयामय! मन्दिरके द्वार बन्द मत रखो! ॥३॥

---

* उपनिषदोंमें प्रतिपादित होनेवाला।

वीकटि कोंपसो मधुकु,
    चिकितलम, मेघि मांटिपास्त, पे
स्माकविकित सकटिमु
    मवाल्मिपुम , अविकित पुप्पुगल
बेकटिकित वप्पिडिमु,
    बेमिव्वि वस्तुकुनन वीरिय
मी कस्पाक्टाक्षरस
    निस्सरमम्मुलु पोंगिपारुतन् ।।४।।

तिमाको परतुले पुम्राडो, मुमोइ
    गुडुचेट्ट.नु मोकु गड्डुमिव,
कट्टेनो मै गोचि पेट्टेमो, दुव्वसुवलु
    बेव्वि मीकिवमु वस्कु मोस्कु,
मीराडेनो धूळि पाराडेनो, सुगधि
    नीरम्मुलार्चु मिन् ऐपुमापु
एडेनो तडिसेनो, एडवालसु
    सोककुड मीरिकि गुळ्ळगोपुरमुलु
मेवुकाबुगवा मितवूडिगम्मु
समुपु, टोपम्नातु गोरिक बेस्मि मवुग
मबुग बच्चिम गुडिबूरि पविम बेचि
कूर्चिचवि कोलेचिक गोप्पवोरवु ।।५।।

अँधेरी कोठरीमें जीवन, उलझ-रूखे बालोंवाले सिर, शरीरपर चिथड़े, भूखका इतना-सा सतुआ और माँडनी रुचिके लिए थोड़ा-सा नमक। पेटके लिए स्वादहीन भोजन और ज्वरपीड़ितको लंघन, (उपवास)—इस प्रकार जीवन-यापन करनेवाले दीनोंपर, अपने करुणा कटाक्षरसमें प्रवाह उमड़ पड़ने दो ॥४॥

स्वय खाये या भूखा ही रहे, पर तुम्हें तो पेटभर तीन बार खिलाता है, स्वय अच्छा पहने या कौपीन ही धारण करे, पर तुम्हारे सिर और शरीरके लिए दुपट्टे ला देता है पानीसे नहाया कि धूलमें ही लोटता रहा पर तुम्हें तो शाम-सवेरे सुगन्धित जलसे स्नान करवाता है धूपमें तपता रहा या वर्षामें भीगता रहा, पर तुम्हारे लिए तो मन्दिर और गोपुर बना देता है धूप-बारिशके बचावके लिए आजसे नहीं न इसका (भक्तका) इस प्रकार सेवा करना। पर किसी दिन उसकी इच्छा तक नहीं पूछी। कभी वह पूछने आया तो तुरन्त मन्दिरमें छिपकर साँकल लगाकर बैठ जाते हो पर्वतपर। कितने बड़े स्वामी हो जी! ॥५॥

———

५. संक्रांति

कुक्कुटम ! मीवु संक्रांतिनि, कोरि मुरिसि
वेट्ट कोमनु बागु र्मामपुल
रायणम्मुन, मीवु संक्रांति वेळ
गर्तिवेय्यकु क्षिरमोसि, कवमनिट्टु
सैनबोस्सके मोग्यमै, तवम्म
दुर्लभमगु विधि बोस्मुवुगवल ।
चमिसियवनु बिनु यमाचारिकि बके
बोस्मरिन मेघगर्जनमुस्मु बिनुम
पूरमुनक्कस वेमुम्मोगु गोकु
बोरि कुक्कुटमुसु कृपु माव बिमिन ।
सामनिकि गोफिसांगम यमव माति
सैमरचिपोकु शिशिरागमम्मुन मोमु
माठ वेंबडि माठ रामामवेमो ?
पोम्मु सिलुक्कु वरिमीव रोम्मु बिरिधि
सिसिचि कूमुनु, मीमीव वस्मु कूप
पुंबोकदि वम्नु, वामि तो बोम्मुंदु
वेळ, वेमुकम वैचि मिम्मोंचिनट्टि
वानि कपकीर्ति वेळिम यम्मानि वेत
विट्टु संदिनि मतुकमु तिमिरि वपु
डोंडे वम्नुदमोंडे वेपुडु गाक ।
सिधि यमम्मुन मा तेम्रु वेसमवोरल
सौर्यमुनु वचिम वाणे, त्वम्मरचमव
वरगपुसिकम्यं, वीवुमजन वेसि
पचिपेट्टमु यममु मिम्मोंचिनट्टि
वोरम्मुनु गुक्कुटमुरेड ! मरचिमाव
मेमुनुवो ? वेवो ? कंठमुनु वमुमट्टि

५. संक्रान्ति

हे मुर्गे*! तुम बड़े सुकृति हो पुण्यवान हो। जान-बूझकर फाँसी पर चढ़नेपर भी इस उत्तरायण पुण्यकालमें मृत्यु दुर्लभ है। ऐसे मकर संक्रमणके समय तुम तलवारके वारके सामने सिर दे, युद्ध क्षत्रमें मरनेवाले वीरोंके योग्य और अन्योंके लिए दुर्लभ स्वर्गको प्राप्त करते हो ॥१॥

युगल पम्ब (एक वाद्य-विशेष) को सुननेवाले गणाचारी§ के समान, प्रथम वर्षाको लानेवाले मेघोंकी गर्जना सुननेवाले मयूरकी भाँति दूसरे मुर्गोकी बाँग सुनकर तुम्हारा शरीर फूला नहीं समाता है।

वसन्तके आगमनपर प्रसन्न होकर देहकी सुध भुला देनेवाली कोयलकी भाँति, शिशिर ऋतुके आगमनको देखकर तुम भी बाँग दे उठते हो।

आओ आओ, रुको मत। युद्ध क्षत्रमें खड़े होकर, छाती तानकर, ललकारो। तुम पर अपना बल दिखाने एक दूसरा मुर्गा आएगा। उसके साथ जूझते समय, पीछे कदम रख, तुम्हें पालनवालेको अपयशका भागी बनाकर और उसकी गालियाँ सुननेकी लिए जीते मत रहो। मरो या मारो।

दुर्भाग्यके कारण हमारे 'वेलम' राजाओंका शौर्य तुम्हार पैरस बँधी तल्वारके आश्रयमें आया, वहीं स्थान ग्रहण किया। उसे

---

*आन्ध्र प्रान्तमें संक्रान्तिके दूसरे दिन मुर्गे लड़ानेकी प्रथा है। मुर्गेके पैरोंमें छोटे-छोटे चाकू बाँधे जाते हैं। जबतक कोई मुर्गा मर नहीं जाता तब तक लड़ाई खत्म नहीं होती।

श्रुतिके अनुसार युद्धमें लड़कर मरनेसे वीरोंको स्वर्गकी प्राप्ति होती है। चाहे ही लड़नेवाला मुर्गा ही क्यों न हो।

§ गणाचारी—आन्ध्रके प्रत्येक गाँवमें ग्राम देवताके रूपमें शक्तिकी पूजा होती है। उस देवताके पुजारीको गणाचारी कहते हैं।

५. संक्रांति

कुक्कुटम ! नीवु सद्गतिवि, कोरि मुरिसि
पेट्ट कोसनु चावु संभवमुल
रायपम्मुल, नीवु संक्रांति वेळ
मसिपेन्मकु शिरमोग्गि, कवनलिद्दु
सैनवीरुलके मोप्पमे, तरम्म
दुर्लभमयु निन्नि चेसुवुगदम्म !
कमिकिम्मवनु चिनु गजाचारिकि वले
दोळ्लकरिन् मेघगर्जनमुल्नु चिनुम
पूरमुनकद्दु वेहमुप्पोंगु नीकु
योरि कुक्कुटमुल कृसु जाव विनिन ।

मामनिकि गोकिलागन यकव माति
मैमरचिपोवु शिशिरागममुन नीवु
माट येवरि माट रामामवेनो ?
पौम्मु निसुवकु करिमीव रोम्मु विरिचि
निक्किचि कुसुमु मीमीव वलमु चूप
पुंजोकटि वच्चु, वानि तो पोरपुवु
वेळ, वेगुकक वैचि विर्लोचिपद्दि
वानि कपकीसि वेचिन यन्नानि चेत
चिट्ट सरिहमि मदुवकु तिनिरि चच्चु
लेरे पन्नुवपोंडे पेमुदुवु गाक ।
विधि यसम्मुन ना लेम्मु पेकमयोरस
गौर्यमुल चन्ति जागे, त्तक्वपनम
यद्गपुभिकर्य, वीनुगव्न चेसि
पंचिपेट्ट मु यज्ञमु निर्लोचिमद्दि
पोरसमुन् मुक्कुवपुरेव ! मरचिनाव
नेसमुवुनो ? लेवो ? कळमुन् पक्कुमट्टि

५. संक्रान्ति

हे मुर्गे*! तुम बड़े सुकृति हो, पुण्यवान हो। जान-बूझकर फाँसी पर चढ़नेपर भी इस उत्तरायण पुण्यकालमें मृत्यु दुर्लभ [illegible]। ऐसे मकर संक्रमणके समय तुम तलवारके वारके सामने सिर दे युद्ध क्षेत्रमें मरनेवाले वीरोंके भोग्य और अन्योंके लिए दुर्लभ स्वर्गको प्राप्त करते हो ॥१॥

युगल पम्ब (एक वाद्य-विशेष) को सुननेवाले गणाचारी§ के समान प्रथम वर्षाको लानेवाले मेघोंकी गर्जना सुननेवाले मयूरकी भाँति दूसरे मुर्गोंकी बाँग सुनकर तुम्हारा शरीर फूला नहीं समाता है।

बसन्तके आगमनपर प्रसन्न होकर देहकी सुध भुला देनेवाली कोयलकी भाँति, शिशिर ऋतुके आगमनको देखकर तुम भी बाँग दे उठे हो।

आओ, आओ, रुको मत। युद्ध क्षेत्रमें खड़े होकर, छाती तानकर ललकारो। तुम पर अपना बल दिखाने एक दूसरा मुर्गा आएगा। उसके साथ जूझते समय पीछे कदम रख तुम्हें पालनेवालेको अपयशका भागी बनाकर और उसकी गालियाँ सुननेके लिए जीते मत रहो। मरो या मारो।

दुर्भाग्यके कारण हमारे 'बल्म' राजाओंका शौर्य तुम्हारे पैरसे बँधी तलवारके आश्रयमें आया, वहीं स्थान ग्रहण किया। उस

---

*आन्ध्र प्रान्तमें संक्रान्तिके दूसरे दिन मुर्गे लड़ानेकी प्रथा है। मुर्गेके पैरोंमें छोटे-छोटे चाकू बाँधे जाते हैं। जबतक कोई मुर्गा मर नहीं जाता तब तक लड़ाई खत्म नहीं होती।

जनश्रुतिके अनुसार युद्धमें लड़कर मरनेसे वीरोंको स्वर्गकी प्राप्ति होती है। चाहे वह लड़नेवाला मुर्गा ही क्यों न हो।

§गणाचारी—आन्ध्रके प्रत्येक गाँवमें ग्राम देवताके रूपमें शक्तिकी पूजा होती है। उस देवताके पुजारीको गणाचारी कहते हैं।

कति कालिकि गसरवु, मेतुरटसु
वरबले पारुगुसमु, वासिपोक
मेडनु रिविकपि, रिप्पुन मोविक्रोगिरि
फठमुन बुवि पूष्पु गस्सुपाक
वोरि मडसेवको कोविपुमुरेड ! ॥१॥

पठनमुन विच गरचोवि बाल्कुंड !
पोतमुन, कम्मवारिकि, वेतमुनकु
ससुपु बास्यम्मु मुंकि मोसम्मु नवि
चिचि पेस्कोसिकिन् वमे वमे पाचु
वोम्मसन् गोमि मो धाममुमकु बोम्मु ।
चिचि चेस्कोकि मुच्चड चेपिवमुस्तु
मस्टताडग मिनु बिस्पुनट्टि तम्मु
गुरे विसिविपुल्मु, मूरि मरिमीड
चस्मु लोकमार्ता ममसत्नु वेचि
पुंडे मानंवबगधि निमोसमार्प
वेतमेडसेनि मीकु सर्वोप्तिनोसगि
बुद्दिकि बिकासमुत्साहमु घटिप
वनिधि तीरंग मचड स्वातम्थ्य वायु
लमु वोस्पुमु मी पोसम्मुसनु विरिगि
वीकुलविस्त विमडाथि विसवाड !
बननियुनु जन्ममूमियु स्वर्ग पुसमु
पिनुबडजेपुमन बिमुपुरुगव
बालुडा ! पूचिरम्मु मी पस्सेवूप ॥२॥

———

(उस धोसिको) ग्रहण कर तुम्हें पालनेवाले उन राजाओंको यश बाँट दो। हे कुक्कुट राजा! भूले तो नहीं यह बात? गलेको कतर डालनेवाली तलवारको प्रतिपक्षीके पैरपर देखकर भी खूनकी धारको देखते हुए भी प्रतिपक्षी पर छलाँग मारकर आखिरी साँस तक लड़कर मरोग या यशस्वी बनोगे? देखेंगे। ॥१॥

नगरमें शिक्षा प्राप्त करनेवाले हे बालक! पुस्तक गुरु और छड़ीकी दासतासे मोक्ष प्राप्तकर छोटी बहनके लिए रंग-बिरंगी चूड़ियाँ और खिलौने लेकर (संक्रान्तिके शुभ समयमें) अपने गाँव जाओ।

छोटी बहनकी प्यारी-प्यारी चेष्टाएँ, अपने साथ खेलनेके लिए बुला-बुलाकर तुम्हें तंग करने वाले छोटे भाईकी जिद्द गाँवके वटवृक्षकी छाया में होनेवाली लोक वार्ताओंकी चर्चा ये सब तुम्हें आनन्द-सागरमें सराबोर कर देनेकी प्रतीक्षामें हैं।

तजोरहित हो तुम्हें सन्दीप्ति देकर बुद्धिको विकसित और उत्साहको संगठित करनेवाले वहाँके स्वातन्त्र्य-वायु प्रसरणमें विचरण करो। चिन्ता और व्यथाको दूरकर स्वच्छास अपने खेतोंकी हवा खाओ हे वत्स!

सुनते हो न कि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग-सुखको भी नीचा दिखाते हैं। जरा इस तथ्यकी सचाईको अपने गाँव जाकर देख आओ ॥२॥

---

६ अज्ञानकृतमु

सॉपुलु गुम्कुर्नोडोयल चुट्टुकुल प्रेम योसंक गासिकिन्
गपमु लेंडु बाहुलतिकल् पेन वैचि, चनम्मु चूडिक मो
हिंपग जेमु प्रुगुगव येकतमट्टुक मेकशाप्य मि
ह्रिपल मोच्चलानिषिवीयण लेपेट्टुकाडे? पुत्रका! ॥१॥

कमुलु मोगिरिष्य चूर्पु तन गाविसिविरुडनु, मीपु मुंचिपो
मिन, गनि तल्लिसीय मिलुवेस्स चसिपगलेट्लु पिट्टु वसि
चुनो, कमुगोंटिचे? कमुपुपुम्ममु चुट्टुण माप्य विम्मुगुल
कमुगोमसेंपु मिडि तोलकन् गमुवारस गुडे मीस्सन्! ॥२॥

कटकट! मिप्रसेचि तम गाविलि चेस्सेबु गामरामि, मि
ममटमपुमाति चॉव मयकाम्मुलु मायग वोंटिमेंमि मु
मपटलकुमासि, येंतदि मियावमु चेंपुलो? चवपुपु; मी
कटिकस्तनम्मु गम पोटुका! मयमम्मेडु मेमिसेतुरा! ॥३॥

वेकुव चलसपालि कमुविपु पतिचेरि पुपुलट, को
कामकमनम्मुनम् मिगुल कामस सम्मुपु मित्र पुचिच, मि
च्चे कडकेपे, सकमरि योकमु पुम्मरत्पविमनपुचि
म्याकुसपाडु पुचि तमया! येटुकौमो? मियावचेकनम् ॥४॥

मिसठिसम चेस्कि 'जननी! यपि कोसिर्मोसगु' मम्म मी
कोमम लेंस्कि विष्यिमनु गोसि योसगेचमेटि, पाप्य ये
कमुलु विचिप जातकमु चन्तस मी बुरमस्य चूचि, या

६ अमानकृत

हे पुत्र ! सौन्दर्यसे खिलखिलाते एक दूसरेकी चितवनोंमें प्रेमके भावोंके उमड़ते, हवासे कम्पित बाहुलताओंसे एक दूसरेको कसकर देखनेवालोंको मोहित करते हुए एकान्तमें मानों एक शय्यापर लेटे हों ऐसे पुष्प युगमेंसे एकको विलग करनेके लिए तुम्हारे हाथ कैसे आए ? ॥१॥

आँखें मूंदकर सोनवाले अपने लाड़लेके तुम्हारे तोड़नेपर देखा ! वह लता-माई शरीर भरक काँपते कसे विह्वल बनी हुई है ? दुख भारसे कलेजेके टुकड़े होते आँखकी कोरोंसे आँसू बहाती उस लताको देखो। देखनेवालोंका चित्त भी पिघला जा रहा है ॥२॥

हाय ! नींदसे जागकर जोड़का फूल अपनी लाड़ली बहनके दिखाई न देनेपर अत्यधिक आर्त बन, मृदुताको भी कौतुकासे हाथ धो कितना विषाद-मग्न होगा ? रे पुत्र ! तुम्हारी निर्दयताके कारण आशंका हो रही है। क्या करूँ ? ॥३॥

ठण्डी-हवा, आँखोंको आनन्द देनेवाली फूलोंकी उस जोड़ीको, बड़े लाड़स डालियोंके झूलोंमें झुलाकर प्रात ही चली गई है। शामको जब वह लौट आएगी तो इस दुर्घटनाको देखकर विषाद-वदनासे उसकी क्या हालत होगी ? ॥४॥

कल शामको तुम्हारी बहनके पूछनेपर मैंने कहा 'जब ये सभी खिल उठेंगे तभी तुम्हें यह फूल तोड़ दूँगी। अब सबेरे उठकर आलोके रन्ध्रोंसे इधर देख उस फूलको न देख गालों परसे आँसू बहाती वह कितना रोएगी ? ॥५॥

बेंगमि ! मीकिबेमि यविवेकमुरा ? परव्यप्रु मोगवो !
यिगमि निष्र 'वीमि निक मेभ्वब मुड्डु बसु गट्ट्‌ग
ट्टें, मिरिगोसि, मभमु पठिवचु, बेमियमानमव्यु मा
मृगष्टुमावबेंस बुरपिस्सुमो ? बिम्बिनप्रुषु गामर्मिन् ।।६।।

वस्लनिप्रेम रसमु बै
मस्सुषु रेयेस्स साके वमुडु बोनिम्
बिलब ! मापठिकिन् बि
तिस्सुषु वन प्रुड्डुणममि बैसस मरपुणा ! ।।७।।

कावनमेंगुपामि, पपकामपु मुस्युषु मातमकृडनी
मामिसिबिडवबे ममवगा सिमु , मा पुष्टु नीडु बिड्रडनि
णा बअपोसि मूरबमु कमुस्मोरिकत्म्म ! तीव मु
तैगुच ! पेदृषमुषुगवा ! कस्मकामपु मोष्टु मेमगुन् ।।८।।

'रे बेवकूफ! यह कैसा अविवेक है तुम्हारा? कलीको देख मत इन्हें किसीको छूना नहीं चाहिए' यह नियम लागू कर रेखा खड़ा कर मत्र पढ़ पानेवाला वह भृगकुमार आज मधु का स्वाद लेने आएगा। खिले फूलको न देखकर वह कितना व्यथित होगा?॥६॥

रातभर शीतल प्रेमरसको छिड़कते रहकर चन्द्रमान इन्हें पाला है। रे बच्चे! आज रातको उस फूलको न देख चारों तरफ उसकी खोज करता रहेगा ॥७॥

अकारण ही मत्युके मुंहमें पड़े अपने लाड़लेके लिए बिलखने वाली तुम्हें मना तो नहीं कर सकती। पर हे लता-सुहागिन! मरे बच्चेको ही अपनी सन्तान समझकर धीरज धर लो न! आँसू मत भरो न! चिरकाल तक तुम्हारी भलाई हो ॥८॥

सौन्दरनन्दमु (द्वितीय सर्ग)

भिक्षागमनमु

चेलिरा कन् गोमयम्मु तुंटविलु मोचेयुनि माळीडपा
दविलासम्मुग मिल्लिपोल्दु सोलगुन् गंधोर्मिकिल्लिनुगा
नवसोक्तिपुलु, कुटुम्मु रत्ति मीलविप, डेंडम्मुनन्
गवियबाटेडि लक्ष्मसुखिकि नमस्कारबु मीनम्मवा ! ।
ननकु महितारमुडम सामयमपविलोक
सवति तम्मुंडु जान्ति मिस्तमुडतडु
नंदुडनु नोरे भावपूर्वकयाडु
सार्वकारम्य सुन्दरि चामि मतिनमिल ॥२॥
केळी मविरमंडु पुष्पलतिका कोडागिडुतम्मुनन्
भासासिनगदकपोलमर्पण दचिन् मारिपुतुन् गुंडन
व्याकोलंडगु गंधमुम्माच स्मरम्यानम्मुनन् पुरु च
भीतापम्मुनु चीनुबोयिमडुमो पास्मन् मवोंसिपुमो ! ॥
पम्तमु गर्वरेखमुनु मासिलु मानिनि, मानसंपदन्
पान्ति दलिर्चु मामिनि, विलासमुडुहासिनि, मास्मसुन्दरि
सम्ससतसेवलं चलुपु नमुनडुन् सुगतप्रकारमो
निकत घेडंगमीन, दर्शियिपुने चामिकि मुक्तिमतंमुन ?।
पातरलाडु तडुम्मकुटिपबिक, येटुल चलियिपु नद्दुलन्
चेतमु तारिविप मरचेन् मुपसुगुडु विल्वसेस्त, चे
मातिगमौ तवोमरविराग विलासमुधाबुराशि वी
चीतति दोप्पवोपि निमयेन् चेलिपुपुल पाप्योसिम्लन् ॥४॥
नडपुल राजहंस, तेलिमनुल चेमेस्वाक प्रेमकू
रेचु गुमुदस्नु वेलेपेर, रेम्मलुवेचु विलास यस्सि, चे
स्मिवि हृदयम्मु गुम्मि चनुमेषिमिषुपु सुमासमेन या
यगुल नवभास्करणि बायप्नोर्वडु छायपुंबलेन ॥६॥

■ सौन्दरनन्द (द्वितीय सर्ग)

भिक्षा-आगमन

[सर्गके प्रारम्भमें प्रार्थना-पद्य]

हे मीनध्वज ! एक हाथमें इक्षु धनुष और दूसरे हाथमें कान तक खींची गई डोरको लेकर आलीढ़ पाद* हो सविलास खड़े होनेवाले तुम्हारे सौन्दर्यको आँख-भर निहारते हुए रतिदेवीके दिए पुष्पबाणको हृदयोंमें धँसा देनेवाली तुम्हारी सव्यमुद्रिको नमस्कार है ।।१।।

महात्मा शाक्य ऋषिका एक सौतेला भाई है। नन्द उसका नाम है। वह कान्तिमान और यौवनसे पूर्ण सौन्दर्यवाला है। उसकी पत्नी सुन्दरी सार्थक नाम वाली है और वह युवतियोंमें श्रेष्ठ है ।।२।।

कलिमन्दिरमें और पुष्पलतिकासे युक्त क्रीडानिकुञ्जोंमें, बालाके दर्पण-सम स्निग्ध कपोल-रुचियोंकी भावना करते हुए, चुम्बन क्रियामें मग्न रहनेवाले और स्मर-ध्यानमें अपनको भूले हुए जिन नन्द सुन्दरके कानोंमें क्या बुद्धके धर्मवचन प्रवेश कर पाएँगे ? इन धर्म वचनोंका उनकी आत्मा तकका प्रवेश हो सकेगा ? ।।३।।

हठ और गर्वरेखासे विभूषित मानिनी मान-सम्पत्तिकी प्रभाव वाली मानिनी विकास-सुहासिनी अपनी आत्म-सुन्दरीको निरन्तरकी सेवाओंसे तृप्त करनेवाले नन्दको जो सुगतके धर्म प्रचारसे अनभिज्ञ हैं ये मुक्तिमार्गके उपदेश कहाँसे पसन्द आएँगे ।।४।।

सुन्दरीकी भृकुटि लताके सञ्चलनके साथ मनके नर्तन करने पर वह राजकुमार सारे जगको भूल बैठा। वेलाको अतिक्रम करनेवाले उसके रुचिर अंगविलास रूपी सुधांबुराशिके वीचिसमूहमें फँसकर तैरता रहा। ।।५।।

बालमें राजहंस स्वच्छ हास्यमें ज्योत्स्ना प्रवाह प्रेमनिष्यन्दिनी मधुर वाणीका मधुकोष नित नई कोंपलोंवाली विलासवल्ली पलभरमें हृदयके आरपार जानेवाली प्रेमभरी चितवनरूपी कुसुमास्त्र वाली वह युवती मन्दभास्करसे छायाके समान विलग होकर नहीं रह सकती ।।६।।

* बाण चलानेके लिए बाण चरणको आगे रख धनुर्धरके खड़े रहनेकी मुद्रा।

पलुकुल सेतमु नेम्मनम्मुलोफ्ट, माविपगारतनि कू
मुलपेर्मुल, पलकाकमन् गसल्वलु, रोपाक्णाक्म्मुगा
विर्लकिपन् पतिमासुटल, पुलकमुरीपिपगायमु मु
र् ल, गिरिगितलु कीगिलितसनु मोर् लपुष्यु माजटकन् ॥७॥

तानासुस्वरलंबु, उम्मेसरिया तम्वंगसायम्म मी
कार्मेवकनिमाम, मौंडोक्ल प्रेमासापक्ळी बिनो
वामूनागुमयम्मुका मदनपिपार्वामिकम्मुल, समुल
कानम् पार गवोयि, कामिजन कोकम्मंबु ना वोर्मिविम् ॥८॥

पिमुराकुयाकु वास्विन वमीवनकु व
स्पमवकु मव्यमूतम्मुनाग,
मत्यन्तमोवम्मु मित्यमागळ्यम्मु
वसवापुकोप्रट्टि भेल्वमंग,
मुपमिपगारानि पुत्साहुमिजयमुल
वोळुनीवै कूडियाडे ममण
गनिबिमि मेवमनि गमनपुष्पमु मूलम
सौरमम्मोक्कल पूरे नाग,
गौतुकमु मोसपिपु मोक्कुक्षोक्कुळ
हुास वीजमाकिर्मिकिपितापुलेक्ल
मधुर मधुरमुल पाण ना मिधुममोप्पु
मालतीबलु मनुप प्राम्पुवेळ ॥९॥

सवलमि कौगिस्तिलकु ववमवलु पेठ्लेसपा]
मेवपवगट्टि पूपुलकु निर्भर मैविगि वि वुसल्पगा
पुगुणकपलु वाडुमधुरोक्तुल माश्मलु हृत, सोम मी
रेवु प्रणयाबुराधि विहरिपुनु वम्मिवुलम्मु विन्तगन् ॥१०॥

मामवमोक्मायककुमारवर्तसमतबु मम्बमो
धार्मविहारि वैषतल्लामियो मावनु गास्तगूढि, यो
मामवकोटि भेरक यमत्युल गूळक पोप्पे भूतस
ताम नवीन सृष्टि परिणाममिटुल मेरवेरेमो यनन् ॥११॥

बाह्य क्रिया मनके एक कोनपर कल्पनामें पर प्रेम-माधुर्यका अनुभव करते रूठना डाँटना नाखूनसे लाल नखोंसे वक्षपर विनय करना पुनर्मिलन करनेवाले चुम्बन गुदगुदियाँ आलिंगन इन्हीं कार्योंमें उस जोड़ीका सारा समय गुजरता। ॥७॥

स्वयं तो सुन्दरतनन्द है और वह शारीरिक लावण्य लीलाओं और आनन्दका एकैक निधान है। परस्परके प्रेमालाप करि विनोद अन्यून अनुभव में सब विधाके उपभोग्य हैं। उस जोड़ीका कामुक-जन-लोकमें कोई सानी नहीं दीखता। ॥८॥

पद्मभवने ही कटार बनाए उस प्रेम संयोग और उसकी प्रमदा के सख्य (उदाहरण) के रूपमें अत्यन्त मात्र और नित्य सौभाग्यके स्थिर निवासके रूपमें अनुपम उत्साह और विजयके एक साथ रहने वालोंके रूपमें अपूर्व आकाश पुष्पके नूतन सौरभसे संयुक्त होनेवाले रूपमें एक दूसरेके कामि विनोदका अमित अनुभव हाव भावोंके द्वारा करते हैं और इस तरह मनमें कौतुक उत्पन्न करते समय आशारूपी लताके पल्लव वयमें (यौवनमें) वह दम्पत्ति बड़ा मधुर जीवन यापन कर रहा था। ॥९॥

ढील न पड़नेवाले आलिंगनोंमें चन्दनके लेपके चूर्ण हो गिरते, विराम न होनेवाले चितवनोंको एक दूसरेके शारीरिक सौन्दर्यमें प्रसाद उत्पन्न होते निरन्तरकी तरह-तरहकी मधुर उक्तियोंके मनप्रसन्न करते सीमाओंका लोप जानेवाले प्रणयसागरमें वह युगल जोड़ी निराले संगम डूबती उतराती है। १०

मानवलोकके राजकुमारोंमें श्रेष्ठ वह मानो नन्दनवनमें विहार करनेवाली देवता-स्त्री हो उस सुन्दरीसे मिलकर न तो मर्त्य ही रहा और न अमर्त्य ही ऐसा मालूम होता है मानो यह सब भूत समुदायकी नवीन सृष्टिका विचित्र परिणाम हो। ॥११॥

मेलेर्पि नन्मुंदु पूलु गोसियोसंग
    सरमुल्लभुग गुम्बरि रंचिपु
मेलस वर्णम्मुमु मेळ्विचिचियिंडग
    हृत्मुमे मतडु चिसल्नु ग्रापु,
कलि सुकुमार भावमु चर्चिचिम ननु
    रूप पद्यमुन गूर्चनु स्तांगि,
मलिय चक्कनिराग मालापिचिन वीण
    पलिकिंपु नतडु मै पुलकरिंप,
मेरसेरल नन्नुनि चूपुलिति याग
    मेंदुनकु गंपुल सिवाळ्ळलेल, मलिय
कल्लनलु कूर्चि किपुमि चल कथादि
    मट्टु चेरनमुनु मल्लकल्नपूक ॥१२॥

प्रालेयगिरिकन्दराविनोद विहार
    पर्लीन सिद्धचपतुलनंग,
विबुध तरंगिणी वीचिकाडोलल
    तूगेडि रागंच वोम्मिपनग
गवितम पकवासवासितमै रसा
    प्रमुम नाडेडि पदार्थमुलनंग,
नागर परिष्कृत मीमांसाहारता
    राम्यमवाडु वीनारमलमग,
वीकुचिम्मल विणादि, चेमुमिमिति,
हृदयसंवेद्यम्मु, मारमकथम्म
मन यच्चय सौम्य रसामृतम्मु
मनुर्भाविंतुय वाच निरंतरमुम ॥१३॥

मनुकु निपकम्मयेति पम्पारिपटल
विरति सेंनि स्वप्नम्मुगा चकप चोलु,
मनुकु निपकम्मुगाक स्वप्नमगुनेनि
सत्यमै तोपचोलु मायपटुमकु ॥१४॥

नन्दके श्रेष्ठ फूलोंके चुन देनेपर, सुन्दरी सुन्दर हार गूँथती है। सुन्दरीके रंग मिला देनेपर वह मनोज्ञ चित्र रचता है। पतिके किसी सुकुमार भावके कहनेपर वह उसे अनुरूप छन्दमें जुड़ाती है। पत्नीके सुन्दर रागका आलाप लेनेपर वह शरीरको पुलकित करनेवाले रूपमें वीणा बजाता है। रतनारी रेखाओंवाली नन्दकी चितवन सुन्दरीके मुखचन्द्रकी मानिकोंकी आरती उतारे तो सुन्दरीकी कजरारी चितवन प्रियतमके वक्ष-कपाट नीलोत्पलोंकी वन्दनवारसे सजाए। ॥१२॥

मानो वे हिमगिरिकी कन्दराओंमें विनोद विहारमें तत्पर सिद्ध दम्पति हों आकाश गंगाकी लहरोंपर झूमनेवाले राजहंसकी जोड़ी हों कविमन-पंकजके मधुसे सिक्त हो रसनाग्रपर नाचनेवाले वाक् और अर्थ हों आनन्द परिफुल्ल मुनिनाथोंके हृदयाकाशमें विचरनेवाले जीव और आत्मा हों। इस प्रकार चिन्ता-दुःखसे परे हो सौन्दर्यमय बन व दम्पति निरन्तर ही हृदयसंवद्य और आत्मैक गम्य अद्वैतसुखके रसामृतका उपभोग करते रहते हैं ॥१३॥

यदि जीवन ही सत्य है तो वह उनके लिए अविरत स्वप्न-सा अथवा जीवन सत्य न होकर स्वप्न है तो वह उनके लिए सत्य-सा दिखाई देता है ॥१४॥

ऐहिकविचारमुल मेल्ल ममत ब्रोचि
संगमेल्लमि यानन्दपरमयोग
रति मेसंगुचु, भामिनि राकयोक
मरयनेरनिमळ मुप्परपु मोकट ॥१५॥

तमकुन् बायट चक्कविद् सुमनोबाणम्मु वेणीभर
म्मुन गूर्पन् पलपम्मुभङ्, विल्लम्मुन् दीर्प, विजामर
म्मुनु बाल्पन् सविसप्त मन्मुनि करांभोजातयुग्मम्मुनन्
पलितारत्नमु दपणम्मु निडि निल्व जेसि तामन्तटन् ॥१६॥

महमुलोन मीलमुनु, महमु शाल्मल नापु मोमुनन्
मुद्दुल गुल्कु मोसमुल पोल्यु गनुगोनुचुन् मृगीमदं
बहिन मगुळीकिससम्यम्मुन घेफुल बमभगमुल
विद्दुकोनबोडंगे मुवलोमणि नेल्पुमीर मध्युचुन् ॥१७॥

ससन कपोलदपणमुलन् रचिमिचेडि पमभमनुल
तेम्मिरलुकोलु मुत्तियपु दीविदुलन् पलकोलु सेत म
म्मोलग्मग भूपुनधुणपुड इ हनियूचिन, मूर्धमुक्ल
तळ्तळलाडुचुन् मेरपु दर्पणमुन् गनुमाय मेसिनन् ॥१८॥

नातिपु नापु तुळरितमम्मुनकुन मवि मेल्पुपुट्टिपुन्
बेतमु डाचि, ऐप्पतुल जिवेडु चिर्नमचम्पळिचि, रो
पातिकपाय मोक्षणशितास्त्रपरंपर नार, नेपुडाल
पातेर कपमव गुटिल प्र.कुटीलसलाटपट्टपै ॥१९॥

'ई पलुगाकिसेतलिपियेल्लमु मेर्तुनु लेस्ससाये, मे
नोपनु नु म्मर्दनु भवजोत्पलमुन् नोसिचेवे गाल्चुनिम् ,
नूपुर कंकणक्वण मनोहरमानमु मीर मारमो
न्म पेडबासिपोभुसति कप्पुमुपाणनुवेंचि नवुचुन् ॥२०॥

सभी सांसारिक दुःखोंको दूर हटाकर, अविच्छिन्न आनन्द परम योगसे आसक्त होकर, सूर्यके आवागमनको न जान सकनेवाली प्रेमामें एक बार सुन्दरी ने ॥१५॥

नन्दकी माँग सँवारकर वेणीमें फूलोंका हार खोंसकर अंगराग लगाकर ठीक तौरसे तिलक लगाकर और पत्र-लेखनके बाद [illegible] ही कर-कमलोंमें दर्पण देकर नन्दको खड़ा किया और स्वयं ॥१६॥

दर्पणमें अपना प्रतिबिम्ब देखकर खड़े हुए प्रियतमके सुन्दर मुखड़ेपर प्यारी-प्यारी मूँछोंकी सुन्दरता निहारते हुए मुस्कराते हुए मृगमदसे रँगे अँगुली किसलयसे गालोंपर बड़ी चतुरतासे मकरिका पत्रों*को रचने लगी ॥१७॥

सुन्दरीके कपोल दर्पणपर बनते मकरिका पत्रोंको स्वच्छ मोतियोंकी कान्तियोंको मात करनेवाली मुस्कुराहटके साथ देखनेवाले नन्दने दर्पणपर जोरसे फूँक मारी। उसके छींटोंने दर्पणको धुँधला बनाया। ॥१८॥

सुन्दरी प्रियतमके नटखटपनपर मन-ही-मन प्रसन्न हुई पर अपनी इस प्रसन्नताको उसने छिपाकर पलकोंकी कोरोंसे झलकनेवाली मुस्कराहटको बाहर न छलकने देकर, रोषके कारण अत्यधिक अरुण बनी चितवनकी पैनी अस्त्र धाराका प्रयोग करते हुए अरुणाधरोंको कम्पित कर तथा कुटिल भृकुटियोंसे युक्त ललाटवाली बनकर इस प्रकार कहा ॥१९॥

'तेरे नटखट कार्योंको तो खूब जानते हो ठीक है पर मैं इन्हें सहनकी नहीं।' यह कहकर प्रणयात्मकसे कान्तको मारा। नूपुर और कंकणोंके झनकारके साथ खटकते-मटकते, मुँह फेरकर चली जानेवाली प्रियाका रास्ता नन्दने रोक लिया। ॥२०॥

---

*मकरिका पत्र—मगरके आकारका बना हुआ चन्दनका चिह्न जो प्राचीन कालमें स्त्रियाँ अपनी कनपटियोंपर बनाती थीं।

पैटचेरंगु पट्टिनिलुपन् चेलि कोंगु तेमल्चिकोंचु 'मु
म्माटिकि मधु मुट्टेनु सुमा ! यिदेयों' द्रूनि मुट्ट मस्क, 'स
य्याटकु मुह हृटम पलुका ? मुसुकुल बसे रेंब मुन्चि पो
माटेनु वाडिपूचु रसना ! मनि मुट्टेनु वस्पकठयिन् ॥२१॥

मोठ्ठितत प्रफुल्ल कुसुमम्मुनु मुचुग रास, मागतनि
वालि सवाप् सन्, चेरपु पैकोनु पूडिक मोगम्मुनैति 'न
सेलिन वेचि ! पुपुडुवसेत विपिचेतु मोमुब्रिप्पि, ग
ग्गोसुप बुम्मन' प्रियसकुन्तमु माहृदयम्मु कूयिबम् ॥२२॥

वोसमुपल्गो नावसन वोसिसिप्पोर्गिाति मेकुक्रोम्मु, मी
वासुव मम कागुममि तम्वि पकामुन नम्वि यिम्सलो
मे सकलेम् गवोपि, यिसिसी ! मर्मविकम्मुक्तिपाटिचा,
कासरकूसरति मनि, कोंगिविकि डिगि चेनकुमुम्मुपुन् ॥२३॥

नडकट ! पापमु सिमुक गैकोनि, पनपुर्गपुर्वमियन
मुपपुटलेम मस्लिपु, कपोसमु चेस्चेसनारर्भोसितिन्
पटिकपेकवाम ममि, कतिन मम्मुनि सिदुकेव मु
रंटपोने, वेनकुन्टहमुल रापमु चिवम मुपढुपेट्टुमुन् ॥२४॥

सास्पनमृकृत्तिनपुर ! चिवमकार्य
निपुण ! नमाव ! वरिमेनि मी मगाव
हृदयराज्य मेकच्छत्र मेसमुत,
मेठम् मसिसो ? मी नपुहृदयपुरासि ॥२५॥

मपराधप्रियकारिता मघनवती प्रेम बीलासुधन
गुपमै मज्वपसीतरगमुन मिर्कोपपित्र, मी वासुरा
लिम्पमिन् पुपु ननुषहम्मुनकु गस्पितुम् मवासमांसुव
म्मुपचारम्मुग मम्पमननल मेट्मो स्वीकरिंपगदे। ॥२६॥

ममि मम' प्रियमुग्ध भावनमु ससर
मगकुनन् वासिम स्तांपि मास्म चोंचि,
पापलम् मनकविमुवु फाकलम्मु
मुदयुपोनि, तेरकोन मातिमोमु मेरिचि ॥२७॥

आँचल पकड़कर नन्दके रोकनेपर अपने आँचलको छुड़ाते हुए उसने कहा–"देखो तुम्हें मेरी कसम है तुम मुझे छूना मत।" अरे विनोदके लिए फूँका तो इतनी रूठ गई और तुम तो तीरों-सी पैनी चितवनसे मेरा हृदय बेंध रही हो।" यह कहते हुए नन्दने उसके चरण छू लिए। ॥२१॥

अपने सिरके प्रफुल्ल कुसुमोंके पहले गिरनेपर उसके पर पड़, सहमी हुई दृष्टिसे मुख ऊपर उठा–'हे मेरी स्वामिनी! मुँह फेरकर चितवनोंका फन्दा क्यों कस देती हो जिससे तेरे मनका प्रिय शकुन्त पक्षी रूपी मेरा हृदय चिल्ला उठे, तड़प उठे।' ॥२२॥

'मुझसे अपराध हुआ है हाथ जोड़ता हूँ मेरी रक्षा करो न। मैं तो तुम्हारा दास हूँ।' ऐसा कहनेवाले कान्तको देख वह खिलखिला उठी और बोली, 'बस! इतनसे ही ढीले पड़ गए? छि हमारे नाम इतनासा है? इतने सहम गए।' उसे आलिंगनमें ले, गालोंपर हाथ फेरते हुए कहा। ॥२३॥

हाय-हाय! इस पापी क्रोधने मेरे प्रियके अनोखे मनोहर अरुण कपोल फीके बना डाले। कितनी निष्ठुर हूँ। डपटे हुए नन्दके हृदयको प्रशान्त करते, कपोल-दर्पणोंको चुम्बनोंसे अरुण करते हुए कहा ॥२४॥

सान्त्वना देनेवाली सूक्तियोंमें चतुर! विस्रम्भ कार्योंमें निपुण! हे मेरे नाथ! असीम और अगाध तुम्हारे हृदय राज्यपर एकछत्र रूपसे राज्य करना चाहनेवाली इस मधुहृदयाको कैसे क्षमा कर दोगे? ॥२५॥

अपराध करनेसे और प्रीत करनेसे नव नव बने इस प्रेम लीलाकी सुधाको कृपाभावसे मेरे चपल अतरगमें धरोहरके रूपमें रख इस दासीपर दरसाने खास अनुग्रहके लिए हृदयकमलको सेवामें समर्पित करती हूँ। इसे अल्प न समझ स्वीकार करोगे न! ॥२६॥

इस प्रकारके मनके प्रिय और मुग्ध वचनोंमे प्रसन्न करते हुए, वक्षस्थलपर झुकनेवाली लतांगीको आलिंगनमें लेकर माँग सँवारते हुए उसके ललाटको चूमते हुए तथा केशराशिसे घिरे हुए उसके मुखको देखते हुए नन्दने कहा ॥२७॥

पैटचेरगु पट्टिनिमुपग्, चेलि कौंगु तेमस्विकौंगु 'मु
म्माटिकि ममु मुट्टेवु मुमा! मिरेयो' टुनि मुट्ट चाल्क, 'स
म्याटकु गुह हटल यशुका? मुलकुल वसे ठेंव मुभ्मि पो
माटेवु पाडिचूपु ममना!' यनि मुट्टेमु वल्पमठमिन् ॥२१॥

मौळिलस प्रफुल्ल कुसुमम्मुनु मुभुग राल, मागतनि
चालि तवंपु मन्, चेरपु पैकोनु पूर्डिक मोगम्मुनेत्ति 'म
म्मेलिम देवि! पूप्रदुस्लेस विगिचेवु मोमुश्मिमि, ग
गोस्नुम भुम्मन' प्रियसकुन्तमु नाहृदयम्मु पूर्यिवन् ॥२२॥

पोसमुगल्नो मावल्म बोसिस्मियोग्गिति मेस्कुकोम्मु मी
वासुव मम कागुगमि तम्पि पकाशुम मम्पि यिम्नतको
मे सवलेम् गवोयि, यिसिसी! ममचिवम्मुगिलतपाटिचा,
कासरमूसरैमि मनि कौगिटिकि विपि चेमकुगुम्मुगुन् ॥२३॥

कटकट! पापमुं गिनुक पैकोनि, यवपुर्यपुचभियम
पुटपुटलैम मस्मियु कपोलमु चेस्वेस्मारवोसिसिल्
पटिकयेवववस ननि, कविन नम्बुमि मिगुवेव मु
रैटमोम, चेमकुटवमुक रागमु चिवग मुपुपैस्वेडुपुर ॥२४॥

सांत्वनमूकुमितमपुर! विवंभकार्य
निपुण! मखाव! वरिसेमि मी यगाव
कुवमरात्म मेकलकम मेस्मूत,
मेटमु मभितो? मी ममुहृवयुरामि ॥२५॥

मपराधप्रियकारिता ममममवी प्रेम लीलासुखम्
गुपसे मम्मपमातरंयमुम निलेपिवि, मी वामुरा
लिम्पचिम् पूपु ममुभहम्मुमकु गलिपवुन् ममारमोमुल
म्मुपमारम्मुग मस्पर्मममक मेलसो स्वीकारियगवे। ॥२६॥

मनि मम' प्रियमुग्ध मावपमु ममर
ममकुम्मन् वालिम मस्तीर्थ मारम चोवि,
पापटम् ममकोविकुपु फाम्मतम्मु
मुरटुगोनि, तेरकोम मार्तिमौमु पेचि ॥२७॥

आँचल पकड़कर नन्दके रोकनेपर अपने आँचलको छुड़ाते हुए उसने कहा—"देखो तुम्हें मेरी कसम है तुम मुझे छूना मत।" अरे विनोदके लिए फूँका तो इतनी रूठ गई और तुम तो तीरों-सी पैनी चितवनसे मेरा हृदय बेध रही हो।" यह कहते हुए नन्दने उसके चरण छू लिए। ॥२१॥

अपने सिरके प्रफुल्ल कुसुमोंके पहले गिरनेपर उसके पैर पड़, सहमी हुई दृष्टिसे मुख ऊपर उठा—'हे मेरी स्वामिनी ! मुँह फेरकर चितवनोंका फन्दा क्यों कस देती हो, जिससे तेरे मनका प्रिय शकुन्त पक्षी रूपी मेरा हृदय चिल्ला उठे तड़प उठे।" ॥२२॥

'मुझसे अपराध हुआ है हाथ जोड़ता हूँ मेरी रक्षा करो न। मैं तो तुम्हारा दास हूँ। ऐसा कहनेवाले कान्तको देख वह खिलखिला उठी और बोली, 'बस ! इतनेसे ही ढीले पड़ गए ? छि हमारे मान इतनासा है ? इतने सहम गए।' उस आलिंगनमें ले, गालोंपर हाथ फेरते हुए कहा। ॥२३॥

हाय-हाय ! इस पापी क्रोधने मेरे प्रियके अनोखे मनोहर अरुण कपोल फीके बना डाले। कितनी निष्ठुर हूँ। लपटे हुए नन्दके हृदयको प्रशान्त करते कपोल-दर्पणोंकी चुम्बनोंसे अरुण करते हुए कहा ॥२४॥

सान्त्वना देनेवाली मृदूक्तियोंमें चतुर ! विस्रम्भ कार्योंमें निपुण ! हे मेरे नाथ ! असीम और अगाध तुम्हारे हृदय राज्यपर एकछत्र रूपसे राज्य करना चाहनेवाली इस मधुहृदयाको कैसे क्षमा कर दोगे ? ॥२५॥

अपराध करनेसे और प्रीत करनेसे नव नव बने इस प्रेम लीलाकी सुधाको कृपाभावसे मेरे चपल अंतरंगमें धरोहरके रूपमें रख इस दासीपर दरसाने वाले अनुग्रह लिए हृदयकमलको सेवामें समर्पित करती हूँ। इसे अल्प न समझ स्वीकार करोगे न ! ॥२६॥

इस प्रकारके मनके प्रिय और मुग्ध वचनोंसे प्रसन्न करते हुए, वक्षस्थलपर मुकुलवाली लतांगीका आलिंगनमें लेकर माँग सँवारते हुए उसके ललाटको चूमते हुए तथा केशराशिसे घिरे हुए उसके मुखको देखते हुए नन्दने कहा ॥२७॥

पैटचेरंगु पट्टिनिलुपन्, जेसि कौंगु तेमस्चिकोंपु 'मु
म्माटिकि ममु मुट्टेदु सुमा ! यिबेयो' दुनि मुट्ट मल्क, 'स
य्याठकु नुह हृटस मसुका ? मुलुकुल पले डेव भुल्लि पो
माटेकु वाडिपुपु ल्लमा !' मनि मुट्टेनु वस्यवझमिम् ॥२१॥

मौळिसल प्रफुल्ल कुसुमम्मुल मुमुग पाल, माम्तनि्
वासि सवंघ_सन्, वेरपु पैकोनु चूड्कि मोगम्मुनेस्ति 'म
प्रेसिन पेवि ! चूपुटुसलेल विगिचेवु मोमुत्रिप्पि, प
ग्मोसुग हम्मन' प्रियवाकुल्तमु माहृचयम्मु कूमिकन् ॥२२॥

दोसमुगल्पे मावक्कन वोसिसिम्पोग्गिति मेसुकोम्मु मी
वासुड मध कागुमनि, तम्बि पकासुन मम्बि यिम्तसो
ने सडसेम् गवोय्यि, यिसिसी ! मनविकमुसिस्तपाळिका,
कासरकूसरैति ममि, कोगिर्ळिकि विणि चेक्कुनुम्मुचुन् ॥२३॥

मट्कम ! पापपु मिमुक गेकोनि, यवपुर्गेपुमस्थियन
पुडपुटनम मस्प्रिपु, कपोलमु वेस्वेस्पारवोसितिम्
गठिम्पेडवान ममि, कविन मम्मुनि निवुवॅव मु
रैठमोन, नेक्कुट्टमुल रागमु चिमग मुंदुपेदुदुचुन् ॥२४॥

सास्वमनूकुल्तिमधुर ! विवमकार्य
निपुण ! ममान ! वरिसैनि मी मगाव
हृदयराज्य मेकच्छत्र मेलमूत,
मेटकु भक्तितो ? मी कपुहृदयमुरालि ॥२५॥

अपराधप्रियकापिता ममनवी प्रेम सीलासुधन्
गुपमै मज्जपलातरगमुन निर्कोपिचि, मी वासुरा
स्पियिन् चूपु मनुपाहम्मुनकु गस्पितुम् मवारमांघुच
म्मुपचारम्मुग मस्पमैचनक येटसो स्वीकारिपगदे । ॥२६॥

अनि मन' प्रिममुग्ध माव्यमु ससर
मम्कुमन् प्रासिम सतांपि नासम चौंचि
पापटन् चक्कविमुगु फाम्तसमु
मुरडुगोनि तेरकोन नातिमोमु मंचि ॥२७॥

'यसुक मोयिल्कुळ माटुन इवास्य विषुडु मुहूर्तमुडि पु
ष्प्पलहरहास यग्निकलु पर्वग चेडि प्रसन्न डोट यो
कलिकि ! विमृतमोन्ससमु मावोको ? मिघुर मिटसु साकु पे
म्पसपुत्तकाम्पवलिक कतिका ! घिविधेणव बोहदभ्रियम् । ।।२८।।

पाषिद्रम्बमु मुनि मौगिट पविपन भूतुनिम्, मीकु वि
सापमुन् मरि बोर्पिसिम्पवम्मुन्, मा भूट्टुकन् ब्रामुडुन्
मी मध्यामृतवीकजम्मुक्ष्नु, मी निजवास सौगम्य मा
पार्णिसुन् मेयियेस्क पापमुनुगा, तैमोह्तु मोचेस्वुकुन् ।।२९।।

रागरचित मन्मनोरस्म मिस
प्पित शाकमम्मु कोर्मरिचि यिति ! मीकु
कंठहारम्मु मोर्नरिदु, गडमयिडक
विनुदु हृदयप्रणयम्मु विवावफमिति ! ।।३०।।

चेलरि ! मी रागस्तक पुष्पिपुमट्
सी मनोरमपुलु फलयिपुनद्सु
दच कोरसि पाच मी ममता जचति
येलिभोचमु पेरततपेल ममकु ? ।।३१।।

मरमरमेनि कूस्मुम नाडुमु वाडुमु वैमशीघुपा
मरतुलमी चरितमु, मनस्विनि ! योस्तुम बश्रसंगमुल
विरचन सल्पुको 'म्ममुमु' चौडिपु मंडमसाक्षिभूतमुन्
सरमुमु चाल्चि मिस्वेनु[हृसम्मुसुचीमु मेस्मुलद्दमुन् ।।३२।।

दर्पणमु चाक्षिच निस्विम छघुमि मोमु
मेडमेड गमुणोनुमु रचियिपुकोनिये
चेलिम्प मुमुखेमकुलनु विक्षेपकम्मु
मेम्मोणम्मु सर्वमसाम्मम्मु बोरम ।।३३।।

हे प्रिये ! 'प्रणयक्रोध रूपी मेघोंकी आड़में तुम्हारा मुख चन्द्रका थोड़ी देर रहकर, फिर उज्ज्वल-मन्दहासकी चन्द्रिकाओंको बिखेरते दर्शन देना क्या एक विनूतन उत्सव नहीं है ? हम दोनों द्वारा पाले जानेवाले हमारी प्रेमकी कल्पलतिकाके लिए ये ही दोहदकी क्रियाएँ हैं न !' ॥२८॥

अपनी दोनो बाहुओंद्वारा तुम्हें आलिंगनमें कस लेना चाहता हूँ,तुम्हारे चातुर्यके सामने हाथ जोड़ना चाहता हूँ,तुम्हारे नव्य अमृत वीक्षणोंको अपनी चितवनोंसे पीना चाहता हूँ देहभर मानो नाक बना लिए हों तुम्हारे निश्वास सुगन्धका आनन्द लेना चाहता हूँ। तुम्हारे सौन्दर्यको प्रणाम है।'॥२९॥

राग रंजित मेरे मनोरत्नके इतने टुकड़े कर दिए न उन्हें तुम्हारे कण्ठका हार बना दूँ। मेरे हृदय प्रबन्ध (काव्य) को विशद रूपसे सुना दूँगा' ॥३०॥

हे मानिनी ! इन रागलताओंका पुष्पित करते मनोरथोंको फलीभूत करते हुए, किनारो रूपी बन्धनोंको तोड़कर प्रवाहित होनेवाली इस ममता रूपी नदीमें ऐसी स्थितिमें अन्य बातोंकी हमें चिन्ता ही क्या ? ॥३१॥

भेदभावसे रहित प्रेममें प्रसन्न हो प्रेमसुधा पानरत हो रहेंगे। हे मनस्विनी ! अब तो पत्रभंगों* की रचना कर लो।' यह कहते हुए और प्रसन्न मुख हो सरस चित्तवाले नन्द मण्डनसाक्षीभूत उस दर्पणको हाथमें ले खड़ा हो गया ॥३२॥

दर्पण हाथमें लिए खड़े प्रियतमके मुखको कभी-कभी देखते हुए अपने स्निग्ध कपोलोंपर विन्यासों (चित्रकों) की रचना कर सो जिससे उसका मुख शैवालसे युक्त अब्ज-सा सस्मित हुआ ॥३३॥

---

*पत्र भंग—चित्र या रेखाएँ जो सौन्दर्य वृद्धिके लिए स्त्रियाँ कस्तूरी केसर आदिके लेप अथवा सुगन्धित-स्पर्श पत्तोंके टुकड़ोंसे गाल कपोल आदि पर बनाती हैं। माथे और गालपर की जानेवाली चित्रकारी अथवा बलबूटे।

'मनुक मोयिळ्ळ माटुन इवास्य विमुडु मुहूर्तमुनि पु
क्वलस्वरहास वन्निकलु पर्वग वेँडि प्रसरु डोंद पो
वलिकि ! विमूतमोस्सममु मावोको ? मिर्युर मिटलु साकु पे
म्बलपुस्मकस्पवल्लि कतिवा ! यिमियेगव वोहुवमियम् ! ॥२८॥

पामिडम्मम् नुनि कौगिट गर्विपन भूतुमिम् मीकु वि
मार्पमुम् मरि वोयिसिम्पवल्मुम्, मा भूवकुल्न् डापुम्
मी मध्यमृतमीमजम्मुल्नु मो निश्वास सौगंध्य मा
घ्राणितुम् मेयियेल्क पावमुलुगा गैमोहृतु मोवेल्मुन्न् ॥२९॥

रागरंजित मम्मनोरत्न मित
यित शकलम्मु स्रोमरिचि यिति ! मीकु
कळ्हारम्मु नोर्मरितु, गडमयिवक
मिमुतु हृदयप्रचयम्मु वियवफणिति ! ॥३०॥

देववि ! यी रागस्तनु पुष्पिंपुमह.
स्री मनोरथमुलु फलमिंपुनटलु
वद सोरसि पाव मी ममता लचलि
देसिम्पोवमु पेरतलयेल ममकु ? ॥३१॥

मरमरलेमि नूल्मुल मासुपु मासुपु, वेमलीमुपा
नरलुम्मी चरितमु, मनसियनि ! वेल्कुल ववमगमुन्
विरचन सल्मुको 'म्मगुपु' वेँडिपु मेवमसाविमूतमुन्
सरल्लुपु चान्चि निल्चेगु[हसम्पुलुगीपु मेवमुट्वमुन्न् ॥३२॥

दर्पणमु चाम्चि निश्चिम घवुनि मोमु
नेवनेव गमुणोतुपु रचियिपुकोमिये
वेमिम्प मुगुवेमुलेकु विनोवकम्मु
नेम्मोघम्मु सर्वभलाम्मम्मु वोरय ॥३३॥

हे प्रिये ! 'प्रणयक्रोध रूपी मेघोंकी आड़में तुम्हारे मुख चन्द्रका थोड़ी देर रहकर, फिर उज्ज्वल-मन्दहासकी चन्द्रिकाओंको बिखेरते दर्शन देना, क्या एक चिनूतन उत्सव नहीं है ? हम दोनों द्वारा पाले जानेवाले हमारी प्रेमकी कल्पलतिकाके लिए ये ही दोहदकी क्रियाएँ हैं न !' ॥२८॥

अपनी दोनों बाहुओंद्वारा तुम्हें आलिंगनमें कस लेना चाहता हूँ,तुम्हारे चातुर्यके सामने हाथ जोड़ना चाहता हूँ,तुम्हारे नव्य अमृत वीक्षणोंको अपनी चितवनोंसे पीना चाहता हूँ देहभर मानो नाक बना लिए हों तुम्हारे निश्वास सुगन्धका आनन्द लेना चाहता हूँ। तुम्हारे सौन्दर्यको प्रणाम है। ॥२९॥

'राग रंजित मेरे मनोरत्नके इतने टुकड़े कर दिए न उन्हें तुम्हारे कण्ठका हार बना दूँ। मेरे हृदय प्रबन्ध (काव्य) को विशद रूपसे सुना दूँगा' ॥३०॥

हे मानिनी ! इन रागलताओंको पुष्पित करते मनोरथोंको फलीभूत करते हुए, किनारों रूपी बन्धनोंको तोड़कर प्रवाहित होनेवाली इस ममता रूपी नदीमें ऐसी स्थितिमें अन्य बातोंकी हमें चिन्ता ही क्या ? ॥३१॥

भेदभावसे रहित प्रेममें प्रसन्न हो प्रेमसुधा पानरत हो रहेंगे। हे मनस्विनी ! अब तो पत्रभंगों* की रचना कर लो।' यह कहते हुए और प्रसन्न मुख हो सरस चित्तवाले नव्य मण्डनसाक्षीभूत उस दर्पणको हाथमें ले खड़ा हो गया ॥३२॥

दर्पण हाथमें लिये खड़े प्रियतमके मुखको कभी-कभी देखते हुए अपने स्निग्ध कपोलोंपर चित्रपत्रों (चित्रकों) की रचना कर ली जिससे उसका मुख दीप्तिसे युक्त अब्ज-सा लसित हुआ ॥३३॥

---

*पत्र भंग—वे चित्र या रेखाएँ जो सौन्दर्य वृद्धिके लिए स्त्रियाँ कस्तूरी केसर आदिके लेप अथवा सुनहले-रुपहले पत्तरोंके टुकड़ोंसे भाल कपोल आदि पर बनाती हैं। भाल और वक्षस्थल की आलपन्ती चित्रकारी अथवा बेलबूटे।

दनुराशोपलधट्टनासुभगमै व्योमम्मु पुँडिवु मेघ
पर्वाविटन् सलिलोपयोगकसमापारोणुर्ड मंदुश
पर्वतिन् पूठि पिटुसखेळ, मिसिचेस मध्याह्न भिक्षार्थियै
पडपन् सेट्टिम गौरुमुंडु 'ममभिक्षांदेहि' यन् चाक्कुनन् ।।३४।।

मनुजन्मायसधक्कपु मविभेय्यवूनुनो, सोनिमिन्
मनुमो, नेम्मोगमेसि कन्गोनुभो मिस्सगुट्टु क्षामर्याप नि
ल्वेनु घट्टेहळि मन्यगेहमुनुकोसिम् रेप्पपाळत, पो
येनु वारिं वडि 'यस्ति मास्ति' यनु पल्केनुम् मिनम् रामिचेन् ।।३५।।

ममगमनुमु कोट्ट णपुर्णपिक्षितो
        मक्गुल नूरनु मेसुव योरन्,
मीहारवारि पवीप सावाळ्कुपा
        मीराडके मम्मु मेसव पोर्लु,
कन्नकस्तूरिभि सोकवर्गंधमुनु गूर्चि
        कस्पमु मेविनु गसिक्रि पोर्लु,
पन्नकप्पुरमु वापत्तिरि वोचि त
        म्मलपुविस्कन् पुट्ट मेमतपोर्लु,
पुपुढेसमु पुन्नु पूबोडि पोर्लु
मरुतुकर्पावमद्दुनिडु बरनु मोर्दु
कविपपुगान्तामिवनु मिपुक्तमगुट
मेवर विपुर पुखयोगीट्टु पिलपु ? ।।३६।।

वेंपुवेंपुन कर्षायसेव कोरकु
मगरि कप्पुनु बनुरेंनु नाति योक्ते
मी चरिमम्मु मिट्टु मेकर्पिपनुस
देवयक्षमुन मुनि मिमर्तनमु पाचि ।।३७।।

'गविलपु कोट्ट पुत्रेपवे, कार्यमिमम्मत वोसि पिटिसो
मुरिपपु कोविपन् कन्नगमोपव पावमनुम् महागुमा
पुट्टु पनुपुमपापुरक पुण्प निपर्हणमिव स्वामि पै
पपुनो मरेसो पे वेलिपिपपमेपपा कनि ममुपेतकुन् ।।३८।।

चन्द्रकान्त शिलाओंसे विनिर्मित सुन्दर और आकाशको चूमनेवाले श्रेष्ठ शयनागारमें संचित उपभोग-वासना-पारीण बन नन्द उस युवतीके साथ रहा। ऐसे समय मध्याह्न भिक्षार्थी बन दरवाजेपर आए गौतमने 'मम भिक्षां देहि' का आवाज लगाई ॥३४॥

सहोदरका महल है—तब भी वे शाक्य ऋषि मनमें भ्रम मानकर भीतर कैसे जाएंगे या सिर उठाकर भी कैसे देखेंगे। वे तो उस घरके सामने भी ठहरे, अन्य गृहोंके समान पलभर खड़े भी रहे और 'अस्ति-नास्ति' का जवाब न मिलनेपर अपने रास्ते चलते बने ॥३५॥

सुगन्धित चूर्णोंको लोध्र पुष्पोंसे मिश्र उबटन तयार करनेवाली एक ओसके पानी और गुलाब जलको सम मात्राओंमें जल क्रीडाओंके लिए मिलानेवाली एक श्रेष्ठ कस्तूरी और जवादि को मिला सुगन्धित चन्दन तयार करनेवाली एक कपूर और जायफल मिला ताम्बूलके बीड़े तैयार करनेवाली एक पुष्पमालाएँ बनानेवाली एक प्रभुकार्यके लिए इधर-उधर भागनेवाली—इस प्रकार सभी दासियाँ काममें लगी हुई थीं ऐसी स्थितिमें उस योगी बुद्धकी पुकार कौन सुनता है? ॥३६॥

उछलते-कूदते हुए उसी समय अपनी बारीपर सबाब लिए नगरीमें आनेवाली एक दासीने इस कथाको इस प्रकार गति देनेवाले मुनिका लौट जाना देखा ॥३७॥

बड़ी बुरी बात हो गई है शायद कार्यमग्नताके कारण किसी दासीने उन्हें देखा नहीं होगा। ये महानुभाव तो खाली हाथ लौटे जा रहे हैं उस घटनासे पूज्यजनोंके तिरस्कारकी निन्दा मेरे स्वामीपर पड़ना सम्भव है अतः इस बातकी सूचना तो यथास्थान समय रहते ही दे दी जानी चाहिए, यह सोचकर उसने नन्दके पास .. ॥३८॥

यनि विम्रयिपगा, नि
स्थुम नीरमि रागुतुडु, पुल्कुपुमञ्जुमन्
मन प्राणकान्तमोमुनु
गनुगोगुचुन् यमिके मिटलु, कळ्ळप्पगुचुन् ॥३९॥

मन्नयदे, महामहिमुडट्टे, नगम्मुन यारस्तेमुन्
मसमसम्तुयुन् गुरुडु माकन वैयमुना वेलंगुलो
कोमतुडट्टे, यिठसु निस्योपगतुडयि, मिसवेडि, य
मत्त—मरेममन्—ममिडेमट्टे, चेली ! कनु, मा यमाम्यतम् ॥४०॥

एन्तप्रमावमु पुट्टेम्
गान्ता ! मसमुमतिपगवे, पुम्पुडमि
कन्तुकगुमुम वनि प्रा
यितुम् यावमुल मामि, तेज्वेवमगुडम् ॥४१॥

अनि सरसीजकल्पमगु मैममि पट्टि मगुमवेडु कां
तुमि गनि, चेल्यमूर्षि नवतोयजवावविलोचनम्मुमन्
चोम चोम बाष्पमुल् चोरग, चोम्यमि नमेडवासियेगेचे '
यनि मेयितीवतूल विमुनल्कुन वामि सगपूणरम्मुगन् ॥४२॥

' ना ममोनाथ ! मा निधानम्म ! माडु
कन्ठहारम्म ! मा कनुंगव वेलुग !
गुरुचरणसेव गावि मक्कुनिमु
मैद्रसु वारिसु, नाक मिसेटलु पमुतु ? ॥४३॥

अनुकोमगट्टि यी विरहमनकट ! तारसिसेम् नवा ! प्रिया !
मनसु यवाम्मुगाक पलुमारु ननधमु मीक चोसेचुन्,
वनि मठने विसवमभु सम्पुम्मा ! यिठ गुमपठक ना
यगुम ! विशेषकम्मु तविपारकमुन् पनुवेरगामसेम् ॥४४॥

पमुडुवडि मितको नेमिवच्चितेनि
विडनि पोर्वेच्य कौगिलिविडु, मुद्दु
चोतरतु चोतरकमुद्द—लितमेम
कामिपिचेव मा यगुपहमहम्मु ।' ॥४५॥

आकर विनती की तो इस बातको सुनकर राजकुमार विह्वल हो गए और अपनी प्रियतमाको देखते हुए, घबराए-से बोले ॥३९॥

'कैसा मेरा दुर्भाग्य है कि महामहिमावाले तथा सारे संसारसे आदर पानेवाले सारे लोगों द्वारा गुरु और दैववत् माने जानेवाले संसारके सर्वश्रेष्ठ मेरे ही बड़े भाई मेरे द्वारपर भिखमंगेके रूपमें आएँ और उन्हें खाली हाथ लौटना पड़े !' ॥४०॥

हाय कितनी भूल हुई ? हे कान्ता ! जानेकी अनुमति दो। उस पुण्यके दूर चले जानेसे पहले ही उनके पैरोंपर गिरकर प्रार्थना करूँगा और उन्हें लौटा लाऊँगा ॥४१॥

यह कह सरसिज-समान अञ्जलि बाँध, अनुमति माँगनेवाले कान्तको देख गरम आहें भर, नम जलजके सम चारु विलोचनोंसे टप्-टप् आँसू बहाते हुए वह 'हाय, मुझे छोड़ जाओगे ?' कह काँपती हुई देह-लताकी भाँति प्रियकी गोदमें झुक पड़ी और गद्‌गद् स्वरमें बोली ॥४२॥

'हे मेरे मनोनाथ ! मेरे निधान ! मेरे कष्टहार ! मेरे नेत्र युग्मकी ज्योति ! गुरुचरण सेवा करने जानेवाले तुम्हें कैसे रोकूँ और जाने भी कैसे दूँ ? ॥४३॥

हाय ! अप्रत्याशित रूपसे यह विरह आ पड़ा। हे प्रिय ! मन अवश होकर बार-बार अनर्थकी आशंका कर रहा है। जाकर वहीं विलम्ब न करना। हे मेरे प्रियतम ! मेरे विलोपकके सूखनेसे पहले बस ऐसे लौट आना जैसे यहीं हो !' ॥४४॥

मेरी बातोंके अनुरूप लौट आओगे तो अपने गाढ़ आलिंगनका सुख चुम्बनोंकी बौछार—और न मालूम अपने ममके किन किन मनोरम प्रेमपूर्ण भावोंको आपके सम्मुख व्यक्त करूँगी ॥४५॥

ममि मधुरागसालनमु लारग पूरिमि मेरयेन वं
बन मन सारगधकलमाकमनीय बुडोपगूहर्व
पनमेट्टुसेटको चिप्पिमुनु, वसेडवीडगलेक, वेगुनि
स्पन मधुरोक्ति वेडु चेलुवम् विमुकस्तम्न कुज्जगिपुभुन ॥४६॥
'चस्यनि कासि पूनि मनु बारपसेयकु, वेसवै कनु
गोमुकुस नीव निपकविणो। गुम्मेपुडतिर्मिमचेदुन्
चेसि। कनुचुपुमेर, ननु चेच्चोर नपिम चस्तपयसन्
सलिपि मचत्पवाधुख्खुसन्निधिकिन् कनुबॅडु नितलो। ॥४७॥
मनुचु मूरारि, पद्मसमञ्चितमगु
माननम्मुनु वडचि मुद्दाडि, राज
सारिरंजित बिम्बाधराञ्चितोड
मडु चुमद्दु_ले पयनम्मुगाग ॥४८॥
निक्किम मोमुल्नु, चडतमेक्कोनु पूवुलु, विमचाडुनन्
सुचिकन मोमुनै परक भुवक निल्चु कुरंपियो मनन्
चस्कोर मोम्म यंत चक्कनम्मचघूडुकुल व्यानमम्मयै
चेच्चिट्ट चेपिचोंचि मिसिचेन् चिकुचिस्कनि,काम्नुडेमगन् ॥४९॥
पुवमतमैम पेमुमक्ति मुंडु काग,
वेकविर्पे रक्ति लाये वेम्बोमुक कतनि,
नूमिकल मप्प हृंसमा मोप्पेनपुड
निश्चयम्मुन मवकक निसुवकतडु ॥५०॥
एकयनि घर्मरागमेट्टुले नोक सुवचुगेय, ऐंडुनू
वधुगुल प्रेमधर्मभपुडातनि चेम्कडु, श्रोपु, नीगतिन्
विडुवक पोम्पनोप्प चेमुचेल्लुचपे नेचुरेगुनट्टि य
म्मुडुपमु चोसे नेगे नेडुको यधुगड्गुन चेम्कञोमडुभुन् ॥५१॥
इट्टुभोक्कोंत येगि, दुवचेम्मनुनो गुमवस भीति यो
नच्च वक्रियाकनो मकरिकालत मम मयचोकट मु
लल्लमयि पैकोमग वेसमासकोकविन् चन वोच्चे वा हुका
हुटि वेवपेडु यगाक्तिडि पूर्पुकु तोरमुमै चेसंयपम् ॥५२॥

यह कहते हुए और पुचकारते हुए प्रेमकी सीमा रूपी चन्दन घनसार-गन्धकल्ना कमनीय दृढ़ उपगूढ़ बन्धनको किसी भी तरह ढीला कर अपनेको छोड़ न सकने, वेणु-निस्वन सम मधुर उक्तियोंमें विनती करनेवाली प्रियतमाको सान्त्वना देते हुए नन्दन कहा ॥४६॥

व्यथित बन मुझे जानेसे मत रोको भारी बन आँसू मत भरो। वह देखो गुरुवर आ रहे हैं सखी! नजरोंसे ओझल होकर। मुझे तुरन्त जाने दो तो उनकी सेवा-शुश्रूषाएँ कर तुम्हारे चरण कमलोंके पास अभी आ जाऊँगा। ॥४७॥

यह कहते-कहते कादम बाँध पत्र समञ्चित उसके मुखड़ेको चूम नन्द अतिरञ्जित राजसी चित्राम्बरों (अनेक चित्रोंसे आकारित-आरञ्जित राजसी वस्त्र) के साथ जैसे-का-तैसा निकल पड़ा तो— ॥४८॥

सावधान बन कान जड़ बनी दृष्टि उदास बना मुख तिनका तक को न कुतर खड़ी हिरनीकी भाँति वह मधुर मूर्ति निश्चल नेत्राम ध्यान मग्न बन कपोलोंपर हाथ धर खिन्न बन अपने कान्तको जाते देखती खड़ी रही। ॥४९॥

बुद्धिगत उत्कट भक्ति उसे आगेको धकेले तो प्रियाका प्रेम पीछेकी ओर खींचने लगा। वह उर्मियोंके मध्य खड़े हंसके समान रह गया। वह अनिश्चयके कारण न तो वहीं खड़ा रह सका और न आगे ही बढ़ सका। ॥५०॥

धर्म भ्रम उसे एक पग आगे बढ़ाए तो प्रेम-भ्रम उसे दो-तीन कदम पीछे धकेले। इस प्रकार प्रचण्ड वायुमें विरुद्ध जानेवाली नौकाके समान किसी भी तरह कदम कदमपर पीछे हटते हुए, वह आगे बढ़ा। ॥५१॥

इस प्रकार थोड़ी दूर जाकर 'अन्तमें क्या होगा? क्या कहेंगे गुरु?' इस बातका डर दूसरी ओर कहीं मकरिका पत्र सूख न जाए—यह भय एक तरफ उत्कट होकर मनको विकल बनानेपर मन्द धड़ाधड़ लम्बे डग भरते हुए और लम्बी-लम्बी साँसें भरते हुए शीघ्र गतिसे जाने लगा ॥५२॥

यह कहते हुए और घुमाकर हुए प्रेमकी सीमा रूपी चन्दन घनसार-गन्धकलना कमनीय दृढ़ उपगूह बन्धनको किसी भी तरह ढीला कर अपनेको छोड़ न सकने, अश्रु-निस्यन्द सम मधुर उक्तियोंमें विनती करनेवाली प्रियतमाको सान्त्वना देते हुए नन्दने कहा ॥४६॥

व्यथित बन मुझे जानेसे मत रोको भोली बन आँसू मत भरो। वह देखो पुरुदेव जा रहे हैं सखी! नगरोंसे ओझल होकर। मुझे तुरन्त जाने दो तो उनकी सेवा-शुश्रूषाएँ कर तुम्हारे चरण कमलोंके पास अभी आ जाऊँगा। ॥४७॥

यह कहते-कहते साहस बाँध पत्र समन्वित उसके मुखड़ेको चूम नन्द अविलम्बित राजसी चित्राम्बरों (अनेक चित्रोंसे आकारित-आरंजित राजसी वस्त्रों) के साथ जैसे-का-तैसा निकल पड़ा तो— ॥४८॥

सावधान बने कान खड़ बनी दृष्टि उदास बना मुख तिनका तक को न कुतर सकी हिरनीकी भाँति वह मधुर मूर्ति निर्निमेष नेत्रोंसे ध्यान मग्न बन कपोलोंपर हाथ धर खिन्न बन अपने कान्तको जाते देखती खड़ी रही। ॥४९॥

बुद्धगत उत्कट भक्ति उसे आगेको धकेले तो प्रियाका प्रेम पीछेकी ओर खींचने लगा। वह ऊर्मियोंके मध्य पड़े हंसके समान रह गया। वह अनिश्चयके कारण न तो वहीं खड़ा रह सका और न आगे ही बढ़ सका। ॥५०॥

धर्म-प्रेम उसे एक पग आगे बढ़ाए तो प्रेम-धर्म उसे दो-तीन कदम पीछे धकेले। इस प्रकार प्रचण्ड बाढ़में विरुद्ध जानेवाली नौकाके समान किसी भी तरह कदम कदमपर पीछे हटते हुए, वह आगे बढ़ा। ॥५१॥

इस प्रकार थोड़ी दूर जाकर 'अन्तमें क्या होगा? क्या कहेगा गुरु? इस बातका डर, दूसरी ओर कहीं सुन्दरिका पत्र सूख न जाए—यह भय एक तरफ उत्कट होकर, मनका विषम मनानपर नन्द धड़ाधड़ लम्बे डग भरते हुए और लम्बी-लम्बी साँसें भरते हुए तीव्र गतिसे आगे बढ़ा ॥५२॥